सिद्धिः साध्ये सतामस्तु

गढ़वाल

खाटली सामाजिक विकास मण्डल (पंजी०) दिल्ली

(स्थापित १३-२-१९४९ ई०)

प्रगतिशील शाखायें

बम्बई (महाराष्ट्र)

भोपाल (मध्य प्रदेश)

जय दीवा

२५वां वार्षिक उत्सव, ३६वां श्री सत्यदेव पूजन एवं रजत जयन्ती उत्सव के शुभ अवसर पर प्रकाशित

"स्मारिका"

३१ मार्च, १९७४

प्रधान कार्यालय
आई-३११ सेवानगर नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली-4.
RASHTRAPATI BHAVAN,
NEW DELHI-4.

मार्च 12, 1974.

पट्टी खाटली सामाजिक विकास मण्डल, नई दिल्ली की रजत जयन्ती के अवसर पर मैं उसके सदस्यों को बधाई देता हूँ और मण्डल की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये अपनी शुभकामनायें भेजता हूँ ।

व वे गिरि

(व. वे. गिरि)

श्री केदारसिंह बिष्ट ,
महा मन्त्री,
गढ़वाल खाटली सामाजिक विकास
मण्डल (पंजो0) दिल्ली ।

प्रधान मन्त्री सचिवालय
नई दिल्ली-११
Prime Minister's Secretariat
New Delhi-11.

प्रिय महोदय,

प्रधानमंत्री जी को आपका २ मार्च १९७४ का पत्र मिला, धन्यवाद ।

उनको यह जानकर खुशी हुई है कि पट्टी खाटली सामाजिक विकास मण्डल (पंजीकृत) दिल्ली की रजत जयन्ती मनाई जाएगी ।

प्रधान मंत्रीजी इस अवसर पर अपनी शुभ कामनायें भेजती हैं ।

भवदीय
एच० वाई० शारदा प्रसाद

केदारसिह विष्ट
महा मंत्री
पट्टी खाटली सामाजिक विकास मण्डल
(पंजीकृत) दिल्ली
आई ३११ कस्तूरबा नगर
नई दिल्ली ।

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

दि० १३-३-७४

प्रिय केदारसिंह जी,

आपका १२ मार्च का पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पट्टी खाटली सामाजिक विकास मण्डल आगामी ३१ मार्च को अपना रजत जयन्ती समारोह मनाने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि मण्डल क्षेत्र के लोगों की अधिकाधिक सेवा करते हुए उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा।

व्यस्तता के कारण उक्त समारोह में सम्मलित होने के लिए मैं अपनी असमर्थता प्रकट करता हूं।

समारोह की पूर्ण सफलता के लिए मेरी शुभ कामनायें स्वीकार करें।

आपका,

हेमवती नन्दन बहुगुणा।

केदारसिंह बिष्ट
महामन्त्री पट्टी खाटली सामाजिक विकास मण्डल
आई ३११ सेवा नगर
नई दिल्ली ३

कानपुर विश्व विद्यालय
KANPUR UNIVERSITY

कल्यानपुर, कानपुर
Kalyanpur, Kanpur

मंगल कामनायें

मुझे यह जान करके प्रश्नता हुई है कि इस मण्डल की रजत जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई जाने वाली है और उस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जाने वाला है। मैं इस अवसर के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनायें अंकित करता हूं।

विगत वर्षों में इस मण्डल के द्वारा अपने क्षेत्र की प्रशंसनीय सेवा की गई है और प्रवासी बंधुओं को भी यथा सम्भव सहायता पहुंचाई गई है। इसके लिए बधाई स्वीकार कीजिए। मुझे विश्वास है कि आने वाले वर्षों में यह मण्डल और भी अच्छी सेवा करने में सफल होगा तथा अन्य संस्थाओं को भी इससे प्रेरणा मिलेगी।

भक्त दर्शन
कुलपति
कानपुर विश्वविद्यालय

श्री केदारसिह बिष्ट,
महा मंत्री
पट्टी खाटली सामाजिक विकास मण्डल (पंजी) दिल्ली
आई-३११ सेवा नगर
नई दिल्ली।

'सन्देश'

प्रिय बन्धुओ

हमारे मण्डल के कार्यों में आप सदैव रुचि लेते रहे हैं साथ ही इसकी उपलब्धियों से भी आप भली भांति अवगत हैं फिर भी मण्डल की रजत जयंती शुभ अवसर पर प्रकाशित की जा रही स्मारिका से आपको हमारे मण्डल द्वारा किये गये कार्यों के सम्बन्ध में और अधिक जानकारी प्राप्त होगी।

मण्डल ने आपके सहयोग तथा शुभकामनाओं से पट्टी क्षेत्र में जो सराहनीय कार्य किये हैं वह सर्वविदित है। अपने सीमित साधनों के द्वारा मण्डल ने सभी छोटे बड़े कार्य अपने अबालवृद्ध शुभचिन्तकों के सहयोग से किये हैं। इसका श्रेय मण्डल के सदस्यों, कार्यकर्ताओं, विभिन्न उप समितियों के संयोजकों तथा अन्य सहयोगियों को जाता है जिनका मैं धन्यवाद करता हूं। इस वर्ष कुछ एक महिलाओं ने मण्डल की आजीवन तथा साधारण सदस्यता ग्रहण कर मण्डल के इतिहास में एक नये अध्याय को जोड़ा है, जो वास्तव में उत्साह वर्धक हैं। इस वर्ष मण्डल की शाखायें भी बम्बई व भोपाल में स्थापित की गई है जिसके लिये स्थानीय पट्टी प्रवासी धन्यवाद के पात्र है। मेरी यह आशा है कि अन्यंत्र जहां भी हमारे बंधु हो वहां भी शाखायें स्थापित कर मण्डल को विशाल बनायें।

आज के युग में शिक्षा, यातायात, चिकित्सा, संचार आदि प्रगति के अनिवार्य साधन हैं और जिनका मनुष्य के जीवन से सीधा संबंध हैं। मण्डल ने उक्त सभी क्षेत्रों में इन २५ वर्षों में उल्लेखनीय कार्य किये हैं तथा पट्टी क्षेत्र की जनता को साक्षरता का बोध कराया है। मण्डल की सफलताओं के लिए मैं अपने जन प्रिय नेताओं का भी अभारी हूं

जिन कर्मवीर व्यक्तियों के कठिन परिश्रम, त्याग व सद्भावना से मण्डल की स्थापना हुई थी, हम उन्ही के स्वप्नों को कुछ सीमा तक साकार कर पाये हैं और हमें विश्वास है कि उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चल कर हम भविष्य में उसे पूर्ण साकार कर सकेंगे।

रजत जयन्ती समारोह की सफलता के लिए हार्दिक शुभ कामनाएं। धन्यवाद

विनीत,
केदारसिंह बिष्ट
महामंत्री
गढ़वाल खाटली सामाजिक विकास मण्डल (पंजी) दिल्ली

नई दिल्ली,
३१ मार्च, १९७४

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
प्रथम खण्ड (खाटली का इतिहास)	
प्रस्तावना	१-२
ऐतिहासिक पृष्ट भूमि	२-३
भौगोलिक स्थिति	४-५
समाज संस्कृति एवं जनजीवन	५-७
राष्ट्र निर्माण एवं रक्षा	७-८
न्याय प्रणाली (पंचायत केन्द्र ग्राम सभा ग्राम सूची)	९-१२
शिक्षा प्रसार एवं शैक्षणिक संस्थाएँ	१३-१६
संचार व्यवस्था	१६-१७
यातायात	१७
स्वास्थ्य एवं चिकित्सालय	१८-१९
ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थान	१९-२१
क्षेत्रीय न्यूनताएँ-समस्याएँ	२२-२३
द्वितीय खण्ड (मण्डल का इतिहास)	
मण्डल की स्थापना एवं श्री सत्यदेव पूजन	२५-२६
प्रमुख पर्व	२६-२९
विकास गोष्ठी शिक्षा, चिकित्सा, यातायात एवं संचार	२९-३२
अनुदान व आर्थिक सहायता	३२-३४
२५ वर्षों में आय व्यय	३५
सम्मानित सदस्य	३६
आजीव सदस्य सूची	३७
कार्यकर्ताओं की तालिका	३८-४२
शाखाओं के कार्यकर्ताओं की तालिका	४२-४३
दिवंगत विभूतियों को श्रद्धांजलि	४४
तृतीय खण्ड	
२५वां वार्षिक प्रतिवेदन	४८-६१
बम्बई शाखा की रिपोर्ट	६२-६३
सदस्य सूची दिल्ली	६४-७२
सदस्य सूची बम्बई शाखा	७३
सदस्य सूची भोपाल शाखा	७४
निरीक्षण प्रतिवेदन	७५-७६

ओ३म्

आरती खटलो दीवा माता की

जय खटली दीवा, माता जय खटली दीवा ।
भव भय संकट हारिणी, तारिणी सब जीवा ।। ओ३म् जय
निज जन तारण कारण, नाना रूप धरे ।
अष्ठ भुजा से सुशोभित, भक्तन कष्ट हरे ।।
नारद शारद मिलकर, जय जयकार करें ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, निशि दिन ध्यान धरें ।।
अलख अगोचर माता, विपदा आन हरो ।
तेरे चरण पड़े हम, करुणा दान करो ।।
आदि शक्ति भवानी, हम सुत तू माता ।
तेरे द्वार खड़े हम, दर्शन दो माता ।।
भाव भक्ति से जो नर, तेरा गान करे ।
सकल कामना पाकर, सब सुख पान करे ।।
अबोद्ध दुर्बल हम हैं, बल का दान करो ।
जय जगदम्बे दुर्गे, श्रद्धा आन भरो ।।
धूप दीप तुलसी से, पूजन यह तेरा ।
सब कुछ की तू दाता, क्या लागे मेरा ।।
दीवा मां की आरती, जो कोई नर गाए ।
सकल मनोगथ पाए, भव भय तर जाए ।।
जय खटली दीवा, माता जय खटली दीवा ।
भव भय संकट हारिणी, तारिणी सब जीवा ।। ओ३म्

गढ़वाल

खाटली सामाजिक विकास मण्डल (पंजीकृत) दिल्ली

(स्थापित सन् १९४९ ई०)

प्रगतिशील शाखायें :-

१-बम्बई (महाराष्ट्र)　　२-भोपाल (मध्य प्रदेश)

के

२५वें वार्षिक एवं रजत जयन्ती उत्सव के शुभ अवसर पर प्रकाशित स्मारिका

सज्जनवृन्द,

शीर्षांकित मण्डल के २५वें वार्षिकोत्सव एवं रजत जयन्ती उत्सव के शुभ अवसर पर प्रकाशित यह स्मारिका आपके हाथों में है। "खाटली सामाजिक विकास मण्डल" दिल्ली स्थित खाटली प्रवासियों की एक मात्र विशुद्ध सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था है। इसने अपने जीवन के पच्चीस वर्षों में जो कार्य किये उनका संक्षिप्त विवरण इस पुस्तिका में प्रस्तुत है। जिससे यह अवगत होगा कि यह एक सशक्त संस्था है। प्रत्येक सभ्य समाज का अपना एक इतिहास होता है, जो कि उसकी भावी पीढ़ी के लिये मार्गदर्शन का कार्य करता है। उसमें उनकी संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक रीतियों का उल्लेख रहता है। जिनके आधार पर वे अपने पूर्वजों द्वारा की गई असावधानियों के प्रति सजग होकर उन अच्छाइयों को अपना सकें जिनके द्वारा उनकी प्रगति आगे बढ़ें।

हम यह तो नहीं कह सकते कि यह पुस्तिका हमारे समस्त समाज का दर्पण है किन्तु अपनी मातृभूमि के प्रति उसके लाडलों के हृदयों में जो अगाध श्रद्धा है वह आपको इस स्मारिका में अवश्य झलकती हुई मिलेगी, और हमें विश्वास है, मात्र हमारी यह भावना, भावी संतति के लिये अवश्यमेव मार्गदर्शी होगी। "जननी जन्म-भूमिश्च: स्वर्गादपि गरीयसी" की भावना का अनुसरण कर सभ्यता एवं प्रगति की गति में हम अग्रसर होते जायें यह हमारा लक्ष्य है।

स्मारिका के प्रथम भाग में उसी भू-भाग की भौगोलिक स्थिति के दर्शन कराने का प्रयास किया गया है। जिसके हम निवासी हैं और जिसके नाम पर संस्था का नामकरण खाटली सामाजिक विकास मण्डल किया गया है। इस भाग में आप इस भू-भाग की जनसंख्या, जलवायु, संस्कृति, ऐतिहासिक एवं अन्य तथ्यों का अध्ययन करते हुए अनुमान लगा सकेंगे कि यह कितनी वीर प्रसवा भूमि है। तिल्लू रौतेली जैसी वीरांगनाओं ने यहीं जन्म लेकर अपने पराक्रम से बीरोंखाल नामक स्थान को सार्थक किया है। श्री-श्री १०८ सत्तगुरु बाबा, श्री रामप्रसाद नौटियाल, मास्टर श्री गुलाबसिंह रावत, श्री हरिशर्मा जैसे दानी, शिक्षा प्रेमी, स्वतन्त्रता के पुजारी व देशभक्त इसी भूमि के रत्न हैं, जिन्होंने अपने क्षेत्र से बाहर रह कर भी सम्पूर्ण भारत को अपनी जन्मभूमि मानकर स्वतन्त्रता के महान संग्राम में अपना पूर्ण योगदान देकर स्वयं को तो गौरान्वित किया ही हमारे भू-भाग को भी गौरान्वित किया है।

इसी प्रकार कतिपय सुप्रसिद्ध महापण्डित. ज्योतिषी विद्वान, वैद्य, जगरी, समाजसेवी आदि यहां हुये हैं, जिससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि जन्मभूमि से कोसों दूर रह कर भी उसके लाडलों के हृदयों में इस पिछड़े

भू-भाग को विकसित करने की इतनी लग्न एवं तड़प हैं कि दिन भर जीविकोपार्जन में तल्लीन रहने पर भी अवकाश के समय में इसी भू-भाग के उत्थान एवं वहाँ के निवासियों को प्रगतिपथ की ओर अग्रसर करने का स्वप्न देखते रहते हैं तथा इन स्वप्नों को साकार करने के लिए यथाशक्ति प्रयास करते रहते हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमारी संस्था द्वारा प्रकाशित यह स्मारिका है।

द्वितीय भाग में संस्था द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गये कार्यों की उपलब्धियों का विवरण है जिसके अवलोकन से आप सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि पट्टीस्तर की संस्था होते हुये भी इसने जिलास्तर की संस्थाओं से भी बढ़कर कार्य किए हैं तथा किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र से कभी भी विमुख होना नहीं सीखा। अपितु यथाशक्ति अपना योगदान देते हुए अपने उद्देश्यों की ओर दिनोंदिन अग्रसर होती रही।

तृतीय भाग में वर्ष १९७३-७४ का प्रतिवेदन संकलित किया गया है जिसमें आप इस वर्ष की उपलब्धियों एवं समाज के प्रति किये गये कार्यों का अवलोकन करेंगे।

इस पुस्तिका को प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य यह भी है कि हमारे अपने ही क्षेत्रीय बन्धु जो अभी तक संस्था के सदस्य नहीं बन पाये हैं तथा जिन्हे संस्था द्वारा किये गये अथवा किये जा रहे कार्यों की जानकारी नहीं है उन तक मण्डल का सन्देश पहुंचे और वे आये—और १ और १—११ की कहावत को चरितार्थ कर संगठित होकर सामाजिक कार्यों में जुटे, अन्यथा "काकोऽपि जीवति चिराय बलि च भुक्ते" जीना वही श्रेष्ठतम है जिसमें जीवित रह कर दूसरों को भी जीवित रहने की प्रेरणा मिले, अथवा कुछ उनकी सेवा की जा सके।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

खण्डार्पच हिमलयस्य कथिता नैपाल कूर्माचलौ।
केदार जलण्धरो च रुचिरः कश्मीर संज्ञोऽत्तिमः॥

अर्थात नेपाल, कूर्मांचल (कुमाऊँ) केदार (गढ़वाल) जलन्धर (शिमला-सिकम-कांगड़ा) और कश्मीर ये हिमालय के पाँच खण्ड हैं। इन पाँचों खण्डों मे एक खण्ड गढ़वाल है जिसकी प्रण्य गोद में हमारी हरी भरी खाटली खेलती फलती फूलती है। ग्रन्थों में गढ़वाल को केदार खण्ड कहा है। गढ़वाल की सीमा पश्चिम में टौंस नदी पूर्व में बौद्धत्न पर्वत और कुमाऊँ उत्तर में हिमालय नीलकण्ठ, तिब्बत और दक्षिण में पंचाल रुहेलखण्ड सहारनपुर का वर्णन भी मिलता है।

मानव समाज जिस आदि पुरुष मनु की सन्तान है उसकी जन्मभूमि गढ़वाल का सीमान्त माणा गांव कहा जाता है। महाकवि जयशंकर प्रसाद कृत "कामयनी" महाकाव्य की प्रथम पंक्तियों में इसकी सत्यता प्रमाणित होती हैं :—

हिमगिरि के उत्तग शिखर पर,
बैठे शिला की शीतल छाँह।
एक पुरुष भीगे नयनों से,
देख रहा था प्रलय प्रवाह"॥

लगभग १४ वीं या १५ वीं शताब्दी में केदारखण्ड, बावनगढ़ आदि नामों से परिचित यह उत्तराखण्ड गढ़वाल नाम से पुकारा जाने लगा जो कि अद्यतन चला आ रहा है। रघुवंश से विदित होता है कि यह स्थान एक उत्कृष्ठ तपो भूमि थी, जिसमें व्यास, कण्व और अगस्त्य आदि महामुनियों के आश्रम विद्यमान थे। इसके अतिरिक्त ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं जिनसे प्रसिद्ध सप्त ऋषियों में से छः ऋषि इसी स्थल के निवासी थे।

प्राप्त ऐतहासिक तथ्यों के आधार पर गढ़वाल के इतिहास को कन्त्यूरी वंशजों से जोड़ा जाता है। लभ्य ताम्रपत्र से प्रतीत होता है कि इस कन्त्यूरी वंश में कोई भी प्रभावशाली राजा नहीं हुआ। अनुमानतः यह समझा जाता है कि इस वंश का अन्तिम राजा वीरदेव बड़ा अत्याचारी था जिसने जनता पर बहुत अत्याचार किये। उदाहरण देखिये : —

हंकारो तुम्हारो बाबा, जिन ऊँचा गढ़ नीचा बनाया
संकारो तुम्हारो बाबा, सुल्टी नाली ले लिन्छा
उल्टी नाली ले लिन्छा, तरणी तिरिमा रहणे नि दीना,
पर फल फूल रहणे नी दीना
हंकारो तुम्हारो बाबा, मानचवाली को घटरिगा छा
बांजा घट की भाग लीन्छा·····।

इस अत्याचार के परिणाम स्वरूप प्रशासन में विकार आ गया था उसी ने स्वेचारिता से चार, छः ग्रामों पर अधिकार कर स्वयं को राजा घोषित कर दिया। सन् १७४२-४३ ई० में हाफिज रहमान खां के नेतृत्व में रुहेलों द्वारा खण्डित मूर्तियों की ध्वंस लीला आज भी उनकी क्रूरता को प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित कर रही है। सन् १७३९ ई० में नादिरशाह आदि बादशाहों के भारत आक्रमण से भयभीत देश के विभिन्न राजाओं से बड़े-बड़े सामन्त तक जीवन रक्षा हेतु सपरिवार गढ़वाल में आकर बस गये वहां पर तत्कालीन थोकदारी प्रथा एवं व्याप्त अराजकता का उन्होंने लाभ उठा कर वहां पर अपना सिक्का जमाना शुरू किया फलतः पंवार वंश कुशल शासक के रूप में उभरा, जिसमें महाराजा अजयपाल ने एक छत्र पहाड़ी राज्य की स्थापना की। इस वंश के राजाओं ने गढ़वाल में कई सुधार किये। अनेक स्थानों में बावड़ियों (नावलों) एवं तालाबों का निर्माण करवाया जिनमें से एक नवोला ग्राम डुमैला मल्ला, थापला मल्ला में आज भी विद्यमान है फलतः पट्टी खाटली की भूमि (१) उनियाल (२) गौनियाल (३) गोर्ला (४) पोखरियाल (५) सजवाण इन पांच थोकों में विभक्त थी।

सन् १८०३ ई० में अन्नसंकट एवं भूकम्प का प्रकोप हुआ। ततपश्चात् सन् १८०४ ई० से १८१४ ई० तक गोरखों के अत्याचारों का बोलबाला रहा। इन्होंने जिस प्रकार की अमानुषिक यातनायें देकर प्रजा का हनन किया वह इतिहास में अन्यत्र मिलना दुष्कर है। कहा जाता है कि इस समय खाटली की दीवा माता ने खाटली निवासियों को सुरक्षित स्थानों में जाकर जीवन रक्षा हेतु दैवी की पुकार की थी।

यहां पर खाटली पुत्री वीरांगना तिल्लु गैतेली और उसकी दो सहेलियों देवकी एव बल्लू की याद किए बिना नहीं रहा जा सकता। इन वीरांगनाओं ने पुरुष वेष धारण कर कन्त्यूरों का ढाल तलवार से सामना कर उनके छक्के छुड़ाए और समस्त पूर्वी गढ़वाल पर अधिकार किया। वर्तमान ग्राम बाण्डा उसकी छावनी थी। "या तिल्लू गैतेली धै री धै धै गीत" इसी वीरांगना की ख्याति में मुक्त कण्ठ से यत्र-तत्र गाया जाता है।

लोकगीत व उसके नृत्यों में कुमांउनी धुन का स्पर्श है। पाण्डव नृत्य, सराऊँ, होली नृत्य एवं गायन इत्यादि यहां के प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय सामूहिक नृत्य हैं। दीपावली पर्व बग्वाल के नाम से बड़ी धूम-धाम एवं उत्साह के साथ मनाया जाता है। गोवर्धन पूजा इगास पर्व के रूप में मनाया जाता है। इन दोनों पर्वों पर पशुधन की पूजा की जाती है। जहाँ के स्त्री पुरुष पुरुषार्थी हों वहां मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी की पुण्य लीलाओं का अभिनय किया जाना कितना वास्तविक और महत्वपूर्ण हैं। यह इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि दशहरे के शुभ पर्व पर लगभग प्रत्येक गाँव में रामलीला अभिनय किया जाता है। यही कारण है कि प्रवासी बन्धुओं द्वारा देश में यत्र-तत्र रहने पर भी रामलीला अभिनय बड़ी सफलता के साथ किया जाता है।

फसल या घास काटते हुए अथवा अन्य कार्यों में व्यस्त नर-नारियां जिन गीतों को गाती है उनमें से कुछ एक में करुणा रस, शृंगार रस और विरह की प्रधानता होती है। झुमैलू, लाली, चौंफला, बारहमासा आदि ऋतु सम्बन्धी गीत हैं जबकि तीलू रौतेली, माधोसिंह भण्डारी आदि ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित प्रसिद्ध गाये जाने वाले गीत हैं।

आभूषणों का पूर्व प्रचलन, सोने चांदी की हंसुली, करैला, मुर्खला, नथुली, बुलाक, धगुला, सिरफूल मुंदड़े, चरेऊ, हार, पायजेबी आदि था किन्तु आधुनिक शिक्षा एवं सभ्यता के अनुरूप अब कानों में सोने की वालियां, कुण्डल, गले में सोने का गुलोबन्द व लौकेट, नाक में सोने की लौंग, पैरों में चांदी की पतली पायजेबी ही स्त्री-आभूषण रह गये हैं। गले में चरेऊ सुहाग का प्रतीक माना जाता है।

फलों में आड़ू, अखरोट, सन्तरे, सेब, आम, पपीता, केला, नीम्बू, नाशपाती, काफल आदि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इमारती लकड़ी के रूप में चीड़, तूंण, कन्दार, सान्दण, सेम्हल, अखरोट आदि का प्रयोग होता है। साथ ही इनसे कृषि योग्य उपकरण भी तैयार किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त भ्यूंल के वृक्ष की टहनियों की छाल का प्रयोग साबुन के रूप में तथा रसियां आदि बनाने के लिए किया जाता है। रीठा के बीज के छिलके का प्रयोग कपड़ा धोने के साबुन के रूप में होता है।

पालतू जानवरों में गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेड़ें, घोड़े, खच्चर, कुत्ते, बिल्ली आदि हैं।

खाद्यान्न की दृष्टि से निम्न खाद्य फसलें उगाई जाती हैं। खरीफ की फसल में—धान, झंगोरा, मंडुवा, कोंणी, चींणा, सवां, ज्वार, मक्का (मुंगरी), चौलाई, ओगल एवं दालों में सोयाबीन (भट्ट) लोविया (रयांस काला-सफेद), उड़द (मास), कुल्थी (गहत्थ), छीमी (राजमा) आदि होते हैं। रबी की फसल में—गेहूं, जौ तथा दालों में मसूर, मटर (कलौ) आदि उगाये जाते हैं।

खरीफ की फसल के साथ—सब्जियां लौकी, तोरी, सीताफल (खिरबोज), पेठा (भुजेला), भट्टा (बैंगन), करेले, मूली, चचिंडा, सेम (छीमी), राई, आलू, अरबी, तैडू, गींठी आदि तथा रबी की फसल के साथ प्याज, आलू, पालक आदि उगाये जाते हैं। मसालों की श्रेणी में सण, मिर्च, धनिया, हल्दी, अदरक, लहसन, आदि उगाये जाते हैं। सरसों, राडू, राई, तिलहन तथा आड़ू के बीज तेल आदि के प्रयोग के लिए उगाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त भाँग (भंगुलू) तथा सन (सणा) के बीज के खाद्य प्रयोग के साथ साथ इसके रेशे से रसियां आदि तैयार की जाती हैं, किन्तु समुचित साधनों के अभाव में यह सब अपनी ही आवश्यकता पूर्ति के लिए ही सीमित हैं। केवल मिर्चों एवं चौलाई का न्यूनतम व्यापार किया जाता है।

भवन निर्माण योग्य पत्थरों की खानें प्रायः सर्वत्र पाई जाती हैं। कुछ एक खानें ऐसी भी हैं जिनका पत्थर काटने एवं रासने के लिए अत्युत्तम है। इसी प्रकार स्लेटों (पटालों) व छज्जे के पत्थर की खानें भी प्रचुर मात्रा में कुछ ग्रामों के निकट विद्यमान हैं तथा वहां की आवश्यकता पूर्ति की पूर्ण क्षमता रखते हैं। सफेद मिट्टी कमेड़ा व लाल मिट्टी की खानें तो सर्वत्र विद्यमान हैं जो कि मकानों के निर्माण एवं लिपाई-पुताई में प्रयोग की जाती हैं।

पट्टी के अन्तर्गत कई जगहों पर बांज, तूण, खड़िका, सीमल के पेड़ १०० वर्ष से अधिक पुराने हैं। ग्राम पीपलासैण, नाकुरी, रगड़ीगाड में पीपल के वृक्ष, सिन्दुड़ी, डुमैला में खड़िका का वृक्ष, कांडा (उमरीसैण), डांगू तल्ला में आम का वृक्ष, डांगू मल्ला में सेमहल का वृक्ष, बवासा मल्ला तथा असुर खेत में आक वृक्ष की जर्जरकाया जोकि ग्वेलाडाल नाम से पुकारा जाता है, ग्वीनखाल में चीड़ (खाली डाल) का वृक्ष, कोठिला में बांज के पेड़ जो कि भैरवनाथ और दीवा माता के नाम से पुकारे जाते हैं ऐसे वृक्षों में शीर्षस्थ हैं जिन्होंने मूक बन कर कन्त्यूरों, गोरखों तथा अंग्रेजों की हारजीत के साथ-साथ सूखे अन्नकाल एवं महामारी से संघर्ष करते हुए खाटली मानव के अदम्य साहस को भी देखा और आज भी वे पट्टी खाटली के मूक इतिहास के प्रतीक के रूप में विद्यमान हैं।

राष्ट्र निर्माण एवं रक्षा

सन् १९१९ के बाद महात्मा गांधी के नेतृत्व में जब राष्ट्रीय आन्दोलन को तीव्र गति मिली तथा स्वराज्य संघर्ष के लिए असहयोग एवं सत्याग्रह आन्दोलन किए गए तभी से खाटली के निवासियों का भी इन आन्दोलनों में सक्रिय सहयोग रहा है। इसके साथ-साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए जब आजाद हिन्द फौज की १९१४ में स्थापना हुई तो उसमें भी खाटली के कई लोगों का पूर्ण योगदान रहा है तथा आज भी खाटली के कई नवयुवक भारतीय रक्षा सेनाओं में तल्लीन हैं। इसके अतिरिक्त कुछ नवयुवक भारतीय रक्षा सेनाओं में रहते हुए पिछली दो तीन लड़ाइयों में वीरगति को प्राप्त हुए अथवा घायल हुए इन विशिष्ठ व्यक्तियों का इस स्मारिका में उल्लेख करना आवश्यक है तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों में रहते हुए कारागार भुक्तभोगी आन्दोलन कर्ता जिनको कि आज ताम्रपत्रों से सम्मानित किया गया है उनके लिए भी इस स्मारिका में विशिष्ठ स्थान है।

राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाले ताम्रपत्र से सम्मानित

१— श्री रामप्रसाद नौटियाल :—जन्म जुलाई १९०५, ग्राम कांडा मला, भू० पू० विधायक,उ० प्र०
२— श्री हरिशर्मा :— जन्म ६ मार्च, १९०६ ग्राम– केदारगली (सिन्दुड़ी)
३— स्व श्री चन्दनसिंह रावत :—ग्राम थकुलसारी।

आजाद हिन्द फौज में भाग लेने वाले क्रान्तिकारी

१ श्री होवतसिंह रावत, ग्राम सौंलाड
२ श्री केशरसिंह नेगी, ग्राम भरोली मल्ली
३ श्री डबलसिंह रावत, ग्राम घोड़ियाना
४ श्री कुन्दनसिंह नेगी, ग्राम नाकुरी
५ श्री गजेसिंह रावत, ग्राम कमडई
६ श्री चन्द्रसिंह रावत, ग्राम डमैला मला

भारतीय रक्षा सेनाओं में

महावीर चक्र विजेता : स्व० श्री यशवन्तसिंह रावत, ग्राम बाडियूं । १९६२ के भारत-चीन संघर्ष में मरणोपरान्त (गढ़वाल राइफल्स)

शहीद :—स्व. श्री त्रिलोकसिंह रावत, ग्राम काण्डा मल्ला स्व. श्री उदेसिंह शाह, ग्राम मैठाणा (गढ़वाल राइफल्स) दोनों १९६२ के भारत चीन संघर्ष में ।

भारत पाक युद्ध में शहीद

स्व० श्री गबरसिंह नेगी, ग्राम सिन्दुड़ी । स्व० श्री धीरजसिंह नेगी, ग्राम डुमैला मल्ला
स्व० श्री बलवीरसिंह गुसाईं ग्राम डुमैला मल्ला तीनों गढ़वाल राइफल्स में
स्व० श्री सुल्तानसिंह, ग्राम डुमैला मल्ला डी. एस.सी. । चारों १९६५ के भारत पाक युद्ध में
स्व० श्री गोविन्दसिंह ग्राम चौडी ग्राम खितोटिया (महर रेजिमेन्ट)
स्व० श्री होवतसिंह गुसाईं ग्राम रगड़ीगाड । भारतीय नौसेना । दोनों १९७१ मेंभारत पाक युद्ध में
उपरोक्त शहीदों के अतिरिक्त कई जवान घायल भी हुए हैं ।

जन्तु विज्ञान, भौतिक विज्ञान व रसायनिक शास्त्र

सम्बन्धी सभी प्रकार के सामान कम दामों पर

तथा जल्दी भेजने की व्यवस्था

टूट-फूट की जिम्मेदारी हमारी

पत्र व्यवहार के लिए

सी० एल० बडोला

मैसर्स मार्डन साइन्टिफिक सेल्स कार्पोरेशन रजि०

३३/२ शक्ति नगर दिल्ली–७

न्याय प्रणाली

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार ने समय-समय पर जैसे-जैसे संविधान का निर्माण तथा उसमें संशोधन आदि किए, ग्रामीण क्षेत्रों की सुविधा एवं विकास के लिए ग्राम सभाओं न्याय पंचायत केन्द्रों एवं क्षेत्रीय विकास खण्डों का गठन भी उसी के साथ ही साथ किया।

खाटली में क्षेत्रीय विकास खण्ड बीरोखाल के अन्तर्गत पांच [५] न्याय पंचायत केन्द्रतथा उन्तासील [३९] ग्राम सभाएं है।

न्याय पचायत केन्द्र	ग्राम सभा	ग्राम सभा से सम्बन्धित ग्राम	ग्राम की परिवार संख्या	ग्राम की जन संख्या	ग्राम की भूमि (एकड़ में)
	पाली	१. पाली	७१	४०६	११०
	कोटा	२. कोटा	५४	२५१	९२
पाली		३. थापला वल्ला	५२	२१७	१२५
	ढिस्वाणी	४. ढिस्वाणी मल्ली-तल्ली	३९	२२६	६८
		५. तिमली	५१	२६२	८६
	कन्डूली बड़ी	६. कन्डूली बड़ी	७२	३३८	१३७
		७. कन्डूली छोटी	६३	३१६	११७
		८. सिमड़ी	५५	३११	१००
	कान्डा मल्ला	१०. काण्डा मल्ला	१२०	१०६०	१५९
		११. कान्डा तल्ला	७१	३११	७९
		१२. कुलस्यलकान्डा	१९	९५	२७
		१३. मरखोला	१७	१०४	३८
		१४. गोदिया	११	७५	२०
दुनाव	पखोली	१५. पखोली तैली	५७	२६६	१२१
		१६. पखोली सीली	१९	८३	३८
		१७. चन्दोली मल्ली	३०	१७४	४४
		१८. चन्दोली तल्ली	३१	१५३	५३
		१९. खात्रागांव	१५	८९	२१
		२०. महादेवसैण	४४	२२७	६१
		२१. पीपलासैण	१३	७०	१५
		२२. बाड़ियूँ	२३	१३७	४३
	पनास मल्ला	२३. पनास मल्ला	२७	१६०	४२

न्याय पंचायत केन्द्र	ग्राम सभा	ग्राम सभा से सम्बन्धित ग्राम	ग्रामों की परिवार संख्या	ग्राम की जनसंख्या	ग्राम की भूमि (एकड़ में)
		२४. पनास तल्ला	५२	२५६	५०
		२५. डांग	६४	४८२	८५
		२६. भमराई	७०	३००	१४६
		२७. डालागांव	३८	२१६	६६
	कमडई	२८. कमडई	८६	४५३	५१
		२९. जामरी	५१	३७७	५१
		३०. चटियूड़	३	३६	२२
	थापला बल्ला	३१. थापला बल्ला	६६	३४५	१४३
	घुनकपड़ी	३२. घुनकपड़ी	५७	६५३	१११
		३३. बाड़ा	३७	२०७	६६
		३४. लंगरबूँगी	१७	६५	३६
		३५. चैनपुर	२५	१६७	५८
	तलाई	३६. तलाई तल्ली	२५	२२०	५४
		३७. घुड़पाला मल्ला	६७	४०३	१७६
		३८. घुड़पाला तल्ला	२३	१५६	५६
		६९. चौण्डी	२९	१६२	५३
		४०. पटोटियों	१७	८७	२९
बीरोंखाल	डुमैला मल्ला	४१. डुमैलामल्ला	१३९	११५३	२३१
		४२. भरोली मली	१४	१८५	६६
		४३. फकोर खोला	८	७१	२६
	डुमैला तला	४४. डुमैलातला	१०९	६५६	१२०
		४५. भरोलीतली	२१	१२७	२३
		४६. रिखाड	३८	२३९	४०५
	रगड़ीगाड	४७. रगड़ीगाड	५८	४०५	१०६
	सिसई	४८. सिसई	१११	८५०	१८२
		४९. डांगू तला	२३	१६७	४४
	घनस्याली	५०. घनस्याली	१२०	७८७	२६०
	कोलरीतली	५१. कोलरीमली	७२	७००	८२
		५२. कोलरी तली	४३	३३२	१३८
		५३. तलाई	४३	२७१	६१

न्याय पंचायत केन्द्र	ग्राम सभा	ग्राम से सम्बन्धि ग्राम	ग्राम की परिवार संख्या	ग्राम की जन संख्या	ग्राम की भूमि (एकड़ में)
	नाकुरी	५४. नाकुरी	९३	६८१	२०६
		५५. नौगांव	६	५१	२३
	घोड़ियाना	५६. घोड़ियाना	४६	२५१	१२७
		५७. कन्द लेखा	१६	१०४	४४
		५८. डांग् मला	१७	१७०	३३
ढौंर	ढौंर	५९. ढौंर	५१	४०२	१३३
		६०. मैठाणा	३३	१९५	१४३
		६१. नौलापुर	३१	२५५	१९९
	खेतू	६२. खेतू	२०	१८१	१७७
	जाखणी	६३. जाखणी	३८	२२३	१०५
		६४. थवड़िया तला	१४	१०७	१२३
	थवड़िया मल्ला	६५. थवड़िया मला	१७	१७१	२३७
	तिमलाखोली	६६. तिमलाखोली	१८	१३४	६८
		६७. कोठा	२३	१८०	१४७
		६८. मरखोला	१७	१२४	०३
		६९. मवंणवखली	३३	२३१	१४०
	बन्दरकोट	७०. वन्दरकोट	३१	१६८	१४३
	दिवोली	७१. दिवोली	१५	१०५	१८५
		७२. काण्डुली	२४	१२५	५३
	थकुलसारी	७३. थकुलसारी बड़ी	६६	३४१	२०२
		७४. थकुलसारी छोटी	२८	१७५	१६२
		७५. रंगलछा	११	८०	३८
	मंगरों	७६. मंगरों	४९	२०५	१२०
		७७. भैंई चिलमी	१९	१०६	२७
		७८. झालों	२	१५	५०
		७९. सुंगरिया छोटा	३०	१६५	१४५
	सिन्दुड़ी	८०. सिन्दुड़ी मली	११७	१०३७	१२५
		८१. सिन्दुड़ी तली	१३	१३९	६८
ग्वीनखाल	कोठिला	८२. कोठिला	७१	५१५	२९२
		८३. ढुलखोली वली	१२	९९	५४
		८४. ढुलखोली पली	१८	१०१	५०
		८५. चमलाण	१५	१०५	३५

न्याय पंचायत केन्द्र	ग्राम सभा	ग्राम से सम्बन्धित ग्राम	ग्राम की परिवार संख्या	ग्राम की जन संख्या	ग्राम की भूमि (एकड़ में)
	खितोटिया	८६. खितोटिया	१०२	६९५	३३३
		८७. सिरोली	१७	१९८	९९
	बबांसा तल्ला	८८. बबांसा तल्ला	२९	३१३	९३
	बबांसा मल्ला	८९. बबांसा मल्ला	६२	६६५	२५९
	ग्वीन मल्ला	९०. ग्वीन तल्ला	२७	२००	१२५
		९१. ग्वीन मल्ला	६१	४०७	१२०
		९२. डाँडा ग्वीन	१२	११५	८०
		९३. टंडोला तल्ला-मल्ला	१२	९५	५९
	सुंगरियाबड़ा	९४. घिमडिया वल्ला-पल्ला	१७	१६५	१५२
		९५. सुंगरिया बड़ा	३८	२४९	१२८
		९६. सिलवाली	१२	९२	१
	सीली तल्ली	९७. सीली तल्ली	८१	४५०	३७५
	सीली मल्ली	९८ सीली मल्ली	१०७	८१५	५५७
	नागणी	९९. नागणी	५९	४३१	३२३
	नऊँ	१०० नऊँ	५८	३६५	२९२
		१०१. मटकुण्डा	३०	१८९	१२०
		१०२. वडययूँ गांव	८	८२	६६
		१०३. रैनिहाट मल्ला	१२	९७	८०
		१०४. रैनिहाट तल्ला	१३	८५	१०६

वाड़ा डांडा, केदार गली, हिन्डोला गैरी,
असुरखेत, सोंलाड, ढिस्वानी तल्ली,
अगरोड़ों, छिन्डोला, ह्यूंदिया

वांछित आंकड़े प्राप्त नहीं हुये ।

उक्त आंकड़े भारत सरकार द्वारा मुद्रित जनगणना लेखानुसार लिये गये हैं ।

शिक्षा का प्रसार

पट्टी खाटली ने स्वतन्त्रता के इन २५ वर्षों में शिक्षा जगत में जितनी उन्नति की है उतनी अन्य क्षेत्रों में नहीं की। इसका श्रेय वहाँ की जागरूक शिक्षा प्रेमी, दूरदर्शी महान विभूतियों को जाता है। इस समय पट्टी में एक इण्टर कालेज, चार उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पांच लघुमाध्यमिक विद्यालय बत्तीस आधारिक विद्यालय तथा पाँच कन्या आधारिक विद्यालय हैं। प्रतिवर्ष लगभग पाँच हजार (५,०००) बालक बालिकायें इन विद्यालयों से शिक्षा ग्रहण करते हैं। संक्षिप्त विवरण के साथ प्रत्येक विद्यालय का उल्लेख अधोनिर्दिष्ट है।

इण्टर कालेज बीरोंखाल :—खाटली में सर्वप्रथम शिक्षा की ज्योति सन् १८९३ ई० में आधारिक विद्यालय बीरोंखाल से जगमगाई जो कि मात्र २१ वर्षों तक जगमगाती हुई अशिक्षा के तिमिर को चीरती हुई खाटली में साक्षरों की संख्या में वृद्धि करती रही। तदोपरान्त १९१९ में कतिपय खाटली निवासियों के अकथनीय प्रयासों से यहाँ पर डी० ए० वी० मिडिल स्कूल की स्थापना हुई जो कि दुर्भाग्यवश अनुशासनहीनता के कारण सन् १९३३ में बन्द हो गया, किन्तु पुनः इस ज्योति की उपलब्धि के लिए अथक प्रयास कर १९४२ ई० में लघु-माध्यमिक विद्यालय, सन् १९५८ में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा १९६५ ई० में इण्टर कालेज के रूप में परिणित किया गया। इस समय विद्यालय का पाठ्यक्रम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग से तथा इण्टर शिक्षा हेतु विज्ञान वर्ग की स्वीकृति आदि उपकरणों का प्रयान जारी है। आर्थिक एवं अन्य प्रकार की सहायता हेतु मण्डल के अधीनस्थ दिल्ली स्थित प्रवासियों की एक संस्था 'वीरोंखाल इण्टर कालेज सहायक समिति दिल्ली' के नाम से भी कार्यरत हैं।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ग्वीनखाल :— मैठाणाघाट व्यवसायिक केन्द्र व मोटर मार्ग के समीप खटलगढ़ नदी के तल से लगभग ५०० फीट की ऊंचाई पर ग्राम ग्वीन तल्ला के क्षेत्र में स्थित इस विद्यालय की आधार शिला खाटली के सुप्रसिद्ध दानी पुरुष श्री श्री १०८ सतगुरु बाबा ग्राम सन्तकुटी (खेतू) के कर कमलों द्वारा १९ अक्तूबर १९६० में पुनः स्थापित की गई तथा इसी वर्ष शिक्षा सत्र से लघुमाध्यमिक का पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ। १९६८ में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में परिवर्तित किया गया। इस समय विद्यालय में विज्ञान वर्ग की शिक्षा भी दी जा रही है। विद्यालय बहुजन सहयोग द्वारा अपनी प्रगति पर दिनोंदिन अग्रसर हो रहा है जिसका श्रेय विद्यालय के प्रतिभावान सुशासक प्रबन्धक व उप प्रबन्धक समिति देहली को है जिनके अथक प्रयास एवं भगीरथी परिश्रम से विद्यालय खाटली के भावी कर्णाधारों का निर्माण करने में तथा इण्टर पाठ्य-क्रम चालू करने की दिशा में भी लग्नशील है।

जनता उच्चतर माध्यमिक विद्यायल पाली :— चहुंदिशि ऊँची-ऊँची पर्वतमालाओं से घिरे भू-भाग में दो लघु जल धाराओं के संगमस्थल में कोटा महादेव प्रसिद्ध शिवालय है। उत्साही समाज सेवियों की प्रेरणास्वरूप वहां की निकटवर्ती जनता ने अपने पूर्ण सहयोग से सन् १९६० ई० में इस स्थान पर जनता लघु माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की जो कि तत्पश्चात् कार्य कर्ताओं व क्षेत्रीय जनता के कठिन परिश्रम से १९६९ ई० में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में परिवर्तित हुआ। यह विद्यालय घनी आवादी वाले क्षेत्र में स्थित है। वहाँ पर पेय जल, ईंधन, क्रीड़ास्थल आदि की सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कोठिला (खटलगढ़ महादेव) :—द्रुत प्रगति का प्रतीक यह विद्यालय ग्राम कोठिला की सीमा खटलगढ़ महादेव की पुण्यस्थली में स्थित है। निकटवर्ती ग्रामों से यह स्थान एक वृत

की परिधि से केन्द्र के समान है। मोटर मार्ग के समीप यह स्थान इससे पूर्व ही प्रसिद्ध है। क्षेत्रीय जनता के उत्कृष्ट साहस एवं जागरूकता के फलस्वरूप इस विद्यालय की स्थापना सन् १९६९ ई. में माध्यमिक स्तर से आरम्भ हुई तथा तीन वर्ष की अल्पावधि में ही उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में परिणित हो गया। इस द्रुत गति के कारण ही खाटलीवासी इस विद्यालय एवं इसके संस्थापकों को प्रशंसा के पात्र मानते हैं। विद्यालय में कर्तव्यनिष्ठ अनुभवी अध्यापकवर्ग एवं कुशल प्रशासन के परिणामस्वरूप शिक्षा सत्र १९७१-७२ की आठवीं श्रेणी की परीक्षा में कुमारी सावित्री [ग्राम धनस्याली] जिले की छात्राओं में प्रथम तथा समस्त छात्र-छात्राओं में तृतीय स्थान प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई। विद्यालय की स्थापना से अद्यतन दिल्ली स्थित निकटवर्ती बन्धुओं द्वारा विद्यालय के सहायतार्थ समिति गठित है जिसका सहयोग भी सराहनीय है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ललितपुर :— यह विद्यालय समुद्र तल में लगभग ५,००० फीट की ऊंचाई पर चारों ओर से चीड़ के पेड़ों से घिरे शान्त वातावरण स्वास्थ्यवर्धक जलवायु एवं पेयजल की सुलभता वाले कालिका डांडा की पूर्वी पर्वतीय श्रृंखलाओं पर खाटली गढ़वाल एवं जिला अल्मोड़ा की सीमा के मध्य लैली उडियार नामक रमणीक एवं ऐतिहासिक स्थान है। जहाँ पर शिवालय होने के कारण धार्मिक महत्व का एक व्यापक स्थान भी है।इस स्थान की विशेषता दो स्वप्रवाहित जलधाराओं एवं शिवरात्रि मेले से प्रचलित है। विद्यालय की स्थापना स्थानीय एवं प्रवासी बन्धुओं के कठिन परिश्रम के फलस्एरूप सन् १९६० में लघु माध्यमिक पाठ्यक्रम से आरम्भ होकर सन् १९७३ में उच्चतर पाठ्यक्रम में परिवर्तित हुआ। इसका श्रेय स्थानीय जनता, कुशल संचालकों तथा दिल्ली स्थित शाखा समिति को है।

लघु माध्यमिक विद्यालय बाड़ाडाँडा :—यह विद्यालय चारों दिशाओं में चीड़ ओक आदि वृक्षावलि से घिरा हुआ दीवाडांडा की ऊंची श्रृंखला एकान्त वातावरण एवं ईंधन तथा पेयजव आदि सुविधाओं से सर्व सम्पन्न है। कतिपय बुद्धिजीवियों समाज सेवी जनों के अथक प्रयास से इस विद्यालय की स्थापना सन् १९४८ ई० में लघु से आरम्भ हुई तब से निरन्तर जनता जनार्दन द्वारा इसका संचालन हुआ। किन्तु असहनीय आर्थिक एवं रचनात्मक अभावों के कारण विद्यालय के सुसंचालन के लिए बाधायें उत्पन्न हुई इस भार से साधारण जनता को भारयुक्त करने के लिए खाटली सामाजिक विकास मण्डल तथा बाड़ाडांडा विद्यालय सहायक समिति दिल्ली, क्षेत्रीय जनता एवं प्रबन्धक समिति ने सरकार से निरन्तर इस विद्यालय को अपने नियन्त्रण में लेने के लिए प्रयास किया परिणाम स्वरूप जिला परिषद (शिक्षा विभाग) ने १९६८ ई० में इस विद्यालय को अपने नियन्त्रण में ले लिया।

जनता लघु साध्यमिक विद्यालय सिमड़ी :— ग्राम कांडा की पश्चिम दिशा तथा ग्राम सिमड़ी के क्षेत्र में सार्वजनिक निर्माण विभाग मार्ग पर शान्त वातावरण, उपयुक्त जलवायु एवं अन्य न्यूनताओं से परिपूर्ण यह विद्यालय सन् १९६९ ई० में ग्राम सिमिड़ी, काण्डुली तल्ली मल्ली काँडा आदि ग्रामों की जनता एवं दिल्ली प्रवासी बन्धुयों के द्वारा गठित सहायतार्थ समिति दिल्ली के अथक परिश्रम से स्थापित हुआ।

लघु माध्यसिक विद्यालय पखोली :— यह विद्यालय ग्राम तैली पखोली के समीप डुमैला मार्ग पर स्थित है। जिसकी स्थापना मई सन् १९६४ में हुई। यह विद्यालय पूर्ण रूपसे परिषद के अन्तर्गत है। विद्यालय भवन सुन्दर एवं आधुनिक है। किन्तु छात्राओं की संख्या कम होने के कारण इस विद्यालय को सन् १९७३ में परिषद ने सह शिक्षा की मान्यता दे दी।

आदर्श लघु माध्यमिक विद्यालय घोड़ियानाखाल :— पट्टी में नवोदित यह विद्यालय ग्राम घोड़ियाना की सीमा रामनगर बीरोंखाल मोटर मार्ग के समीप खटलगढ़ तल से ७०० फीट की ऊँचाई पर देवी मन्दिर की छत्र छाया में स्थित है। यह विद्यालय सहायक समिति दिल्ली तथा क्षेत्रीय जनता के सजग एवं परस्पर उत्साहवर्धक सहयोग से अपने अस्तित्व को स्थापित करने जा रहा है। जिसका मुख्य उद्देश्य निकट भविष्य में इस विद्यालय को तकनीकी शिक्षा केन्द्र के रूप में निर्मित किया जाना है।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पट्टी में ऐसी संस्था की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। आशा है कि यदि सभी शैक्षणिक संस्थायें, क्षेत्रीय जनसंगठन तथा विशेषतः दिल्ली स्थित सहायक व स्थानीय प्रबन्धक समिति बिषय विन्दु की विशेषता पर समय-समय पर नेक निर्देशन करते अथवा देते रहे तो लक्ष्य की पूर्ति अविलम्ब पूर्ण हो सकती है।

उपरोक्त लघु माध्यमिक विद्यालय की स्थापना माह जून १९७३ में की गई तथा इसी वर्ष में इसे मान्यता भी सरकार द्वारा प्रदान कर दी गई है।

लघु माध्यमिक विद्यालय भमरईखाल :— इस विद्यालय के निर्माणार्थ निकटस्त जनता भागीरथी प्रयत्न कर रही है। यदि जनता जनार्दन का सहयोग भविष्य में भी इसी भान्ति मिलता रहा तो यह विद्यालय भी अन्य विद्यालयों की भान्ति निकट भविष्य में ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

आधारिक विद्यालय :—जहां स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व पट्टी खाटली में केवल ७ या ९ आधारिक विद्यालय थे, वहाँ अब इनकी संख्या ३७ तक पहुंच गई है। जिनमें कन्या आधारिक विद्यालय भी सम्मिलित हैं। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार प्रति वर्ष लगभग २,५०० विद्यार्थी ज्ञानोर्जन करते हैं। जिनमें एक चौथाई के लगभग छात्राओं की संख्या है। वर्तमान विद्यालयों की तालिका निम्न प्रकार है :—

विद्यालय का नाम

१. बीरोंखाल
२. कोटा महादेव
३. चन्दोली तली
४. भमराई खाल
५. कांडा मला
६. गुजिया महादेव
७. घोड़ियाना
८. घुड़पाला मला
९. ढौंरखाल
१०. ग्वीनखाल
११. बाड़ाडांडा
१२. दिवोलीखाल
१३. नऊँखाल
१४. ढिस्वाणी
१५. थकुलसारी

विद्यालय का नाम

१६. कन्या वि० बीरोंखाल
१७. सिसई
१८. नाकुरी
१९. सीली मली
२०. दुनाव
२१. सिन्दुड़ी
२२. थापला
२३. कन्या वि० मैठाणा
२४. कन्या वि० डुमैला-तल्ला
२५. कमडई
२६. खितोटिया
२७. कोलरी
२८. तिमली
२९. सुंगरखाल
३०. बवांसा मला कन्या वि०

३१. कन्या वि० पखोली तली
३२. सीली तली
३३. डांग
३४. भटवाड़ों
३५. डालागांव
३६. तलाई
३७. जामरी

संचार व्यवस्था

डाकघर :—आधारिक विद्यालयों के समान पट्टी खाटली में डाकघरों की संख्या में सन्तोषजनक वृद्धि हुई। जहां स्वाधीनता से पूर्व मात्र एक डाकघर वीरोंखाल में स्थित था, वहां इस समय तेरह डाकघर हैं। जिनकी तालिका तथा वितरण क्षेत्र निम्न प्रकार से है :—

क्रम सं०	डाकघर का नाम	वितरण क्षेत्र
१.	कोटा महादेव	कोटा, पाली, तिमली, ढिस्वाणी, असुरखेत गोदिया
२.	कांडा	कांडा मला-तला, मरखोला, बरजारिया, साँगों बाड़ियूँ, दिया, कंडुली छोटी-बड़ी, सिमड़ी, फरसेखाल, वदरयस्याली, गोदिया।
३.	चन्दोली मल्ली	चन्दोली मली-तली, महादेव सैण, भमरई, पनास मला-तला, खालागांव, तैली पखोली, सीली पखोली, बाड़ियूँ, पिपलासैण।
४.	बाड़ा	बाड़ा, बाड़ाडांडा, लंगरबूँगी, चौण्डी, तलाई तली, घुड़पाला तला-मला।
५.	कमडई	कमडई, थापला, सौंलाड, जामरी, चैनपुर।
६.	वीरोंखाल उप-डाकघर	डुमैला मला-तला, भरोली मली-तली, रिखाड, रगड़ीगाड, नाकुरी, सिसई, डांग, डांगू तला।
७.	भटवाड़ों	घनस्याली, कोलरी मली-तली, तलाई मली, चमलाण।
८.	सिरोली	सिरोली, कोठिला, खितोटिया, ववांसा, ढुलकोली, ववांसा तला, डांगू मला।
९.	सिन्दुड़ी	सिन्दुड़ी तली मली, घोड़ियाना, कन्दलेखा।
१०.	जाखणी	जाखणी, ढौंर, थवड़िया मला-तला खेतू, नौलापुर, दिवोली, तिमलाखोली, मरखोला, कोठा, वन्दरकोट, कण्डुली।
११.	ग्वीन	ग्वीन मला-तला, ववांसा मला, घिमडिया वला-पला, मैठाणा।
१२.	थकुलसारी	थकुलसारी बड़ी-छोटी, रैनिहाट मला-तला, भोंचिलमी, झालों, सुंगरिया छोटा, मंगरौं, रंगलछा।
१३.	सीली	सीली तली-मली, नागणी, सुंगरिया बड़ा, नऊँ, मटकुण्डा, हिंडोलागैरी, भुजखेत, कफलगैरी, सगोड़ी।

इतने डाकघरों की व्यवस्था होने पर भी पट्टी खाटली की संचार व्यवस्था तब तक अपूर्ण समझी जायेगी, जब तक यहां तारघर तथा दूरभाष (टेलीफोन) की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होती।

यदि आज के प्रगतिशील युग में भी इन आवश्यक जीवनोपयोगी संचार साधनोंकी सरकार उपेक्षा करती रही तो यह इस क्षेत्र का दुर्भाग्य एवं उपेक्षित क्षेत्र समझा जाएगा।

यातायात

जनपग :— स्वाधीनता के २५ वर्ष पूर्ण होने पर भी सरकार का ध्यान जिला गढ़वाल विशेषतः पट्टी खाटली के निवासियों हेतु मोटर मार्ग, खच्चर मार्ग आदि की पर्याप्त व्यवस्था की ओर नहीं गया। जिसका स्थान वहां की ऊंची-नीची पर्वत और घाटियों में यत्र-तत्र यात्रा एवं व्यवसाय करने के लिए पगडंडियों ने ही लिया हुआ है, किन्तु केवल जनश्रम से ही यह जन मार्ग बने हैं, जो कि बहुत ही संकरे तथा दोनों ओर से कंटीली झाड़ियों से घिरे हुए हैं। कई-कई स्थानों पर तो यह विकट पहाड़ों एवं चट्टानों से गुजरते हैं, जो कि जन हित की दृष्टि से क्षति भयपूर्ण है।

खच्चर मार्ग :— जहाँ न्यूनतम परिवहन व्यवस्था या यों कहिए कि १५ वर्ष पूर्व जहां नाम मात्र को भी यह व्यवस्था नहीं थी वहाँ केवल ४, ५ खच्चर मार्ग आज तक अपर्याप्त हैं जो कि इस प्रकार हैं। सौपखाल से ललितपुर तक और बीरोंखाल से कालिका तथा दूसरी शाखा दीवा से बीरोंखाल होते हुए कांडा तक खच्चरों द्वारा अनाज एवं अन्य सामग्री का आवागमन होता है। इसके अतिरिक्त घनस्यालीगाड से सौंपखाल तक बन सीमा में वन विभाग द्वारा लीसा उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए खोला गया है, किन्तु इन्हीं खच्चर मार्गों से पट्टी की सामग्री आवागमन की समस्या हल नहीं हो पाती है। इस समस्या के समाधान हेतु मैठाणाघाट से रसिया महादेव, मैठाणाघाट से ललितपुर तथा ललितपुर से कालिका, खटलगढ़ महादेव से वाड़ा-वाड़ाडांडा, कोटा से भानादेवी तक अतिरिक्त खच्चर मार्गों की नितान्त आवश्यकता है।

पुल-पुलिया :—जैसे कि पौराणिक कहावत है कि "सबसे दूर गाड पार"। यदि वर्षा में आमने-सामने का गांव हो और बीच में नदी अपने पूर्ण वेग पर हो तो आप किसी तरह सर्वत्र जा सकते हैं किन्तु नदी पार वाले स्थान में नहीं जा सकते। इन समस्याओं के हल के लिए खाटली जैसे नदी नालों से भरपूर क्षेत्र में अधिकाधिक पुल-पुलियों की आवश्यकता है किन्तु आज तक यहाँ केवल पांच पुल ही पक्के हैं जो कि इस प्रकार हैं। दुनाव में खटलगढ़ नदी पर झूला नयार पर पुल, काँडा में नयार पर झूला जमरेऊ में नयार नदी पर पुल, डांगू खटल-गढ़ महादेव के पास पुल जाखणी में खटलगढ़ पर पुल, रस्यागाड में लकड़ी का पुल, मैठाणाघाट सिरोली (मोटर मार्ग पर) खटलगढ़ नदी पर पुल निर्मित हैं। इन पुलों के निर्माण से फिर भी अन्य नदियों में आर-पार जाना कठिन होता है। निम्न स्थानों पर जन सुविधा तथा सुगमता से आवागमन करने के लिए अविलम्ब पुल पुलियों का निर्माण होना परम आवश्यक है। लखोर नदी पर रसिया महादेव में रसिया नदी पर, रसिया नदी पर सीली में. खटल-गढ़ नदी पर थकुलसारी, लयड़स्यार, मैठाणाघाट में झूला, डांग जामरी में तथा उपनदियों में बबाँसागाड ग्वीन तल्ला में, खितोटिया में, रंगलछा जाखणी में, घनस्याली गाड महादेव में, रौंणागाड पर जामरी में तथा खटलगढ़ नदी पर गुलिया महादेव में पुल पुलियों का होना अनिवार्य है।

मोटर मार्ग :— वर्तमान समय में खाटली के मध्य केवल एक ही मोटर मार्ग रामनगर--बीरोंखाल नाम से है जिसके कारण खाटली की २५ प्रतिशत जनता की सुगम यात्रा व्यवस्था ही हल हो पाई है, किन्तु शेष ७५ प्रतिशत जनता को पूर्ववत ही मीलों पैदल चलना पड़ता है। यदि डेरियाखाल-बीरोंखाल, सौंपखाल-कालिका, मैठाणाघाट रसिया-महादेव तथा कोठिला से दुनाव तक मोटर मार्गों का निर्माण उपलब्ध हो जाय तो इन मार्गों से उक्त ७५ प्रतिशत जनता भी इस युग की यात्रा सुविधा से लाभान्वित हो सकती है।

स्वास्थ्य चिकित्सा एवं जल

स्वास्थ्य सभी सुखों का आधार है। मानव के स्वस्थ रहने एवं विकास के लिए उत्तम भोजन स्वच्छ जल एवं वायु तो आवश्यक ही है किन्तु इसके साथ-साथ उपयुक्त समय पर वाँछित औषधियों एवं पौष्टिक व सन्तुलित आहार का होना परमाश्यक है। हमारे क्षेत्र के निवासियों को स्वच्छ वायु तो प्राकृतिक देन है किन्तु इसके अतिरिक्त अन्य आवश्यक साधनों से वे सदैव वंचित रहते हैं क्योंकि यहाँ पर स्वच्छ जलाशय तो है किन्तु इनके पानी को आसानी से प्राप्त करने के लिए तकनीकी व्यवस्था नहीं है। फिर भी क्षेत्रीय जनता क्षेत्र विकास खंड बीरोंखाल एवं मंडल के निरन्तर प्रयासों के फलस्वरुप बारह गांवों की पेय जल योजना एव कुछ ग्रामों मे डिग्गी नल, गूल आदि साधनों से पेय जल प्राप्त हो रहा है।

इसके अतिरिक्त दुस्तर आर्थिक स्थिति के कारण पौष्टिक आहार एवं उच्च जीवन स्तर अभी तक कल्पना मात्र ही है। अतः इन सभी परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं की ओर से भी इस स्मारिका में संक्षिप्त विषय विवेचन करना आवश्यक हो जाता है।

जिला गढ़वाल के अन्य कतिपय क्षेत्रों के समान खाटली में भी समुचित स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव है। प्रारम्भ से ही बीरोंखाल में एक ऐलोपैथिक चिकित्सालय जिला परिषद् द्वारा संचालित है। जिसके विस्तार का कार्यक्रम विगत पांच वर्षों से निर्माणाधीन है। कतिपय प्रबन्ध एवं आवास सुविधाओं के कारण कई वर्षों तक यह चिकित्सालय बिना चिकित्सक के ही रहा। अभी भी यहां पर समुचित औषधियों का अभाव रहता है। क्षेत्रीय विकास खण्ड बीरोंखाल के अन्तर्गत लगभग १,२०,००० जनसंख्या के लिए यह चिकित्सालय नाममात्र ही है। इतनी बड़ी जन संख्या के लिए सभी प्रकार की बीमारियों के इलाज के लिए यही एक मात्र सहारा है या इसके अतिरिक्त स्थानीय आयुर्वेदिक वैद्यों, कम्पाउण्डरों एवं नीम हकीम वैद्यों की दवाइयों से व्यक्तिगत इलाज चलता है। जिसके कारण जनता को काफी पैसा बर्बाद करने के बावजूद भी निश्चित स्वास्थ्य लाभ नही मिल पाता है। इसके अतिरिक्त मण्डल एवं स्थानीय जनता द्वारा पट्टी में कतिपय प्रमुख स्थानों पर जच्चा-बच्चा केन्द्र खोलने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है किन्तु सरकार द्वारा अभी तक इस क्षेत्र की स्वास्थ्य सुविधाओं की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया गया।

इसी प्रकार पालतू पशुधन भी हमारे इस क्षेत्र में अधिक है, किन्तु स्वास्थ्य सुविधाओं, उचित औषधियों, एवं उपकरणों आदि के अभाव में वे भी असमय ही मृत्यु अथवा रोग ग्रस्त हो जाते हैं तथा स्वस्थ्य गर्भाधान भी नहीं कर पाते। क्षेत्रीय विकास खण्ड बीरोंखाल की स्थापना से आज तक यह सुविधा दुनाव एवं बीरोंखाल दो स्थानों में ही उपलब्ध है किन्तु आवागमन के साधनों की कमी के कारण इसका समुचित लाभ जनता को नहीं मिल पाता है। अतः वर्तमान जन एवं पशुधन के स्वास्थ्य को मध्य नजर रखते हुये निम्न स्थानों में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सेवाओं अथवा चिकित्सालयों की आवश्यकता अनुभव की जा रही है

१. बीरोंखाल :—वर्तमान राजकीय चिकित्सालय का विस्तार कम से कम पांच अतिरिक्त चिकित्सकों (जो कि अलग-अलग विषयों से सम्बन्धित हों) की नियुक्ति। एक पृथक जच्चा-बच्चा केन्द्र (जो कि स्त्री चिकित्सकों तथा नर्सों से युक्त हो) की स्थापना। पशु चिकित्सालय का विस्तार।

२. दुनाव :—चिकित्सालय, जच्चा-बच्चा केन्द्र की स्थापना तथा वर्तमान पशु चिकित्सालय का विस्तार।

३. भटवाड़ों :—पशु चिकित्सालय, जच्चा-बच्चा केन्द्र, तपेदिक चिकित्सालय एवं डिस्पेन्सरी की स्थापना।

४. ग्वीनखाल-मैठाणाघाट :—चिकित्सालय, जच्चा-बच्चा केन्द्र तथा पशु चिकित्सालय की स्थापना।

५. रसिया महादेव :—चिकित्सालय, जच्चा-बच्चा केन्द्र तथा पशु चिकित्सालय की स्थापना।

इसके अतिरिक्त यदि प्रत्येक गांव में एक-एक चिकित्सालय प्राथमिक चिकित्सा के लिए खोला जाए तो अति उत्तम होगा।

ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थान

जिस भू-भाग का इतिहास के पृष्ठों पर चित्रण न हो क्या उस भू भाग का अपना कोई अस्तित्व हो सकता है ? कदापि नहीं ; चप्पा-चप्पा स्वयं में इतिहास को संजोए हुए हैं। आइए ! इसकी पुष्ठि कतिपय ऐतिहासिक एवं प्रसिद्ध स्थानों की संक्षिप्त विवरणावली से करें।

उमरीसैण (काण्डा) :— खाटली के इतिहास में उमरीसैण का शीर्षस्थ स्थान है। इसी मैदान में खाटली पुत्री वीरांगना तिल्लू रौतेली का सैनिक शिविर था और इसी के समीप पूर्वी नयार नदी में बाटा ढंड (जलाशय) भी है, जहाँ पर स्नानरत इस वीरागना की शत्रु के सिपाहियों ने छुप कर हत्या की थी।

इस स्थान पर कठुलिया देवता का मन्दिर है जिस में प्रति वर्ष ३ गते व १५ गते बैसाख को वृहद मेला लगता है।

दुनाव :— ग्राम बाड़ियूं की सीमा में पूर्वी नयार और खटलगढ़ नदी के संगम स्थल को दुनाव के नाम से जाना जाता है। स्थानीय लोगों का कथन है कि इस स्थान को आबाद करने का श्रेय सन्तू नामक योगी को है, जिसने यहाँ पर एक शिवालय की स्थापना की, जिसका अब पुनःनिर्माण कर खाटली के सर्वश्रेष्ठ शिवालय का रूप दिया गया।

यदि डेरियाखाल-बीरोंखाल मोटर मार्ग बन जाए तो यह स्थान खाटली-साबली-इड़ियाकोट आदि का मुख्य व्यवसाय केन्द्र बन सकता है।

भमराईखाल :— डेरियाखाल बीरोंखाल खच्चर मार्ग पर स्थित भमरई, पनास, डालागाँव, महादेवसैण, ग्रामों की सीमाओं का हृदयस्थल है। यह स्थान स्थानीय जनता के मनोरन्जन एवं व्यापार का केन्द्र है। यहां पर पवित्र पीपल वृक्ष की छाया में ५-६ दुकाने और एक आधारिक विद्यालय हैं।

बीरोंखाल :— "यथो नामः तथो गुणः" कहावत को चिरितार्थ करने वाला यह बीरोंखाल खाटली का हृदयस्थल है जो कि अपने आप में ऐतिहासिक महत्व को संजोए हुए हैं। इसने कन्त्यूरी वंश से लेकर स्वाधीनता संग्राम तक कई उथल पुथलों का अवलोकन किया। पूर्वाद्ध से सर्व श्रेष्ठ पट्टी का व्यापारिक केन्द्र स्थल रहा। इस समय यहाँ पर खाटली का सर्वोच्च इण्टर कालेज है जो कि इस बात का प्रतीक है कि खाटली में शिक्षा जगत के प्रचार एवं प्रसार में इसी का हाथ रहा है। इसके साथ यहाँ पर एक कन्या आ० विद्यालय, एक आधारिक विद्यालय, क्षेत्रीय विकास खण्ड, राजकीय चिकित्सालय, सार्बजनिक निर्माण विभाग, विश्राम गृह, डाक-तार घर, खाद्य भंडार, जिला सहकारी अधिकोष, गढ़वाल मोटर यूजर्स आदि के मुख्य कार्यालय एवं अनुभाग स्थित हैं जो कि आधुनिक प्रगति के प्रतीक हैं।

मचुंला:— थलीसैण मोटर मार्ग एवं विद्युत की जगमगाहट ने इसकी शोभा एवं प्रगति में चार चाँद लगा दिए है। इस स्थान की विकास गति से प्रतीत होता है कि यह खाटली ही नहीं अपितु सम्पूर्ण गढ़वाल का एक रमणीक व्यापारिक, प्रशासनिक एवं शैक्षणिक केन्द्र के रूप में उभरेगा।

मैठाणाघाट :—रामनगर-बीरोंखाल मोटर मार्ग पर खटलगढ़ नदी के किनारे मैठाणा ग्राम की सीमा में स्थित है, जिसे पूर्व ग्वीनघाट के नाम से भी जाना जाता था। खटलगढ़ नदी पर बवांसा डांडा से उद्गमित नदी का यहीं पर संगम होने के कारण यह त्रिवेणीघाट निर्जन प्रतीत होता था किन्तु मोटर मार्ग की सुविधा होने से आज यह स्थान खाटली के प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों में से एक है।

ललितपुर:—समुद्र तल से लगभग ५,००० फीट की ऊँचाई पर ग्राम मंगरौं, गढ़वाल तथा अल्मोड़ा की सीमा के निकट यह स्थान "लली उडियार" नाम से जाना जाता था। कहा जाता है कि इसका यह नाम लैली बडियारी के इस गुफा में निवास होने के कारण पड़ा। किवदन्ति है कि यह व्यक्ति तीलू रौतेली वीरांगना के सीमा रक्षकों में से एक था। जिसने इसी गुफा में रह कर वीरता के साथ कन्त्यूरों का सामना किया। इस गुफा में लगभग ६०-७० व्यक्तियों के बैठने का स्थान है। उसमें एक सुरंग बनी है, जो कि कुछ गजों की दूरी पर मिट्टी से ढकी हुई है। यहां से हिमाच्छादित हिमालय की पर्वत श्रृंखलायें दृष्टिगोचर होती हैं। शायद इसी कारण अंग्रेज "भूमि बन्दोवस्त अधिकारी" मि० विकट ने सन् १८६२ ई० में इस स्थान पर अपना कार्यालय स्थापित किया था। खाटली का भूमि सर्वेक्षण कर प्रत्येक ग्राम की सीमा यहीं से निश्चित की गई जो कि आज भी मान्य है। यहां पर एक शिवालय, दो जलस्रोत इस स्थान की शोभा एवं पवित्रता पर चार चांद लगा देते है। शिवरात्रि के पुण्य पर्व पर यहां बृहद मेला लगता है।

मलण :—बबला, मालू, कन्दार तथा सान्दण आदि लघु उद्योग धन्धे सम्बन्धी कच्चे माल से युक्त यह स्थान खाटली की अन्तिम सीमा पर स्थित है। यह नयार नदी के साथ-साथ जुड़ा है। इस महत्वपूर्ण स्थान की सीमा सिमड़ी के रौला से प्रारम्भ होकर घिराली की सरहद तक है।

गढ़ी :—स्वनाम से ही परिचायत्मक यह स्थान ग्राम डांडा ग्वीन, टंडोला (ग्वीन मल्ला) के मध्य एक ऊँचे से पर्वत की भान्ति पौराणिक इतिहास को बुलन्द करता हुआ आज भी ज्यों का त्यों विराजमान है। इसकी मुख्य विशेषतायें पर्वत से पर्यों रौल तक लम्बी भूमिअन्तर्गत सुरंग जिसके समीप से कभी कभी एक सींग का बैल भी अकस्मात दृष्टिगोचर होता था जो कुछ ही क्षणों में विलीन भी हो जाता था। जहां दो बृहदाकार तथा कतिपय आकार की खाइयां हैं। आज भी यहां पर सदियों पुराने लोहारों की भट्टियों की ईंटें यथा तरह तरह की ओखलियां तथा भवनों के खण्डहर आदि दृष्टिगत होते हैं।

रसिया महादेव :—इस स्थान पर बहुत प्राचीन शिवालय स्थित है। यह स्थान रस्यागाड तथा लखोर नदियों के संगम स्थल पर बहुत रमणीक स्थान है। इन्हीं दोनों नदियों के संगम से खटलगढ़ नदी नाम की उत्पत्ति होती है। समस्त खाटली को दो भागों में विभक्त करती है। यहां पर मकर सक्रांति को मेला लगता है।

समस्त खाटली निवासी हिन्दू धर्मावलम्बी हैं इसीलिए इनमें भगवती दुर्गा (दीवा) भगवान शिव शंकर तथा भैरव (भैरों) की उपासना का उनके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। यों तो प्रत्येक गाँव का कोई न कोई रक्षक देवी देवता माना जाता है जिसकी ग्राम वासियों द्वारा नियन्त्रित रूप से पूजा की जाती है। इसे भूमिदेव भी

कहते हैं । वैसे तो अधिकतर ग्रामों में आराध्य देवी देवताओं के मंदिर हैं किन्तु उनमें से निम्न लिखित उल्लेखनीय एवं प्रसिद्ध हैं ।

दीबा मन्दिर :— खाटली सिरमौर दीबाडाँडा के हरे-भरे पर्वत पर भगवती दुर्गा के दो मन्दिर हैं । एक मोटर मार्ग तथा दूसरा मुख्य मन्दिर दीवा पर्वत की सबसे ऊँची चोटी पर स्थित है । जिसमें खाटली विकास मण्डल द्वारा सन् १९६२ ई० में भगवती दीवा दुर्गा की मूर्ति की स्थापना की गई । जहाँ पर धार्मिक एवं आस्तिक खटली निवासियों द्वारा प्रति वर्ष बैसाख १ गते (संक्राति) के पुनीत पर्व पर परम्परागत वृहद मेला आयोजित किया जाता है । इसके अतिरिक्त दीबा पर्वत माला में कुछ ही दूरियों पर दीवा माता के कथित विश्रामास्थलों को माला में गुंथेहुए विशेष कड़ियों के रूप में गिना जाता है ।

दीवामाता की परम्परागत पूजा से पूर्व भण्डार सेरा में पूजा का शुभारम्भ किया जाता है । यह स्थान ग्राम डाँग के निकट खटलगढ़ नदी के किनारे जलस्रोत के मध्य स्थित है । किवन्दति है कि यहाँ पर दीवा माता जल ग्रहण करती थी ।

दुर्गा मन्दिर एवं मेला:—बीरोंखाल, थकुलसारी प्रति वर्ष बैसाख २ गते, भिन्डीखाल, चन्दोली और ढौंर बैसाख ७ गते, कान्डा ३ गते, ग्वीनखाल ५ गते, बाड़ाडाँडा १० गते, सौंफखाल १४ गते मेला लगता है ।

इनके अतिरिक्त ग्राम भमराई, डालागाँव, खालागाँव, तिमलीखाल, घोड़ियाना, पिपलासैंण, देवीधार (डाँग) में दुर्गा मन्दिर स्थापित हैं जिनमें स्थानीय जनता नियन्त्रित रूप से आराध्य पुष्प चढ़ाती है । घनस्याली, नाकुरी एवं सिन्दुड़ी में वद्रीनाथ के मन्दिर हैं । इसके अतिरिक्त ग्राम कोठिला, बाड़ियूँ, ग्वीन तल्ला, घुड़पाला मल्ला आदि में भैरव (भैरों) के मन्दिर हैं जहाँ कि गांव पूजा होती है ।

निम्नलिखित गाँवों में प्रति तीसरे या पांचवे वर्ष साक्षात देवी की पूजा वृहद मेले के रूप में की जाती है :— नऊँ, मंगरौं, थकुलसारी, ग्वीन मल्ला, बवांसा मल्ला, खितोटिया, काण्डा मल्ला, जाखणी, ढ़ौंर, नौलापुर (ज्वाल्पा), घोड़ियाना, डुमैला मल्ला, ज्वाल्पा (सिन्दुड़ी), तलाई, डांग, पनास, कालिका की चोटी आदि-आदि ।

शिवालय

कोटा महादेव :— ८ गते बैसाख को पूजन एवं मेला आयोजित ।

ढ़िस्वाणी :— शिवरात्रि को पूजन तथा मेला ।

चन्दोली: — शिवरात्रि को पूजन तथा बैसाखी को भी मेला ।

खटलगढ महादेव :— शिवरात्रि तथा बैषाखी को मेला एवं पूजन ।

गुजिया महादेव :—बैषाखी मेला ।

सीली मल्ली महादेव में भी मेला लगता है ।

यद्यपि क्षेत्रीय जनता आर्थिक, औद्योगिक, शैक्षणिक इत्यादि क्षेत्रों में पूर्ण रूप से पिछड़ेपन के कारण निर्धनता का ग्रास बनी हुई है। जिसके परिणाम स्वरूप उसका जीवन स्तर निम्न श्रेणी का है तथापि आधुनिक विकासोन्मुख भारत को दृष्टिगत रखते हुये कतिपय समस्याओं का निदान अविलम्ब किया जाना वाँछनीय एवं आवश्यकीय है जिसके बिना क्षेत्रीय जनता सरकार का इस सौतेले व्यवहार पर संदिग्ध दृष्टि से मूल्यांकन करेगी, इसमें किसी भी प्रकार की अतिशयोक्ति न होगी। यद्यपि समस्त क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की अनेक समस्यायें विद्यमान हैं तथापि यहां पर कुछेक समस्याओं का ग्राम सहित विवरण सम्बन्धित अधिकारियों के तत्काल संदर्भ हेतु दिया जा रहा है। अधोलिखित समस्याओं एवं आवश्यकताओं को ग्राम समस्याओं के रूप में लिया गया है। पट्टी स्तर की मुख्य समस्याओं एवं आवश्यकताओं में तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र, चिकित्सालय, पशु चिकित्सालय, प्रसूती केन्द्र, कुटीर उद्योगों की स्थापना एवं प्रोत्साहन, कृषि सम्बन्धी आवश्यक जानकारी इत्यादि-इत्यादि प्रमुख हैं। जिनके लिए सरकार का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया जा रहा है।

ग्रामानुसार विभिन्न न्यूनतायें

क्रम सं०	ग्राम	पेयजल/सिंचाई	चिकित्सा	विद्युत	सड़क/पुल	उच्च शिक्षा
१.	असुरखेत	पेयजल	चिकित्सा	विद्युत	सड़क-पुल	उच्च शिक्षा
२.	काण्डुली	पेयजल सिंचाई	,,	,,	,,	,,
३.	कमडई	पेयजल	,,	,,	,,	,,
४.	कांडा मल्ला	,,	,,	,,	,,	,,
५.	कोठिला	,,	,,	,,	सड़क-पुल	,,
६.	कोलरी	,,	,,	,,	सड़क	,,
७.	ग्वीन तल्ला	,,	,,	,,	पुल	,,
८.	घुड़पाला तल्ला	,, सिंचाई	,,	,,	सड़क	,,
९.	घुड़पालामल्ला	,, ,,	,,	,,	,,	,,
१०.	घोड़ियाना	,,	,,	,,	तकनीकी केन्द्र	,,
११.	जामरी	,,	,,	,,	पुल सड़क	,,
१२.	डांग	पे० ज० सिंचाई	,,	,,	सड़क	,,
१६.	डुमला मल्ला	पे० ज०	,,	,,		,,
१४.	ढुलखोली	,, ,,	,,	,,	सड़क पुल	,,
१५.	तलाई	,,	,,	,,	सड़क	,,
१६.	थापला	,,	,,	,,		,,
१७.	दिवोली	,,	,,	,,	सड़क	,,
१८.	नाकुरी	पेय जल	,,	,,	,,	,,
१९.	पनास मल्ला	,,	,,	,,	पुल	,,
२०.	बवांसा मल्ला	,,	,,	,,	,, ,,	,,
२१.	बवांसा तल्ला	पे० ज०	चिकित्सा	विद्युत		,,
२२.	बाड़ियूँ	,,	,,	,,	सड़क	,,

क्रम सं०	ग्राम	पेयजल/सिंचाई	चिकित्सा	विद्युत	सड़क/पुल	उच्च शिक्षा
२३.	भरोली	पे० ज० सिंचाई	"	"	"	"
२४.	मैठाणा	"	"	"	"	"
२५.	रंगलछा	"	"	"	पुल	"
२६.	लंगरबूंगी	"	"	"	"	"
२७.	सिरोली	"	"	"	पुल सड़क	"
२८.	सिसाई		"	"	"	"

With Best Wishes

To The Garhwal, khatli Samajik Vikas Mandal (Regd.) Delhi

from

ANNOYNIMOUS

मण्डल का इतिहास

"संघोशक्ति कलौयुगे"
संगठन से उन्नति
संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनंसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जनान् उपासते ।।
एक हो जाओ, मिलकर रहो आपस में प्रेम पूर्वक बोलो ।
परस्पर मिलकर समस्याओं को हल करो, जैसे हमारे पूर्वज ज्ञानी करते आए हैं । ऐसा करने से सबकी वांछित उन्नति होगी ।

श्री सत्यदेव पूजन एवं मण्डल की स्थापना

इस कर्म भूमि में धर्म परायणता के लिए एवं संस्कृति के लिए भारत आदि काल से ही भगवान भुवन-भास्कर की भांति अगुण्य रूप से चमकता है । भारत के मुकुट हिमगिरिराज के उत्तराँचल की इसी ऋषि भूमि देव-भूमि गढ़वाल में "पट्टी खाटली" मल्ला सलाण के मध्य में स्थित है । भगवान विष्णु को ही सत्य-नारायण कहते हैं । इसीलिए संसार में यही सत्य है और सत्य रहने वाली वस्तु संसार में केवल एक भगवान ही है । अन्य सब मिथ्या है । भला ऐसी भूमि में जन्म लेने वाला व्यक्ति क्यों न देवी शक्तियों व धर्म में आस्था रखता हो । इसी प्रकार दिल्ली स्थित "**खाटली**" प्रवासियों ने सर्व प्रथम सामूहिक रूप से सन् १९३४ ई० में श्री सत्यदेव पूजन उत्सव मनाने का कार्यक्रम प्रारम्भ किया ।

पट्टी खाटली श्री सत्यनारायण पूजन के मंडल की स्थापना के बाद प्रति वर्ष अर्थात सन् १९४४ तक एक प्रथा के रूप में पूजन का कार्य क्रम होता रहा । किन्तु इसके पश्चात ४ वर्ष अर्थात सन् १९४८ तक पूजन की वर्ष गिरही तीव्र इच्छा होते हुए भी प्रथम लड़ी से नहीं पिरोई जा सकी क्योंकि इन वर्षों के दौरान खाद्य पदार्थों पर नियन्त्रण तथा अन्य कतिपय प्रतिकूल मूल भूत कारण विद्यमान थे । सौभाग्यवश इसी के अनन्तर १५ अगस्त १९४७ को हमारे प्रिय देश ने स्वराज्य लिया । देश का विभाजन हुआ यत्र-तत्र साम्प्रदायिक उपद्रव हुए, फलतः कराचीं, क्वैटा आदि विभिन्न शहरों में रहने वाले खाटली वन्धु श्री सत्यदेव की परमानुम्पा से अधिकांश संख्या में भारत की राजधानी दिल्ली में पहुंच गए । कुछ ही दिनों में अन्य विभिन्न स्थानों से खाटली निवासी यहाँ पर दिनों दिन एकत्रित होने लगे और सर्वत्र शाँति का वातावरण सुलभ हुआ । खाटली प्रवासियों को अपने विछुड़े हुए एकता के प्रतीक पूजन मण्डल की स्मृति जागृत हुई और इसे पुनर्जीवित करने हेतु इन दिल्ली स्थित प्रवासियों के दिलों में आतुरता धर कर गई । परिणाम स्वरूप दूरदर्शी समाज प्रेमी तथा उत्साही पुरुषों के सद्प्रयासों को मूर्तरूप देने के लिए श्रीभुवानन्द पोखरियाल और स्वर्गीय श्री भवानसिंह सजवाण जैसे और अन्य समाज सेवियों के नेतृत्व में १५ अगस्त सन् १९४८ ई० को एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया तथा सर्व समिति से पुनः श्री सत्यदेव पूजन मनाने का निर्णय पारित हुआ । तत्पश्चात् नवम्बर १९४८ को श्री सत्यदेव पूजन बड़े हर्षोल्लास के साथ प्रीति भोज सहित सुसम्पन्न हुआ तद्न्तर पट्टी के कतिपय उत्साही जिज्ञासु युवकों की यह प्रवल धारणा सफल हुई कि श्री सत्यदेव पुजन मण्डल को पूजन ही तक सीमित न रखकर इसे एक व्यापक रूप दे दिया जाय । जिसके माध्यम से हम प्रवासी वन्धु सामाजिक क्षेत्र में भी कुछ प्रगति तथा कुछ पट्टी के विकास हेतु कार्य कर सकें । अतएव १६ जनवरी १९४९ को इस विषय हेतु एकवृहद

सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में उक्त प्रस्ताव पर गहनता पूर्वक विचार विनियम किया गया तथा सर्व समिति से हर्षध्वनि के साथ स्वीकृत किया गया तथा २ फरवरी १९४९ को आयोजित सार्वजनिक सभा में वर्तमान मण्डल का नामाकरण संस्कार "गढ़वाल पट्टी खाटली सामाजिक विकास मण्डल दिल्ली" किया गया। तदोपरान्त १३ फरवरी १९४९ की वृहद सभा ने विधिवत घोषणा कर मण्डल का कार्य-क्रम अग्रसारित करने की स्वीकृति प्रदान की।

अतएव खाटली सामाजिक विकास मण्डल का मूल उद्गम यहीं श्री सत्यदेव भगवान का पूजन है। प्रति वर्ष निष्ठा पूर्वक भाव से खाटली प्रवासी दिल्ली में कथा वाचन और पूजा करते हैं। भगवान श्री सत्यदेव के वरद् हस्त खाटली की जनता के मस्तक पर होने के फलस्वरूप ही क्षेत्र का वर्तमान विकसित रूप निखर पाया है। अस्तु आज हम इतने वृहद जन समूह के रूप में उन्हीं सामज सेवी दूरदर्शि महानुभावों के प्राज्ञ मस्तिकों से प्रामूर्द मण्डल का २५वां वार्षिकोत्सव एवं ३९वां श्री सत्यदेव पूजन का अनुष्ठान कर रहे हे। एवं प्रति वर्ष करते आए हैं।

होली-उत्सव

देश के प्रमुख त्यौहारों में से होली वसन्त ऋतु में मानाए जाने वाला सबसे बड़ा उमंग भरा त्यौहार है यह बैरभाव को भुलाकर मिलन और पारस्परिक प्रेम का प्रतीक है। सन् १९५२-५३ से मण्डल सुसंगठित एवं खेल परिधानों में सुसज्जित होकर आदर्श रूप में इस महत्वपूर्ण उत्सव को मनाता आ रहा है। प्रति वर्ष मण्डल द्वारा होली मंगल दल के रूप में [खोलो किवाड़ चलो मठ भीतर दर्शन दे माह माही तथा रंगा में राजीं रहो, जियो जुग-जुग जियो] पवित्र सन्देश दिल्ली स्थित प्रत्येक खाटली वन्धु के द्वार तक पहुंचाया जाता है। दीवा माँ का ध्वज फहराकर होली मंगल दल घर घर जाकर मनमोहक नृत्य गान कर पारस्परिक प्रेम का प्रदर्शन करते हुए मण्डल के सद्भाव के प्रतीक के रूप में रंग देकर भारतीय संस्कृति की स्पष्ट झलक देखते ही बनती है। दिल्ली विकास के साथ साथ खाटली वन्धु भी निकटतम क्षेत्रों (नगर) से दूरस्थ क्षेत्रों में आवासीय सुविधा प्राप्ति के कारण जाकर बस गए, किन्तु मण्डल का सभी से निकट सम्पर्क बना हुआ रहता है मण्डल इस महोत्सव के शुभ पर्व पर किसी न किसी रूप में प्रत्येक प्रवासी को होली का प्रेमोपहार रंग वितरित कर अपने स्नेह का पात्र बनता व बनाता है।

मण्डल ने इस उमंग भरे त्यौहार को केवल मात्र अपने मनोरंजन का ही साधन नहीं बनाया बल्कि इससे जो भी आय श्रद्धालु जनो से होती है। उसका सद्पयोग पट्टी के अन्तर्गत शिक्षा प्रसार आदि सार्वजनिक कार्यों की पूर्ति हेतु किया जाता है। यहां पर इसका उल्लेख कर देना सर्वथा उचित होगा कि मण्डल ने सन् १९५५-५६ ई० में होली से हुई आय दीवा डाँडा में जगत जननी भगवती जगदम्वा दीवा माता का चबूतरा बनाने में लगाई। जहां पर मण्डल द्वारा दीवा माता की संगमरमर की मूर्ति सन् १९६२ ई० में जयपुर से मंगाकर स्थापित की गई है। स्पष्टतः यह मण्डल की धार्मिक प्रगाढ़ आस्था का सुपरिचय है।

बैसाखी उत्सव

बैसाखी उत्सव भी हमारे देश में प्रतिवर्ष प्रथम बैसाख मास को बड़ेश्रद्धाभाव एवं निष्ठापूर्वक मनाया जाता है। लोग नव वर्ष स्वागतार्थ और जगत जननी जगदम्वा शक्ति माता से मंगलमय जीवन की कामना के

लिए यत्र-तत्र देवालयों में सामुहिक तथा विधिवत रूप से पूजन करते हुए मेलों का आयोजन करते हैं। इसी शुभ पर्व के बाद लगातार पूरे माह गढ़वाल अन्तस्थल में सर्वत्र मेलों की लड़ियां लग जाती है। गांव-गांव से बाल-अबाल, स्त्री-पुरुष सामुहिक रूप में गाजे बाजे निशानें सर्यां इत्यादि संघ मधुर मन-मोहक लोक गीत व पौराणिक धार्मिक गीतों को गगन भेदी ध्वनियों के साथ नवीन वस्त्र भूषण धारण कर शक्ति माता के दर्शन व आशीर्वाद प्राप्त करने मेलों में जाते है। इसके अतिरिक्त इन मेलों का ध्येय यहां के जन जीवन में चिर परिचित सुसज्जनों व मित्रों से मिलकर अपने दु.खों को भुलाना है।

सन् १९४९ ई० को मण्डल द्वारा गढ़वाल भवन भूमि पंचकुंया मार्ग में प्रातः ११ बजे भगवती दीवा माता का पूजन एवं आह्वान किया गया और माता के चरणों में अपनी धार्मिक श्रद्धांजलियां समर्पित की। उस दिन इस बैसाखी महोत्सव का दृश्य ऐसा लग रहा था कि मानो खाटली प्रवासी ही इसका अनुष्ठान न कर रहे हो अपितु दिल्ली स्थित समस्त गढ़वाली बन्धुओं की ओर से आयोजित हुआ हो। तभी से मण्डल प्रतिवर्ष इस पुनीत त्यौहार को हर्षोल्लास के साथ मनाता आ रहा है अब भी खाटली प्रवासी अधिक संख्या में आकर हर बैसाखी की सुबह दीवा माता के पूजन में सम्मिलित होकर अपनी धार्मिक भावनाओं का प्रदर्शन मां के चरणों में करते है, और सांय काल ढोलक, दमाऊं नृसिंगा मुण्जेरे आदि के साथ अपनी जन्म दायत्री गढ़ भूमि की याद में मन मोहक मधुर गीतों, चौंफला आदि का कार्य क्रम अधिक रात्रि तक चलाते रहते हैं।

सन् १९३० ई० में मण्डल ने दीवाडांडा में अपनी अधिष्ठात्री दीवा माता की संगमरमर की मूर्ति बनाकर सन् १९६२ ई० के पावन पुनीत इसी बैसाखी के दिन विशाल मेले का आयोजन कर स्थापित की थी। इस प्रकार मण्डल ने पट्टी के अन्तर्गत जीर्ण मन्दिरों का भी जीर्णोधार करने का श्रेय प्राप्त किया। गुजिया महादेव, दुनाव महादेव, खटलगढ़ महादेव, तिमली खाल दीवा मन्दिर आदि महत्वपूर्ण मन्दिरों को आर्थिक, सामाजिक संरक्षण प्रदान किया। इन २५ वर्षों के मध्य मण्डल ने धर्म के प्रति अपनी वैदिक आस्था को समुचित स्थान देकर भावी सन्तति के लिए धर्म परायण जीवन दर्शन का मार्ग प्रशस्थ किया है। मण्डल ने दिल्ली में भगवती दीवा माता के मन्दिर निर्माण का निर्णय लिया है, तथा इस दिशा में निर्माण कार्य के लिए ठोस कार्यक्रम अपनायें जाने के लिए कुछ सदस्यों को नियुक्त किया हुआ है। आशा की जाती है कि शीघ्र ही हमारी यह आकाँक्षा फलवती सिद्ध होगी।

दशहरा महोत्सव (रामलीला)

ईश्वर की इस सृष्टि में केवल मानव ही एक चिन्तनशील प्राणी है। वह अपना और समाज का चिन्तन करते हुए आया है। जिसका परिमार्जित रूप आज के इस स्पुतनिक युग में देखने को मिल रहा है किन्तु मानव मनोवृतियां यहीं तक सीमित नहीं हो जाती, उसकी इच्छा लौकिक एवं परिलौकिक आनन्द प्राप्ति के लिए आतुर रहतीं है। इसकी पूर्ति मण्डल के नाट्य विभाग के द्वारा ही की जा सकती थी। अस्तु नाट्य विभाग का प्रादुर्भाव सन् १९४९ ई० में हुआ। इसी वर्ष विजय दशमी के शुभावसर पर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी की आदर्शमय लीलाओं को रंग मंच पर अभिनीत कर प्रदर्शित किया गया। भगवान राम की महिमा से लीला का प्रदर्शन अत्यधिक प्रशसनीय रहा और यहीं से मण्डल इस कला में ख्याति प्राप्त कर गया।

इस अवसर पर हम रामलीला के प्रथम निर्देशक स्वर्गीय श्री रामप्रसाद पोखरियाल को स्मरण किए बिना नहीं रह सकते। सन् १९४९ ई० से सन् १९७३ तक मण्डल ने इस दिशा में अद्वितीय प्रशंसा प्राप्त की तथा

दिल्ली में अपने संगठित और धर्मानुरागी समुदाय का सर्वोत्तम परिचय दिया । सन् १९६५ में भारत पाकिस्तान के आक्रमण और दूसरी बार विजय दशमी के ही शुभ पर्व पर तीन दिवसीय एक विशाल "विकास गोष्ठी" के आयोजन से रामलीला का प्रदर्शन नहीं किया जा सका ।

शिक्षा

अनादि काल से मानव सुख उपभोग के लिए कार्यरत रहा है । वह अनेक प्रकार के कष्टों को केवल इसलिए सहन करता है कि इसके बाद उसको सुख और आनन्द की प्राप्ति होगी । हमारे पुराण व उपनिषद भी सभी प्रकार के पदार्थ एवं सुख प्राप्ति का साधन विद्या एवं ज्ञान को ही मानते हैं । कहानी है कि:—

विद्या ददाति विनय, विनया दाति पात्रत्वम् ।
पात्रत्वाम् धनमा प्रोनति धन धर्मः ततः सुखम् ।।

अथत् सारे सुखों का मूल विद्या है । फिर भला सामाजिक विकास मण्डल अपने क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार व प्रसार के लिए अग्रसर क्यों न होता । मण्डल ने विभिन्न विभागों की स्थापना की, ताकि कार्य तीव्र गति व सुगमता पूर्वक चलाया जा सके । जिन विभागों में एक शिक्षा विभाग भी था ।

दिल्ली में मण्डल द्वारा रात्रि पाठशाला खोली गई, पुस्तकालय की स्थापना की गई एवं हस्तलिखति पत्रिका निकाली गई । गढ़वाल में पट्टी के अन्तर्गत मण्डल की स्थापना तक एक ही माध्यमिक विद्यालय, बीरोंखाल में स्थापित था किन्तु आज इस क्षेत्र में एक इण्टर कालेज बीरोंखाल, चार उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ग्वीनखाल, पाली, कोठिला (खटलगढ़ महादेव), ललितपुर तथा चार लघु माध्यमिक विद्यालय बाड़ाडांडा सिमड़ी, घोड़ियाना खाल, व भमराईखाल, एक सह शिक्षा लघु माध्यमिक विद्यालय पखोली तथा ३७ आधारिक विद्यालय हैं । उक्त तालिका से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि मण्डल ने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रुचि लेकर सराहनीय कार्य किया ।

उक्त विद्यालयों को दिल्ली स्थित सहायक समितियों तथा व्यक्तिगत रूप से दिए गए शुल्क व अन्य दान के अतिरिक्त केवल मण्डल के ही कोष से इस समय तक लगभग इन विद्यालयों को वितीय सहायता निम्न प्रकार से दी गई है । बीरोंखाल २८७५.६२ तथा दिल्ली में शिक्षा प्रेमियों से ९०० रुपए एकत्रित करने में सहयोग दिया । ग्वीनखाल ५०८.३०, पाली २५५.०५, कोठिला (खटलगढ़ महादेव) ४५६.९४, ललितपुर ४०५.६५ बाड़ाडांडा ७०९.१५ एवं ३२५.०० की पुस्तके व मानचित्र, सिमिड़ी २५६.३५ तथा ४४४.९८ उक्त विद्यालयों में प्रथम द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र/छात्राओं को पुरस्कार तथा ३०.४५ रुपए छात्रों को आर्थिक सहायता दी गई । जिसका योग ५९४३.४३ रुपए हैं ।

जहाँ इन विद्यालयों की स्थापना में मण्डल ने अद्वितीय साहस और कर्तव्य परायणता का परिचय प्रस्तुत किया वहां छात्रों को उत्साहित करने की ओर भी समुचित ध्यान देकर रोकड़ धनराशि अनुदान एवं शिक्षण सामाग्री के रूप में पारितोषिक अभियान चलाकर प्रतिवर्ष आधारिक विद्यालय से लेकर इण्टर तक के छात्रों को पुरष्कृत भी करता रहा है । अतएव मण्डल जहां शिक्षा क्षेत्र की इस मंजिल तक पहुंचने में समर्थ हुआ वहा सम्बन्धित शिक्षा विभाग उत्तर-प्रदेश के अधिकारियों, जन-प्रतिनिधियों एवं स्थानीय जनता का सहयोग भी कम नहीं है । हम इन सभी का आभार हृदय से मानते हैं । दो औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों को भी स्थापित कर मंडल संचालित करने का संकल्प ले चुका था, किन्तु सम्मुचित स्थान प्राप्त न होने के कारण अन्ततः सारी कार्यवाही

स्थगित करनी पड़ी। मण्डल अब भी विद्यालयों को समय-समय पर आर्थिक अनुदान देकर सुव्यवस्था की ओर भी हमेशा सचेत रहता है और उच्च शिक्षा के प्रसार के लिए (डिग्री कालेज) की माँग सन् १९६९ से भी पत्राचार करते हुए कृत संकल्प है।

छात्रों की शारीरिक शिक्षा की ओर भी मण्डल का ध्यान गया है तथा क्रीड़ा जगत में उनको प्रोत्साहन देने के लिए दो चल शील्डे तैयार हो चुकी हैं, जो कि पट्टी स्तर के विद्यालयों में प्रयोग की जाएगी। एक माध्यमिक विद्यालयों तथा दूसरी उच्च कक्षाओं के छात्रों में प्रतियोगिता में प्रथम आने वाले विद्यालय को दी जाएगी। पट्टी के दिल्ली में विद्याध्ययन कर रहे छात्रों का भी मण्डल द्वारा प्रति वर्ष वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर पुरस्कृत किया जाता है।

यातायात एवं संचार

मानव जीवन में यातायात और संचार साधनों का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण और विशिष्ट है। इन्हीं आधुनिकतम साधनों के फलस्वरूप अब दुनिया का विराट क्षेत्र संकुचित रूप धारण कर रहा है और साथ ही समय की दूरी को भी कम कर दिया है। किसी राष्ट्र और उस क्षेत्र विशेष का आर्थिक और सामाजिक विकास उसके उत्तम आवागमन एवं संचार साधनों की उपलब्धि से ही आंका और जाना जा सकता है। हमारी उन्नति के मार्ग में यातायात के साधनों का न होना भी एक प्रमुख बाधा थी। अस्तु इसी को दृष्टिगत रखते हुये मण्डल के कर्णाधारों ने यह आवश्यक समझा कि क्षेत्र का आर्थिक और सामाजिक अभ्युत्थान के लिए पट्टी के अन्तर्गत और सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में यातायात और संचार साधनों के सम्बन्ध में तत्काल निम्नांकित कार्यक्रम अपनाये जायें।

मर्चुला-बीरोंखाल-थैलीसैण मोटर मार्ग के निर्माण करवाने में मण्डल का विशेष हाथ रहा है। सर्व प्रथम सन् १९५० ई० में हिन्दू महासभा मन्दिर मार्ग में श्री बलदेवसिंह आर्य तत्कालीन संसद सदस्य (वर्तमान सामुदायिक विकास मन्त्री उत्तर प्रदेश) की अध्यक्षता में एक विशाल सार्वजनिक बैठक का आयोजन कर उक्त मोटर मार्ग निर्माण की मांग मण्डल ने ही अध्यक्ष महोदय के समुख रखी। इसके बाद सन् १९५४ से सन् १९५९ तक के वर्षों में मण्डल ने उपरोक्त मार्ग के निर्माण में अद्वितीय भूमिका निभाई। जैसे सर्व प्रथम चौधरी गिरधारी लाल तत्कालीन निर्माण मन्त्री उ० प्र० के आवागमन पर २१ नवम्बर १९५४ को बीरोंखाल में सार्वजनिक सभा में मण्डल की ओर से मान पत्र भेट किया गया। गढ़वाल मोटर यूजर्स सहकारी संस्था बीरोंखाल की ओर से २७ मार्च १९६४ को स्यूंसी में आयोजित सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह में श्री जगन्नाथ प्रसाद रावत मन्त्री सार्वजनिक निर्माण विभाग उ० प्र० को मण्डल की ओर से अभिनन्दन पत्र सादर समर्पित किया गया। अन्ततः सन् १९५९ ई० से इस मार्ग पर मोटरों का आवागमन प्रारम्भ हुआ। पुनः इसी मार्ग के शीघ्र निर्माणार्थ मण्डल ने दिल्ली से एक प्रतिनिधि मण्डल खाटली क्षेत्र में जन श्रम आन्दोलन का श्रीगणेश करवाकर स्थानीय लोगों में जनश्रम की भावनाओं को जागृत "चल कुटली चल फवड़ी सीधा बीरोंखाल" जैसे ओजस्वी गीत से उद्दीप्त कर उस ओर प्रेरणा प्रदान की थी। गढ़वाल मोटर यूजर्स नामक सहकारी संस्था की स्थापना में भी मण्डल का महत्वपूर्ण एवं सक्रिय योगदान रहा। सन् १९५८ ई० में मण्डल द्वारा १४ पट्टियों की संयुक्त सभा का आयोजन कर २५ हिस्से वहीं पर बेचे गये। तत्पश्चात दो-तीन साल तक निरन्तर हिस्सा बेच कर दिल्ली स्थित प्रवासियों को संस्था में हिस्सेदार बनाकर उचित प्रतिनिधित्व प्रदान कराया, जिसके परिणाम स्वरूप इस मोटर मार्ग पर अपनी ही एक सहकारी समिति की मोटरें चल रही हैं, और जनता को भारी सुविधा सुलभ कर सेवा-

रत है। साथ ही समय-समय पर इसकी सुव्यवस्था और सुविधा के लिये उचित मार्ग-दर्शन भी करता रहा है। संस्था में लगभग ६०० हिस्से तथा ४०० हिस्सेदार हमारी पट्टी के हैं। इतना ही नहीं मण्डल के अथक प्रयासों के प्रतिफल से ही इस मार्ग पर शीघ्र ही पुलों का निर्माण हो पाया था।

अब हम आपको खाटली का दिग्दर्शन करवाने की स्थिति पर समर्थ होंगे। यथा दुनाऊ खटलगढ़ नदी के झूले के स्थान पर पुल, ग्वीन-जाखणी को मिलान करने वाला पुल, जमरेऊ नयार नदी पर पुल, लैन्सीडौन-बीरोंखाल मार्ग, भटवाड़ों से सौंपखाल-बीरोंखाल खच्चर-मार्ग का पुनः निर्माण, दुनाऊ से कुंणजखाल पक्का खच्चर मार्ग, भटवाड़ों से जामरी, दुनाऊ जन-मार्ग का निर्माण एवं सन् १९६२ से डांग-जामरी आदि के समीप खटलगढ़ नदी पर पुल निर्माण इत्यादि पर आवश्यक और अविराम रूप से कार्यवाही की जाती रही। फलतः इनमें से अधिकांश योजनायें सफल हो चुकी हैं। इसी प्रकार मण्डल सन् १९५५ ई० से रेल सेवा में भी सुधार करने की मांग करता आ रहा है, कि दिल्ली से सीधी रामनगर तक रेल सुविधा हो और मुरादाबाद से रामनगर तक बड़ी रेल लाइन बिछवाने की व्यवस्था की जाय। यद्यपि सरकार की ओर से हमें आश्वासन मिला था, कि चतुर्थ या पंचम पंचवर्षीय योजना में यह कार्य प्रारम्भ किया जा सकता है, किन्तु अभी तक सरकार की ओर से लिखित सूचना उपलब्ध तो नहीं हुई परन्तु दैनिक समाचार पत्रों की सूचना से ज्ञात हुआ है, कि मुरादाबाद से रामनगर तक बड़ी रेल लाइन बिछाने का कार्य प्रारम्भ हो गया है। आशा है, कि सरकार रामनगर से मवाणा तक नई रेल लाइन बिछाकर सम्बन्धित जनता की सुख सुविधा में साधक बनेगी।

जहाँ पहले पट्टी में केवल एक डाकघर था वहा आज मण्डल के भागीरथी प्रयासों एवं क्षेत्रीय जनता की मांग पर १३ डाकघर स्थापित हो चुके हैं। जिनमें से तीन डाकघर १९५२ ई० में ही स्थापित करवाने में मण्डल ने गौरव का अनुभव किया था। क्षेत्र का सबसे प्रथम और पुराना डाकघर बीरोंखाल को उन्नत करने की मांग सन् १९५५ में रखी थी। जिसके तदनुसार यह डाकघर सब-पोस्ट ऑफिस में परणित हो गया, जहाँ आज तार, धनादेश, बचत बैंक, दूरभाष जैसी आधुनिक सभी सुविधायें उपलब्ध हैं।

स्वास्थ्य व चिकित्सा सुविधायें

पट्टी के केन्द्रस्थ में बीरोंखाल राजकीय चिकित्सालय एक मात्र क्षेत्र विकास खण्ड बीरोंखाल की चार पट्टियों की जनता की सेवा सुश्रूषा के लिए है। इसमें भी यदा कदा दवाइयों और चिकित्सक का अभाव रहता है। ऐसी स्थिति में मण्डल के कर्णधारों ने स्वास्थ्य व चिकित्सा जैसी अनिवार्य सेवा की ओर अधिक व्यापक तथा सुव्यवस्थित अवस्था में रहने के लिए अपना प्रयास आरम्भ किया। मण्डल ने प्रस्ताव पारित कर प्रान्तीय स्वास्थ्य विभाग तथा जिला स्वास्थ्य अधिकारी से निवेदन किया कि पट्टी के चार केन्द्रीय स्थानों गुजिया महादेव दुनाव महादेव, रसिया महादेव और कोटा महादेव में शिशु कल्याण केन्द्रों की स्थापना की जाय। इसी प्रकार समय समय पर प्रसूती गृहों की व्यवस्था के लिए भी स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किए गए। खाटली के अन्तर्गत यद्यपि इस समय ग्राम ढ़िसवाणी में प्रसूतिगृह के रूप में एक दाई कार्य कर रही है, जो कि क्षेत्र की जन संख्या को दृष्टिगत रखते हुए प्रर्याप्त नहीं है। मण्डल द्वारा पट्टी के उक्त स्थानों में प्रसूती गृहों की स्थापना के लिए प्रयास किया गया किन्तु इस विषय पर अभी तक स्वास्थ्य विभाग ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। बीरोंखाल चिकित्सालय में उपयोगी दवाइयों की उचित मात्रा नियमित रूप से रखने तथा अनुभवी चिकित्सकों की नियुक्ति के सम्बन्ध में भी मण्डल ने सम्बन्धित विभाग से समय-समय प्रयास किया जिसका प्रतिफल यह है कि अब इस चिकित्सालय का विस्तृत तथा आधुनिकतम उपकर्णों से युक्त

होकर ६०-७० चारपाइयों की भी व्यवस्था होने जा रही है। विगत वर्ष १९७१ से मण्डल पट्टी के अन्तर्गत एक तपेदिक चिकित्सालय (T. B. Hospital) खुलवाने हेतु उन्मुक्त होकर पत्राचार करता आ रहा है। साथ ही आप लोगों को यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि विगत वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय क्रमशः खीनखाल, दुनाऊ में स्थापित करने की स्वीकृति सरकार की ओर से दे दी गई है। भवन अभाव के कारण कार्य प्रारम्भ न हो सका। आशा है कि भवन व्यवस्था निकट भविष्य में प्राप्त हो जाएगी। तत्पश्चात् क्षेत्रीय जनों को चिकित्सा की सुविधा सुलभ होने लगेगी।

पट्टी में कई बार भंयकर संक्रामक रोगों के आक्रमण हो जाने पर मण्डल द्वारा तत्काल उचित कार्यवाही हेतु स्वास्थ्य विभाग से अमुख-अमुख रोगों के रोकथाम के लिए पत्र द्वारा निवेदन किया गया। परिणाम स्वरूप रोग की रोकथाम समय-समय पर होती गई आशा की जाती है कि मण्डल इस जन उपयोगी कार्य में और अधिक रुचि लेकर गौरव प्राप्त करेगा।

विकास गोष्ठी

मण्डल ने अपनी पट्टी की चहुंमुखी विकास के तौर तरीकों पर गहनता से विचार करने तथा पट्टी की सामयिक समस्याओं के समाधान के लिए सन् १९६९ में ४ दिवसीय २९ सितम्बर से २ अक्टूबर तक दिल्ली में विकास गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें शिक्षा, कृषि उद्योग, स्वास्थ्य, सामुदायिक यातायात आदि सांस्कृतिक विषयों के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। इस गोष्ठी का अधिवेशन प्रमुख समाज सेविका श्रीमती सावित्री देवी धर्म पत्नी श्री भक्तदर्शन जी (तत्कालीन राज्य शिक्षा मंत्री भारत सरकार) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस गोष्ठी में क्षेत्र विकास खण्ड वीरोंखाल के विकास प्रमुख स्वर्गीय मास्टर गुलाबसिंह रावत तथा उप विकास प्रमुख श्री विजयसिंह सजवाण वर्तमान विकास प्रमुख ने भाग लेकर पट्टी की समस्याओं को हल करने के लिए मंडल को अपनी ओर से पूर्णतः सहयोग देने का वचन दिया। तत्पश्चात् मंडल ने इसी अवसर पर प्राप्त विचारों लेखों व प्रस्तावो को संकलित कर "खाटली दर्शन" नामक पुस्तक प्रकाशित करने का निर्णय किया था, परन्तु किन्हीं परिस्थिति वश यह पुस्तिका प्रकाशित न हो सकी। किन्तु पारित प्रस्ताव सम्बन्धित अधिकारियों को यथा समय प्रेषित किए गए जिन पर अभी भी नियमित रूप से प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

अनुदान व आर्थिक सहायता

मंडल समय-समय पर निम्न विषयों पर आर्थिक सहायता प्रदान करता आया। शिक्षा, व्यक्तिगत, पुल झूला, पेयजल, देवालय, पंचायत भवन, राष्ट्रीय रक्षा कोष, स्वास्थ्य, दिल्ली में गढ़वाल भवन आदि के निर्माण में मंडल ने आर्थिक योगदान दिया तथा भविष्य में भी देता रहेगा। इसके अतिरिक्त भारत पाक संघर्ष में शहीद होने वाले खाटली दिवंगत सैनिकों के परिवारों को भी आर्थिक सहायता दी तथा चिकित्सालयों में स्वास्थ्य लाभ करने वाले खाटली प्रवासियों में फल वितरण व असहाय अपंग व्यक्तियों को भी समुचित आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। पट्टी के अतिरिक्त भी मण्डल सार्वजनिक कार्यों जैसे पुल झूला, मन्दिर, डिग्गी आदि पर भी आर्थिक रूप से अपनी सहानुभूति प्रकट करता है। जिसका विस्तार पूर्वक विवरण निम्न तालिका से अनुभव किया जा सकता है।

"विकास मण्डल द्वारा सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत को"

समय-समय पर अनुदान

	१९५०	१९५१	१९५३	१९५४
विद्यालयों	—	५००.००	२००.१२	२०२.००
छात्र/छात्राओं को पुरस्कार	३०.००	—	—	—
मचुंला.बीरोंखाल कमेटी	—	१०.००	—	—
व्यक्तिगत	—	—	—	५०.००
पुल	—	—	—	२०२.००

	१९५५	१९५६	१९५७	१९५८
विद्यालयों	—	—	११५.८७	३०१.५५
छात्र छात्राओं को पुरस्कार	५५.००	—	५६.९५	५०.००
व्यक्तिगत	—	६६.६०	२०.३०	—
मन्दिर	—	—	—	२५१.००
पेयजल	—	२१.३७	—	—
देव सुमन बलिदान दिवस	—	—	१०.००	—

	१९५९	१९६०	१९६१	१९६२
विद्यालयों	—	७२०.२२	७५३.००	१०३९.२९
छात्र छात्राओं को पुरस्कार	—	४६.८९	—	१३६.२४
व्यक्तिगत	—	२५.९५	६०.००	८.३०
मन्दिर	११५.०२	—	३२०.३१	३०८.७०
पेयजय	१४६.५३	—	३०.४५	१०७.४२
पुल	—	—	३५६.४०	
दक्षिणी पूर्वी गढ़वाल महा समिति	१०.००	५.००	५.००	१०.००
स्यूंसी बंगार भूला को	२५.००	—	—	—
किसान मेला विकास क्षेत्र बीरोंखाल	४.४२	४.५०	—	—
पंचायत भवन	—	३१.६०	—	—

	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६
विद्यायवों	४५३.३०	५१२.१०	३७२.८०	—
छात्र छात्राओं को पुरस्कार	—	९०.६५	—	—
व्यक्तिगत	—	६१.००	—	—
पेयजल	६२.००	४५.००	—	—

	१९६३	१९६४	१९५५	१९६६
पं० गोबिन्द बल्लभ पन्त जयन्ती	—	—	—	१०.००
सल्डमहादेव मन्दिर	—	१५.००	—	—
गढ़वाल भवन दिल्ली	—	—	—	५०१.००
दक्षिण पूर्वी गढ़वाल महा समिति	१०.००		१०.००	१०.००
बद्रीनाथ मन्दिर दिल्ली	—	—	—	५.८०
सुरक्षाकोष	१५१.००	—	—	१०१.००

	१९६७	१९६८	१९६९	१९७०
विद्यालयों	—	३०.००	३०.००	२५५.९०
जवाहरलाल नेहरू मेंटेंसरी पौड़ी			९३.२०	—
तपैदिक रोगग्रस्त व्यक्तियों को	२०.००	२५.००	२१.२०	१०.००

	१९७१	१९७२	१९७३-७४	—
विद्यालयों	२५६.३५	२०१.००	—	—
व्यक्तिगत	—	—	१०१.००	—
मन्दिर	—	—	१५१.००	—
गढ़वाल हितैषिणी सभा	२५.००	—		—
तपैदिक रोगग्रस्त व्यक्तियों को	१३.५०	१०.००	२१.६०	—
उत्तर प्रदेश कल्याण समिति	१०.००	—	—	—
सेना में शहीदों को	—	१०२.००	—	—
उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में वाली-बाल प्रतियोगिता के लिए चल्डशील्ड	—	—	—	—
मास्टर गुलाबसिंह चल्डशील्ड	—	—	१३०.००	—
		३६.००	—	—

With

Compliments

from :

M/s M. S. KHANNA ASSOCIATES

Specialists in Asphalt Surfacing
F-23, Bhagat Singh Market
NEW DELHI

Telephones :
Office : 43430
Works : 56352

परिशिष्ट

गढ़वाल

खाटली सामाजिक विकास मण्डल (पंजीकृत) दिल्ली

(स्थापित सन् १९४९ ई०)

सन् १९४९-५० से सन् १९७३-७४ तक का आय-व्यय विवरण

वर्ष	आय रु०	व्यय रु०
१९४९-५०	५१९.५०	२९१.१५
१९५०-५१	७८९.९४	६०८.५०
१९५१-५२	८९६.३१	७५०.५३
१९५२-५३	८१३.५९	५०७.३४
१९५३-५४	९३५.३४	६७३.३७
१९५४ ५५	९७४.९०	६३९.००
१९५५-५६	९८८.१२	५५३.०६
१९५६-५७	९९१.४८	४३९.०४
१९५७-५८	३,०००.८५	२,२१३.२२
१९५८-६९	३,०८२.९५	१,७५३.५१
१९५९-६०	३,८२९.०६	२,००१.९५
१९६०-६१	३,२४९.३६	२,९०५.४३
१९६१-६२	५,१८१.५५	३,६००.०४
१९६२-६३	४,५६५.११	३,३७७.२६
१९६३-६४	४,४९६.१०	३,३४९.४८
१९६४-६५	२,५६५ ४२	१,१८६.४६
१९६५-६६	२,५००.७६	९१५.६४
१९६६-६७	४,३३३.७४	२,६७०.१९
१९६७-६८	५,१८५.८३	३,०९०.१५
१९६८-६९	३,६३२.५४	९१८.५४
१९६९-७०	६,७२९-४९	४,०३८.१७
१९७०-७१	६,६९१.४८	२,८०३.१५
१९७१-७२	७,२८९.८०	२,७१६.२१
१९७२-७३	१०,७५७.४६	४,७४८.०६
१९७३-७४	१५,१०६.८९	४,८१७.४८

सामाजिक क्षेत्र में किये गये विभिन्न कार्यों पर मण्डल द्वारा प्रथम विकास रत्न, विकास भूषण तत्पश्चात् खाटली रत्न, खाटली भूषण की उपाधियां समय-समय पर प्रदान की गई। जिनकी विवरण तालिका निम्न प्रकार से है।

वर्ष	नाम	ग्राम	उपाधि
१९५७-५८	स्वर्गीय श्री भवानीसिंह सजवाण	कोटा	विकास रत्न
	श्री रामसिंह रावत	ढुलखोली	विकास भूषण
	" रामसिंह गुसाईं	रिखाड	"
	" बुद्धसिंह रावत	ग्वीनतल्ला	"
	" चन्दनसिंह नेगी	डांडाग्वीन	"
	" केशरसिंह रावत	मंगरों	"
	स्वर्गीय " भगतसिंह बिष्ट	कोठिला	"
	" भवानीसिंह रावत	मैठाणा	"
१९५८-६९	" भुवानन्द पोखरियाल	सिसई	विकास रत्न
१९५९-६०	" बलदेव प्रसाद जुयाल	कमडई	"
	" त्रिलोकसिंह रावत	घोड़ियाना	विकास भूषण
१९६१-६२	" मंगलसिंह सजवाण	थकुलसारी	खाटली रत्न
	" कुन्दनसिंह रावत	जाखणी	खाटली भूषण
	" अमरसिंह रावत	बवांसा तल्ला	"
	स्वर्गीय " बालमसिंह नेगी	सिन्दुड़ी	खाटली रत्न
	" कोतवालसिंह गुसाईं	घोड़ियाना	खाटली भूषण
	" कुन्दनसिंह बिष्ट	तलाई	"
	" चन्दनसिंह रावत	जामरी	"
१९६३-६४	" चन्द्रमणी पोखरियाल	नाकुरी	खाटली रत्न
	" उदयसिंह रावत	थकुलसारी	खाटली भूषण
	" गजेन्द्रसिंह बिष्ट	कोठिला	"
	" खुशीराम घिल्डियाल	चंदोली	"
	" जीवानन्द पोखरियाल	सिसई	खाटली रत्न
१९६८-६९	स्व० श्री जीतसिंह बिष्ट	तलाई	
	" श्री भगतसिंह बिष्ट	कोठिला	
	श्री चन्दनसिंह नेगी	डांडाग्वीन	सम्मान पत्र
	" चन्द्रमणी पोखरियाल	नाकुरी	
	" भवानीसिंह रावत	मैठाणा	

आजीवन सदस्य सूची

मण्डल के विधानांक ६ अनुच्छेद (ग) (१) (घ) संशोधित नियम १९६५ और १९७३ के अन्तर्गत निम्न सदस्यों ने मण्डल के प्रति अपनी सामाजिक आस्था आजीवन सदस्य के रूप में प्रदान की।

नाम	ग्राम	वर्ष
श्री आनन्द प्रकाश पोखरियाल	नाकुरी	१९६५
श्री कोतवालसिंह गोसाई	घोड़ियाना	,,
श्री केदारसिंह विष्ट	कोठिला	,,
श्री सीताराम जुयाल	ढ़ौंर	,,
श्री दरपानसिंह रावत	नाकुरी	,,
,, अमरसिंह रावत	बवांसा तला	१९७३
,, श्यामसिंह विष्ट	कोठिला	,,
,, भरतसिंह विष्ट	,,	,,
,, खुशहालसिंह नेगी	,,	,,
,, भीमसिंह नेगी	,,	,,
श्रीमती गोदाम्बरी देवी	नाकुरी	,,
,, गणेशी देवी	घोड़ियाना	,,
श्री मोहनसिंह शाह	,,	,,
,, जोगेन्द्रसिंह गोसाई	,,	,,
,, खुशहालसिंह ,,	,,	,,
,, गोविन्दसिंह रावत	टडोंलो	,,
,, रामप्रसाद पोखरियाल	सिसाई	,,
,, भवानीसिंह रावत	मैठाणा	,,
,, भोपालसिंह रावत	तलाई	,,
,, बलवन्तसिंह गुसाई	कंदलेखा	,,
,, हयातसिंह रावत	जामरी	,,
,, आलमसिंह रावत	बाड़ाडांडा	,,
,, गजेसिंह रावत	बवांसा तल्ला	,,

कार्यकर्त्ताओं की तालिका

सन् १९४९-५० से १९७३-७४ तक

वर्ष	प्रधान	उप-प्रधान	प्रधान मन्त्री/महामन्त्री
१९४९-५०	स्व० भवानीसिंह सजवाण	उदयसिंह	जगतसिंह सजवाण
		महानन्द शर्मा	जगदीश पोखरियाल
			बलदेव प्रसाद सुयाल
१९५०-५१	स्व० भवानसिंह नेगी		भूपालसिंह गुसाईं
१९५१-५२	जगदीशप्रसाद पोखरियाल		मंगलसिंह सजवाण
१९५२.५३	स्व० भवानीसिंह सजवाण		बलदेवप्रसाद सुयाल
१९५३.५४	भूपालसिंह गुसाईं		सीताराम पोखरियाल
१९५४-५५	जीवानन्द पोखरियाल		बलदेवप्रसाद सुयाल
१९५५-५६	बलदेवप्रसाद सुयाल		रघुवीरसिंह सजवाण
१९५६-५७	भूवानन्द पोखरियाल	हरिराम जुयाल	मंगलसिंह सजवाण
१९५७-५८	बलदेव प्रसाद सुयाल	मंगलसिंह सजवाण	वच्चेसिंह रावत
१९५८-५९	स्व० भवानीसिंह सजवाण	बुद्धिराम पोखरियाल	भगतसिंह रावत
१९५९-६०	जीवानन्द पोखरियाल		सीताराम सुयाल
१९६०-६१	बुद्धिराम पोखरियाल		सुल्तानसिंह सजवाण
१९६१-६२	रघुबीरसिंह सजवाण	दयाराम गोनियाल	वचनसिंह नरवाणी
१९६२-६३	मंगलसिंह सजबाण	आनन्दप्रकाश पोखरियाल	यशवन्तसिंह रावत
१९६३-६४	जीवानन्द पोखरियाल	वचनसिंह नरवाणी	वचेसिंह रावत
१९६४-६५	हरिराम जुयाल	सुल्तानसिंह सजवाण	वलदेव प्रसाद सुयाल
१९६५-६६	आनन्दप्रकाश पोखरियाल	भगतसिंह रावत	चन्दनसिंह नेगी
१९६६-६७	भूपालसिंह गुसाईं	कल्याणसिंह रावत	खुशालसिंह रावत
१९६७-६८	सीताराम जुयाल	अमरसिंह रावत	बुद्धिवल्लभ पोखरियाल
१९६८-६९	बुद्धिवल्लभ पोखरियाल	चन्दनसिंह नेगी	शिवचरणसिंह रावत
१९६९-७०	वलदेव प्रसाद सुयाल	आनन्दप्रकाश पोखरियाल	मनवरसिंह नेगी
१९७०-७१	भगतसिंह रावत	त्रिलोकसिंह रावत	थानसिंह नेगी
१९७१-७२	वचेसिंह रावत	खुशालसिंह रावत	बचेसिंह रावत
१९७२-७३	चन्दनसिंह नेगी	केदारसिंह बिष्ट	रामप्रसाद पोखरियाल
१९७३-७४	अमरसिंह रावत	मोहनसिंह शाह	मोहनसिंह शाह
			केदारसिंह बिष्ट

वर्ष	मन्त्री/संयोजक	उपमन्त्री	कोषाध्यक्ष
१९४९-५०	बलदेवप्रसाद सुयाल	—	बुद्धसिंह रावत
१९५०-५१	बलदेवप्रसाद सुयाल		गणेशपतिजोशी
१९५१-५२		अमरसिंह रावत चन्दनसिंह रावत	
१९५२-५३	बचनसिंह रावत		चन्द्रमणी पोखरियाल
१९५३-५४	,,		गणेशपति जोशी
१९५४-५५		जीतसिंह बिष्ट	तोताराम पोखरियाल
१९५५-५६	मनबरसिंह नेगी		शंकरसिंह नेगी
१९५६-५७		मायादत्त पांथरी	,,
१९५७-५८	मायादत्त पांथरी	भगतसिंह रावत	स्व० बालमसिंह नेगी
१९५८-६९	बालमसिंह नेगी	सीताराम, औतारसिंह	चन्दनसिंह नेगी
१९५९-६०	मायादत्त पांथरी	आनन्दप्रकाश पोखरियाल यशवन्तसिंह रावत	सुल्तानसिंह सजवाण
१९६०-६१	स्व० बालमसिंह नेगी	केदारसिंह बिष्ट अवतारसिंह सजवाण	गोबिन्दसिंह गुसाईं
१९६१-६२	केदारसिंह बिष्ट	लीलानन्द पांथरी बचनसिंह शाह	चन्दनसिंह रावत
१९६२-६३	थानसिंह नेगी	जगतसिंह नेगी बचनसिंह शाह	अमरसिंह रावत
१९६३-६४	केदारसिंह बिष्ट	दलीपसिंह चौधरी खुशालसिंह रावत	कल्पेश्वरसिंह रावत
१९६४-६५	भूपालसिंह गुसाईं	लीलानन्द पांथरी जगतसिंह नेगी	स्व० बालमसिंह नेगी चन्दनसिंह रावत
१९६५-६६	थानसिंह नेगी	बचनसिंह शाह दरपानसिंह रावत	कोतवालसिंह गुसाईं
१९६६-६७	यशवन्तसिंह रावत	दरपानसिंह रावत केशरसिंह सजवाण	उदयसिंह रावत
१९६७-६८	ब्रह्मानन्द पोखरियाल	ख्यातसिंह रावत केशरसिंह सजवाण	दलीपसिंह बडियारी
१९६८-६९	दलीपसिंह बडियारी	केशरसिंह सजवाण खुशालसिंह रावत	—
१९६९-७०	थानसिंह नेगी मनबरसिंह उनियाल	मनबरसिंह नेगी झबरसिंह रावत	खुशालसिंह रावत
१९७०-७१	मोहनसिंह शाह	झबरसिंह रावत ब्रह्मानन्द पोखरियाल	कल्पेश्वरसिंह रावत

वर्ष	मन्त्री संयोजक	उप मन्त्री	कोषाध्यक्ष
१९७१-७२	उदयसिंह नेगी	खुशालसिंह गुसाईं झबरसिंह रावत	बचनसिंह रावत
१९७२-७३	हयातसिंह रावत	खुशालसिंह रावत झबरसिंह रावत	गोविन्दसिंह नेगी
१९७३-७४	हयातसिंह रावत	महावीरसिंह रावत खुशहालसिंह गुसाईं	बलवन्तसिंह

वर्ष	उपकोषाध्यक्ष	निरीक्षक	सांस्कृतिक मन्त्री/निदेशक
१९४९-५०		जीवानन्द पोखरियाल	—
१९५०-५१		,,	रामप्रसाद पोखरियाल
१९५१-५२		बलदेवप्रसाद सुयाल	,,
१९५२-५३		सीताराम पोखरियाल	मोहनसिंह गुसाईं
१९५३-५४		उदयसिंह नेगी	चन्द्रमणी पोखरियाल
१९५४-५५		भूपालसिंह गुसाईं	,,
१९५५-५६		मायादत्त पांथरी	,,
१९५६-५७		स्व० बालमसिंह नेगी	,,
१९५७-५८		सुल्तानसिंह सजवाण	,,
१९५८-५९		सुल्तानसिंह सजवाण	चन्दनसिंह रावत
१९५९-६०	कुन्दनसिंह नेगी	बचनसिंह नरवाणी	मंगलसिंह सजवाण
१९६०-६१	थानसिंह	दयाराम गौनियाल	भगतसिंह रावत
१९६१-६२	जगतसिंह नेगी	बलदेवप्रसाद सुयाल	त्रिलोकसिंह रावत
१९६२-६३	स्व० बालमसिंह नेगी	प्रेमसिंह सजवाण	कोतवालसिंह गुसाईं
१९६३-६४	कोतवालसिंह गुसाईं	बलदेवप्रसाद सुयाल	कुन्दनसिंह नेगी
१९६४-६५	अमरसिंह रावत	बचनसिंह नरवाणी	चन्द्रमणी पोखरियाल
१९६५-६६	केदारसिंह बिष्ट	भूपानसिंह गुसाईं	चन्दनसिंह नेगी त्रिलोकसिंह रावत लीलानन्द पांथरी
१९६६-६७	रणवीरसिंह रावत	सीताराम जुयाल	चन्द्रमणी पोखरियाल
१९६७-६८	—	शिवचरणसिंह रावत	चन्द्रसिंह गोरखा
१९६८-६९	भगतसिंह रावत	बचनसिंह नरवाणी	,,
१९६९-७०	कल्पेश्वरसिंह रावत	सत्येन्द्रप्रसाद गौनियाल चन्द्रसिंह गोरखा	चन्दनसिंह नेगी
१९७०-७१	ख्यातसिंह रावत	भूपालसिंह गुसाईं	कोतवालसिंह गुसाईं

वर्ष	उपकोषाध्यक्ष	निरीक्षक	सांस्कृतिक
१९७१-७२	बालमसिंह रावत	बुद्धिबल्लभ पोखरियाल	ध्यानसिंह रावत
१९७२-७३	ख्यातसिंह रावत	दलीपसिंह बडियारी	ध्यानसिंह रावत
१९७३-७४	चन्द्रसिंह बिष्ट	"	बिशनसिंह रावत

वर्ष	माल मन्त्री	प्रचार मन्त्री संगठन मन्त्री	उपसंगठन मन्त्री
१९४९-५०	केवलसिंह		
१९५०-५१	"		
१९५१-५२			
१९५२-५३			
१९५३-५४			
१९५४-५५	शीशराम पोखरियाल		
१९५५-५६	चन्द्रसिंह बिष्ट		
१९५६-५७	"	उदयसिंह रावत	
१९५७-५८	"	"	
१९५८-५९	पातीराम शर्मा	रामसिंह गुसाईं	
		उदयसिंह रावत	
		गजेन्द्रसिंह बिष्ट	सुरेशानन्द पोखरियाल
१९६९-६०	जगतसिंह रावत		
	भवानीसिंह, चन्द्रसिंह		
१९६०-६१	अमरसिंह रावत	केदारसिंह बिष्ट	बुद्धसिंह रावत
	गजेन्द्रसिंह बिष्ट	कोतवालसिंह गुसाईं	
१९६१-६२	पातीराम शर्मा	गोबिन्दसिंह रावत	शंकरसिंह नेगी
	भगतसिंह बिष्ट		
१९६२-६३	पातीराम शर्मा	बचेसिंह रावत	
	गोबिन्दराम पोखरियाल	गजेन्द्रसिंह बिष्ट	
१९६३-६४	गोबिन्दराम पोखरियाल	गजेन्द्रसिंह बिष्ट	सुरेशानन्द पोखरियाल
	कुन्दनसिंह बिष्ट		
१९६४-६५	गोबिन्दराम पोखरियाल	उदयसिंह रावत	श्यामसिंह शाह
			चन्द्रसिंह गोरखा
			रामसिंह नेगी
			जोगेन्द्रसिंह गुसाईं
१९६५-६६	अमरसिंह रावत	राजेसिंह रावत	शाकम्बरदत्त सुयाल
	सुल्तानसिंह रावत		जोगेन्द्रसिंह गुसाईं

वर्ष	मालमन्त्री	प्रचार मन्त्री संगठन मन्त्री	उपसंगठन मन्त्री
१९६६-६७	त्रिलोकसिंह रावत गजेसिंह रावत	जोगेन्द्रसिंह गोसाईं	श्यामसिंह शाह मनबरसिंह रावत
१९६७-६८	त्रिलोकसिंह रावत, उदयसिंह	भवानीसिंह रावत	गोबिन्दसिंह रावत
१९६८-६९	अमरसिंह रावत उदयसिंह	बालमसिंह रावत	मोहनसिंह शाह
१९६९-७०	अमरसिंह रावत आलमसिंह रावत	त्रिलोकसिंह रावत	उदयसिंह रावत
१९७०-७१	अमरसिंह रावत	ध्यानसिंह रावत	
१९७१-७२	अमरसिंह रावत	मेहरवानसिंह बिष्ट	पूर्णसिंह गुसाईं
१९७२-७३	आलमसिंह रावत	वचनसिंह नेगी	"
१९७३-७४	आलमसिंह रावत	बालमसिंह रावत	बलवन्तसिंह गुसाईं चन्द्रसिंह रावत

बम्बई (महाराष्ट्र) शाखा के कार्यकर्ताओं की सूची

पद	नाम कार्य कर्ता
अध्यक्ष	श्री जयसिंह रावत
उपाध्यक्ष	" गजेसिंह बिष्ट
मन्त्री	" भीमसिंह गुसाई
उप मन्त्री	" वीरेन्द्रसिंह रावत
कोषाध्यक्ष	" विशनसिंह सावत
उप कोषाध्यक्ष	" जीतसिंह नेगी
निरीक्षक	" चन्द्रसिंह रावत
वृत संयोजक	" केदारसिंह बिष्ट
उप वृत संयोजक	"
प्रचार मन्त्री	" गबरसिंह बिष्ट
उप प्रचार मन्त्री	"
निर्देशक	" जीतसिंह नेगी
उप निर्देशक	" जयसिंह रावत
साँस्कृतिक मन्त्री	" दरपानसिंह रावत
माल मन्त्री	" गबरसिंह बिष्ट

भोपाल (मध्य प्रदेश) शाखा के कार्य कर्ताओं की सूची

१९७३-७४

पद	नाम कार्यकर्ता
प्रधान	श्री भगतसिंह शाह,
उप प्रधान	" गोपालसिंह रावत,

मन्त्री	श्री भगतसिंह गुड़ियाल,
उप मन्त्री	" मनबरसिंह शाह,
कोषाध्यक्ष	" सन्तनसिंह नेगी
उप कोषाध्यक्ष	" हयातसिंह ठाकुर
निरीक्षक	" कल्याणसिंह चौधरी
संगठन मन्त्री	" जैसिंह नेगी
"	" शेरसिंह शाह
"	" मनबरसिंह शाह
"	" गजेसिंह रावत
सलाहकार	" शेरसिंह नेगी

Tel. : 226948

M/s H. M. TRANSPORT Co.

Prop. Hardip & Mehta

4665 ROSHANARA ROAD, DELHI.

(Fleet Owner)

DELHI—BOMBAY—CALCUTTA

दिल्ली स्थित खाटली प्रवासी बन्धुओं का मण्डल के प्रति श्रद्धा का प्रतीक ही मण्डल का संगठन है।

रजत जयन्ती समारोह मनाने में विभिन्न समितियों के संयोजक सदस्य व कार्यकर्ता धन्यवाद के पात्र हैं। विशेषतः श्री अमरसिंह रावत, अध्यक्ष श्री केदारसिंह बिष्ट, महामन्त्री व उनके सहयोगी कार्यकर्ताओं ने इस वर्ष जिस धैर्य व कर्तव्यनिष्ठा से कार्य किया वह मण्डल के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा।

आनन्दप्रकाश पोखरियाल

आजीवन सदस्य

दिवंगत विभूतियों को श्रद्धाँजलि

मंडल अपने उन सक्रिय सदस्यों एव कार्य कर्ताओं की कार्य कुशलता आज भी अनुभव कर रहा है जिनकी अथक समाज सेवा एवं कर्मठता के परिणाम स्वरूप मंडल संगठित है। इन दिवंगत आत्माओं के प्रति मंडल परिवार श्रद्धांजलि दिए बिना नहीं रह सकता। स्व० सर्व श्री भवानीसिंह सजवाण कोटा, माधवानन्द पोखरियाल पखोली, बचनसिंह रावत डाला गांव, बुद्धसिंह रावत चन्दोली, बालमसिंह नेगी सिन्दुड़ी, चण्डी प्रसाद जुयाल पिपलासैंण, रामप्रसाद पोखरियाल सिसई, जीतसिंह बिष्ट तल्लाई, भगतसिंह बिष्ट कोठिला, मटरसिंह रावत सिसई, भूरासिंह शाह घोड़ियाना।

ईश्वर दिवंगत आत्माओं को स्वर्ग में शांति तथा शोक संतप्त परिवारों को यह महान क्षति सहन करने की शक्ति प्रदान करे। यह मंडल परिवार की गहरी संवेदना है।

कृतज्ञता के दो शब्द

श्रद्धेय समाज प्रेमी बन्धुओं,

समाज निष्ठा के आदर भाव को दृष्टिगत रखते हुए आप सभी सामाजिक विभूतियों के प्रति मैं अपनी तथा मंडल की ओर से शुभ कामनायें व्यक्त करते हुए हार्दिक अभिनन्दन के साथ कृतज्ञता के भाव व्यक्त करता हूं।

मंडल द्वारा समाज सेवा में रत अपने २५ वर्षों की अवधि चरण सन् १९७३-७४ को 'रजत जयन्ती' के रूप में आयोजित करने का संकल्प लिया जिसको वृहद रूप देने हेतु इस शुभावसर पर अपने भू-भाग 'खाटली' की भोगोलिक स्थित एवं अन्य बिषयों तथा न्यूनताओं के साथ ही साथ मंडल द्वारा इन २५ वर्षों की अन्तरावधि में अर्जित उपलब्धियों को समाविष्ट करते हुए स्मारिका मुद्रित करने का निर्णय लिया। स्मारिका में प्रकाशनार्थ विषयों के सम्पूर्ण संकलन का दाइत्व 'रजत जयन्ती समिति' को सौपा गया जिसके सदस्यों ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर समाज सेवा का परिचय दिया। इस हेतु मैं 'रजत जयन्ती समिति' के समस्त सदस्यों मंडल के वर्तमान कार्य कर्त्ताओं एवं अन्य सहयोगी सर्व श्री केशरसिंह सजवाण, थानसिंह नेगी, दामोदरसिंह नेगी, पानसिंह नेगी, एवं गोविन्दसिंह तकुलस्य आदि जिनका इस संकलन में सराहनीय सहयोग रहा का हृदयतल से आभारी हूं।

बन्धुओं, स्मारिका आपके हाथों में है यद्यपि इसका पूर्ण ध्यान रखा गया कि स्मारिका को लघुतम से लघुतम रूप देकर अधिक से अधिक रोचक एवं लाभदायक रूप में प्रस्तुत किया जाय तथापि स्मारिका संकलन में रह गई किसी भी प्रकार की त्रुटि हेतु मण्डल की ओर से 'रजत जयन्ती समिति' के संयोजक के नाते मैं आप लोगों से क्षमा चाहूंगा।

समारोह की सफलता हेतु शुभ कामनाओं सहित

भवनिष्ठ,

चन्दनसिंह नेगी

संयोजक

प्राची के अरुण मुकट में,
सुन्दर प्रतिबिम्ब तुम्हारा
चहुं आलोक दिशा में देखे,
जन-जन की आंखों का तारा।

खाटली विकास मंडल की रजत जयन्ती के पावन पर्व पर प्रकाशित 'स्मारिका' में माननीय श्री आनन्द प्रकाश पोखरियाल के जीवन के सामाजिक कार्यों का संक्षिप्त परिचय प्रकाशित करवा कर मैं अपनी चिरकालीन प्रवल अभिलाषा की पूर्ति का प्रयास ही कर रहा हूं जिसके लिए मैं मंडल का आभारी हूं।

श्री प्रकाश जी का जन्म सन् १९२९ में ग्राम नाकुरी पट्टी खाटली गढ़वाल में हुआ। आपके पूज्य पिता स्व० श्री रुद्रीदत्त जी ज्योतिप व कर्म काण्ड के पंडित थे। माता स्व० श्रीमती सावेत्री देवी धार्मिक व समाज सेवा प्रकृति की महिला थी। इस प्रकार धार्मिक व समाज सेवा के गुण आपको विरासन में ही प्राप्त हुए हैं। पिता की अपेक्षा माँ के गुणों का आपके जीबन पर अधिक प्रभाव पड़ा।

प्रारम्भिक शिक्षा के वाद आप माध्यमिक शिक्षा के लिए नैनीडांडा माध्यमिक विद्यालय में प्रविष्ट हुए। सन् १९४२ के भारत छोड़ो देश व्यापी आन्दोलन से आप अछूते न रह सके। आपने अंग्रेजी शिक्षा का वहिष्कार कर विद्यालय छोड़ दिया। पुनः घर वालों के आग्रह पर आप देहरादून अध्ययन करने लगे। जव आप हाई स्कूल में पढ़ रहे थे भारत को स्वतन्त्रता मिली। भारत के दो भाग हुए। पाकिस्तान से शरणार्थी भारत में आने लगे। देहरादून में भी शरणार्थियों का तांता लगा। आप पुनः शिक्षा छोड़कर शरणार्थियों के पुनर्वास में लग गए। इसी अवधि में आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सम्पर्क में आए और प्रभावित होकर संघ के सदस्य वन गए।

सन् १९४८ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की ओर से देश व्यापी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। आपने सरकारी नौकरी छोड़कर इस आन्दोलन में भाग लिया परिणाम स्वरूप गिरफ्तार हुए और कारावास का दण्ड मिला। अधिकारियों के अनुचित व्यवहार के कारण आपने प्रथम चरण में ७ दिन तथा द्वितीय चरण में २१ दिन की भूख हड़ताल रखी।

सन् १९५१ से १९५७ तक आप नई दिल्ली नगर पालिका द्वारा संचालित प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अध्यापक का कार्य करते रहे। पर्वतीय स्वयं सेवक दल, गढ़वाल कुमायूँ स्वयं सेवक दल एवं गढ़वाल सेवा दल में आप दलपति भी रह चुके हैं। दक्षिण पूर्वी गढ़वाल विकास महा समिति, गढ़वाल हितैपणी सभा, तथा गढ़वाल साहित्य मंडल जैसे जिला स्तर की समस्याओं में आपने महत्वपूर्ण कार्य कर्ता के रूप में कार्य किया।

उत्तराखण्ड प्रथक पर्वतीय राज्य के निर्माण के आप प्रबल समर्थक हैं तथा इस हेतु राजधानी में बनी अनेक संस्थाओं को आपका सहयोग बराबर मिल रहा है। गढ़वाल खाटली सामाजिक विकास मंडल (पंजीकृत) दिल्ली के आप आजीवन सदस्य हैं। इस संस्था में अनेक पदों पर कार्य कर आप पट्टी स्तर की जनता की सेवा कर रहे हैं।

सहकारिता में आपका अटूट विश्वास है। गढ़वाल मोटर यूजर्स को० औ० ट्रां० सो० (लि०) बीरोंखाल भारत सेवक समाज सहकारी उपभोक्ता भंडार किदवाई नगर (दिल्ली) खाटली उपभोक्ता सहकारी भंडार मैठाणाघाट आदि सहकारी संस्थाओं में संचालक रह चुके हैं। इन्हीं सामाजिक विचारों के आधार पर सन् १९६७ में महानगर परिषद की सदस्यता के लिए आपने किदवाई नगर क्षेत्र से चुनाव लड़ा।

अपनी मातृ भूमि गढ़वाल के विकास व प्रगति के लिए आप सदा प्रयत्नशील रहते हैं। आपका विश्वास है कि शिक्षा से ही क्षेत्र का विकास सम्भव है। इसलिए दिल्ली में निर्मित अनेक विद्यालयों की सहायक समितियों को तन-मन-धन से सहयोग दे रहे हैं। इण्टर कालेज बीरोंखाल, सहायक समिति दिल्ली के आप संरक्षक एवं अध्यक्ष रह चुके हैं। पट्टी के अन्तर्गत चल रहे अन्य विद्यालयों (१) उ० मा० वि० ग्वीनखाल (२) उ० मा० वि० कोठिला (खटलगढ़ महादेव) (३) आर्दश लघु मा० वि० घोड़ियानाखाल की सहायक समितियों के आप संरक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त उ० मा० वि० ललितपुर, पाली, नैनी डाँडा, ल० मा० वि० सिमड़ी, भमराईखाल इण्टर कालेज वेदीखाल व धुमाकोट आदि की सहायक समितियों को भी आपका सहयोग बराबर प्राप्त हो रहा है। उ० मा० वि० नैनीडाँडा के आप आजीवन सदस्य हैं।

श्री प्रकाश जी की अथाह सामाजिक व देश प्रेम की भावनाओं से ओत प्रोत होकर खाटली विकास मंडल (पंजीकृत) दिल्ली द्वारा इस रजत जयन्ती वर्ष में आपको 'खाटली रत्न' की गौरव पूर्ण उपाधि से विभूषित किया जा रहा है।

अतः परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि आप जैसे यस्वशी लग्नशील समाज सेवक को चिरायु रखे ताकि जनता आपकी सेवाओं से लाभान्वित होती रहे।

सीताराम जुयाल
ग्राम—ढौर (खाटली)
प्रधान, आदर्श ल० मा० वि०
घोड़ियानाखाल

गढ़वाल

खाटली सामाजिक विकास मण्डल (पंजी०) दिल्ली
२५वां वार्षिक प्रतिवेदन एवं (रजत जयन्ती वर्ष)

सम्माननीय अध्यक्ष महोदय,

आमन्त्रित अतिथिगण एवम् समस्त खाटली प्रवासी समाज सेवी बन्धुवर्ग एवं उपस्थित महानुभाव अपनी आराध्य दीवा माता का स्मरण कर मंडल के २५वें वार्षिक अधिवेशन "रजत जयन्ती उत्सव" और ३६वें श्री सत्यदेव पूजन के इस पावन पर्व पर मैं आप सभी महानुभावों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए दीवा माता से आपके व आपके परिवार जनों के उज्वल भविष्य की कामना करता हूं ।

बन्धु वर्ग २४ वर्षों के बाल्य अवस्था का वर्णन आप प्रति वर्ष महा मंत्री द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन से ज्ञात करते आ रहे हैं इसमें सन्देह नहीं कि प्रति वर्ष मंडल अपने कार्य क्षेत्र में प्रगति करता आ रहा है परम हर्ष का विषय है कि आज मंडल अपनी किशोर अवस्था को पूर्ण कर योवनावस्था में प्रवेश करने जा रहा है किशोर अवस्था में मंडल ने जितने भी कार्य किए वह प्रशन्सनीय हैं । मंडल द्वारा आज तक किए गए कार्यों तथा आपके सहयोग व सफलता की (स्मारिका) रजत जयन्ती समिति के सयोंजक श्री चन्दनसिंह नेगी व उनके सहयोगी समिति के सदस्यों ने एक दर्पण के रूप में आपके सम्मुख रखी है ।

यह सर्व विदित ही है कि मंडल अपने नए वर्ष का शुभारम्भ श्री सत्यदेव पूजन के साथ करता आ रहा है । इसी अवसर पर मुख्य कार्य कर्ताओं का चयन किया जाता है । कार्य कर्ताओं का उल्लेख कार्य कर्ता सारिणी में किया गया है । गत वार्षिक अधिवेशन दि० २५-२ ७३ के शुभ अवसर पर भूतपूर्व महा मन्त्री श्री मोहनसिंह शाह को उनकी कार्य कुशलता पर पुरुष्कृत किया गया ।

प्रति वर्ष मंडल तीन त्यौहार **होली बैसाखी और विजयदशमी** बड़े हर्षोंलास के साथ मनाता आ रहा है तथा सदस्य शुल्क के साथ साथ इन त्यौहारों को यदि मंडल का आय श्रोत भी कहा जाय तो कोई औचित्य नहीं होगा ।

होली :— इस वर्ष दिल्ली के वाहय क्षेत्रों में होली टोली द्वारा मंडल की शुभ कामनायें पहुंचाई गई अन्य स्थानों में सहयोगी बन्धुओं द्वारा प्रेम प्रतीक रंग पहुंचाया गया । इस वर्ष का आकर्षक कार्य क्रम होली टोली के लिए टम्पू का प्रबन्ध किया गया तथा ग्रुप फोटो खींची गई जिसका श्रेय श्री मोहनसिंह शाह एवं श्री मेहताबसिंह बिष्ट को है मैं उक्त बन्धुओं के साथ साथ होली टोली का धन्यवाद करता हूं जिनके कठिन

परिश्रम से मंडल को ८२७.२५ रु० की आय हुई जो कि गत सभी वर्षों से अधिक है और व्यय १६७.२५ रु० हुआ।शुद्ध आय ६६० रु० रही।

होली खेलते हुये एक चित्र

इस वर्ष के होली समिति के निर्णयानुसार दक्षिण दिल्ली के एक भाग में इसी कार्य काल के तत्वाधान में होली का रंगारंग कार्य क्रम किया गया। इस महोत्सव में ४६० रु० आय हुई। पूर्ण बिवरण अगले वर्ष के प्रतिवेदन में प्रकाशित किया जाएगा किन्तु यह मेरा परम कर्तव्य है कि मैं मंडल की ओर से उन सहयोगीं बन्धुओं एव संयोजक श्री जोतसिह रावत का धन्यवाद करूं जिन्होंने इस कार्य क्रम को सफल बनाया।

वैसाखी :— हिन्दुओं का यह प्रमुख त्यौहार है इस वर्ष श्री बलवन्तसिह रावत के निवास स्थान सेक्टर २/५१७ आर० के० पुरम में वैसाखी उत्सव सम्पन्न हुआ। संगठनात्मक दृष्टि में यह त्यौहार भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है किन्तु देखा गया है कि सदस्यगण इसको गौंड़ समझने लग गए हैं। वैसाखी मेले पर ६१.४६ पै० व्यय हुए हैं। इस त्यौहार के लिए अपनी आराध्य दीवा माता के लिए खाटली में एक झण्डी धूप व १.२५ पै० भेंट भेजा गया।

विजय दशमी:— प्रतिवर्ष मंडल भगवान पुरुषोतम श्री रामचन्द्र जी का पुण्य चरित्र रंग मंच पर प्रदर्शित करता आ रहा है। इस वर्ष दि० २७-९-७३ से ७-१०-७३ तक किदवई नगर में लीला प्रदर्शित की

गई। स्वागताध्यक्ष श्री बलदेव प्रसाद सुयाल ने धर्म प्रेमी जन समूह व आमन्त्रित महानुभावों का मंडल की ओर से स्वागत किया। स्वागत समारोह बहुत ही दर्शनीय रहा।

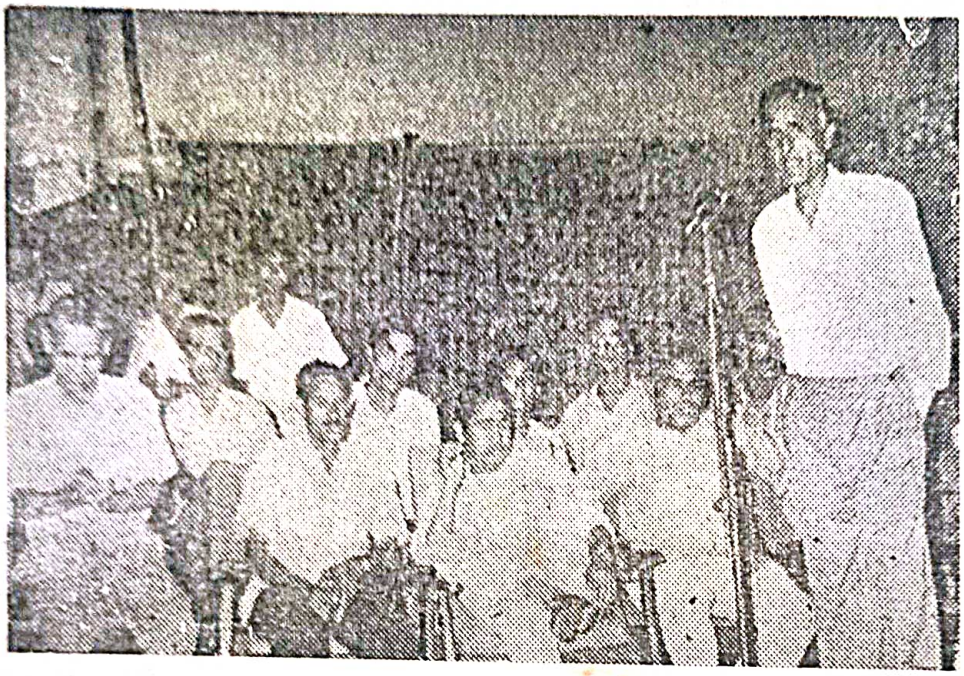

स्वागत समारोह का चित्र

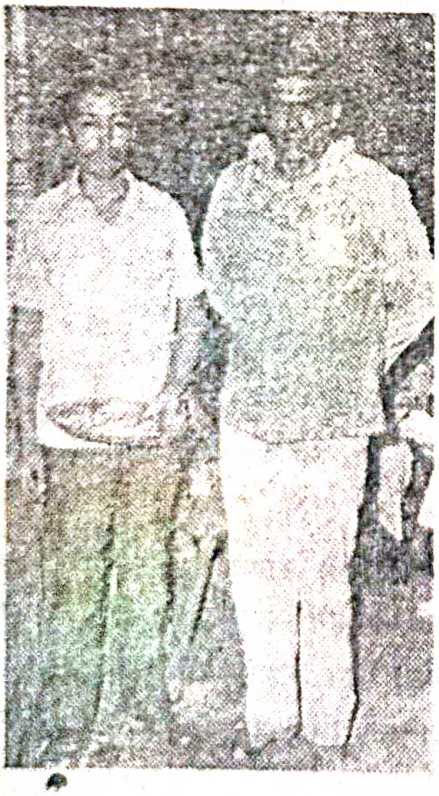

लीला उद्घाटन का चित्र

रामलीला का उद्घाटन प्रसिद्ध समाज सेवी व जन प्रिय नेता श्री आनन्द प्रकाश पोखरियाल ग्राम नाकुरी के कर कमलों द्वारा श्री श्यामसिंह विष्ट ग्राम कोठिला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री प्रकाश जी ने ५५५ रु० तथा श्री विष्ट जी ने ३०० रु० दान स्वरूप भेंट कर मंडल के इतिहास में कीर्तिमान यश प्राप्त किया। राज्य तथा धातु व्यापार निगम में कार्य कर रहे खाटली बन्धुओं का मैं आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने सामुहिक रूप में ७०१ रु० की पूंजी मंडल को भेंट कर मंडल के प्रति अपना प्रेमप्रदर्शित किया। यदि अन्य सदस्यों से भी इसी प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहा तो इसमें सन्देह नहीं कि मंडल दिनों दिन उन्नति के शिखर पर पहुंच सकता है।

दि० २८-९-७३ को माननीय श्री एस० सी० माथुर डिपुटी फाइनेन्सल मैनेजर, इंडियन आयल कार्पोरेशन के कर कमलों द्वारा उद्घाटन हुआ तथा श्री अर्जुनदास पार्षद किदवईनगर (क्षेत्र) ने अध्यक्ष पद की

शोभा बढ़ाई। उक्त दोनों व्यक्तियों ने क्रमशः १०१ रु० तथा ५१ रु० मंडल को भेंट किए मैं मंडल की ओर से उनका धन्यवाद करताहूं। इस शुभ अवसर पर श्रीमती माथुर भी उपस्थित हुये उनका हम धन्यवाद करते हैं। राजतिलक समारोहश्री केशरसिंह नेगी ग्राम काँडामला की अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। श्री नेगी जी ने ६०१ रु० की पूंजी मंडल को भेंट की। मैं उनकी दानशील भावना का मंडल की ओर से धन्यवाद करता हूं। इस अवधि में निम्न व्यक्यिों ने मंडल का आतिथ्य स्वीकार किया।

सर्व श्री और श्रीमती कुन्दनसिंह शाह घोड़ियाना, गोविन्दसिंह रावत टडोंलो, पातीराम शर्मा ग्वीन मला, जिवानन्द पांथरी धनस्याली, बुद्धिराम जोशी कंडुली, नैनसिंह भण्डारी थकुलसारी, उदयराम कोटनाला, धनस्याली, गोविन्दसिंह सजवाण कोठिला, श्री और श्रीमती खुशहालसिंह शाह बवांसा मला, महेन्द्रसिंह रावत श्यामसिंह शाह प्रधान घोड़ियाना, मनबरसिंह गुसाई कन्दलेखा, चमनलाल परवोली, चन्दनसिंह रावत थकुलसारी ध्यानसिंह नेगी, वालमुकुन्द जोशी कांडा मला, राधोसिंह रांवत मैठाणा, बुद्धिसिंह नेगी जाखड़ी, भीमसिंह विष्ट, वी० ओ० ए० सी०, अवतारसिंह रावत कडुंली, ख्यातसिंह सजवाण कोठिला, मानसिंह रावत घुड़पाला श्यामसिंह रावत ववाँसा मला, श्रीमती स्व० भगतसिंह विष्ट कोठिला तथा राज्य और धातु व्यापार निगम में कार्यरत खाटली वन्धु।

रामलीला की अवधि में पात्रों के साथ साथ हास्य कलाकार का होना अति आवश्यक है हमारे हास्य कलाकार श्री त्रिलोकसिंह जी से सभी परिचित हैं तथा उन्हें "महाराज" और "इण्डियन हिप्पी" के नाम से भी जाना जाता है। हास्य दृश्य प्रदर्शित करते हुए इन्डियन हिप्पी चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

इण्डियन हिप्पी

मैं उपरोक्त सभी महानुभावों का अपनी ओर से तथा मण्डल की ओर से हार्दिक अभिवादन करते हुए आशा करता हूं कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार का सहयोग व आशीर्वाद मण्डल को देते रहीगें।

इस उत्सव में मण्डल को ५१७१.६१ पैं० की आय हुई तथा २७६०.४५ व्यय हुए विशुद्ध आय २४११ रु० १६ पैं० हुई। १५२ रु० की अचल सम्पति क्रय की गई जो कि माल मन्त्री के पास सुरक्षित है। म्यू० कमेटी से प्राप्त १२८.८६ रु० का चैक आय धन में जमा है।

सामाजिक कार्य

शिक्षा:— शिक्षा के क्षेत्र में मुझे यह लिखते हुए हर्ष होता है कि पिछले २४ वर्षों में हमारी पट्टी ने सर्वांगीण उन्नति की है जिनका बिस्तृत उल्लेख प्रथम ही मंडल खण्ड में कर दिया गया है किन्तु यहां मैं अवश्य लिखूं कि प्रति वर्ष पट्टी में एक नई स्कूल का जन्म होता जा रहा है। सन् १९७३ में आदर्श लघु-माध्यमिक विद्यालय घोड़ियानाखाल तथा जू० हा० स्कूल भमराईखाल का जन्म हुआ है। इस अल्पावधि में आदर्श लघु मा० विद्यालय घोड़ियानाखाल को शिक्षा बोर्ड, उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त हो गई है तथा जू० हा० स्कूल भमराईखाल को शीघ्र मान्यता मिल जाने की आशा है। इसी वर्ष उ० मा० वि० कोठिला (खटलगढ़ महादेव) तथा उ० मा० वि० ललितपुर को हाई स्कूल की मान्यता प्राप्त हो गई है। पखोली कन्या विद्यालय में इस वर्ष से सह शिक्षा की मान्यता प्राप्त होकर छात्रों को पढ़ाने की सुविधा हो गई है। उ० मा० विद्यालय ग्वीनखाल को इण्टर कालेज बनाने के लिए प्रवन्धक व उपप्रेवन्धक समिति लग्नशील है निकट भविष्य में यह स्वप्न भी साकार हो जाएगा। इण्टर कालेज बीरोंखाल को राजकीय कालेज बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है भावी कार्य कर्ताओं व इण्टर कालेज सहायक समिति दिल्ली से आशा की जाती है कि इस पर सरकार से पत्र व्यवहार करते रहे।

स्वास्थ्य:— चिकित्सालयों की दृष्टि में हमारा क्षेत्र वहुत ही पिछड़ा हुआ है। हमारी पट्टी में एक मात्र राजकीय चिकित्सालय बीरोंखाल में है। इस वर्ष स्वास्थ्य की ओर अधिक ध्यान दिया गया है। उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा दो औषधालय दुनाव तथा ग्वोनखाल में पारित हुए हैं। दुनाव की निकटर्ती जनता ने श्रमदान द्वारा ११ कमरे औषधालय के लिए बना दिए है आशा है शीघ्र ही वहाँ पर चिकित्सकों की नियुक्ति हो जाएगी। स्वास्थ्य विभाग द्वरा मैठाणाघाट में निरीक्षण कर दिया गया है जब तक चिकित्सालय भवन नहीं बन पाता मैठाणाघाट के व्यापारी वर्ग अपने कमरों को औषधालय के लिए किराया पर देने को तैयार है आशा है शीघ्र ही स्वास्थ्य विभाग चिकित्सालय भवन बनाने की उचित व्यवस्था करेगा। सरकार से पट्टी में अन्य स्थानों पर भी औषधालय तथा डिस्पेंसरियां खोलने बावत लिखा गया है उ० प्र० सरकार द्वारा आश्वासन प्राप्त हुआ है कि जहां पर उचित व्यवस्था प्राप्त हो जाएगी वहां पर औषधालय डिस्पेंसरियाँ खोल दी जाएगी। इसके बारे में दिल्ली स्थित ग्राम समितियों को सूचित कर दिया गया है। इच्छुक ग्राम वाले इसके बारे में मंडल से सम्पर्क स्थापित करते रहें तथा भावी कार्य कर्ताओं से आशा की जाती है कि वे स्वास्थ्य के बारे में अधिक कार्य करें।

पेय जल-सिचाई:— पेय जल का भी पट्टी में वहुत ही संकट है। ग्राम कोठिला, रंगलच्छा तथा ग्राम कांडा तला की पेयजल योजना सन् १९७० से पारित हो गयी थी किन्तु खेद है कि अभी तक इन योजनाओं पर सरकार द्वारा कोई कार्य नहीं किया गया। ग्राम मैठाणा, घोड़ियाना, नाकुरी रगड़ीगाड सिसाई, बीरोंखाल और डुमैला मला की सामुहिक पेय जल योजना भी सरकार द्वारा तैयार कर अधिशासी अभियन्ता स्वा० शा० अभियन्ता विभाग प्रकल्प व अनुशंधान शाखा श्रीनगर को कार्य वाही हेतु गत बर्ष भेज दी गई थी किन्तु इस पर भी अभी तक कोई विचार विभाग द्वारा नहीं किया गया। मंडल द्वारा जिवलीडांडा की पेय जल योजना सरकार को प्रस्तुत की गई थी जिसका इस वर्ष विभाग द्वारा विधिवत निरीक्षण कर दिया गया है ग्राम खितोटिया, सिरोली व ववांसा तला की पेय जल योजनाओं का भी निरीक्षण हो चुका है। आशा है निकट भविष्य में उक्त योजनायें कार्यान्वित होकर क्षेत्रीय जनता के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। भावी कार्य कर्ता यदि ठोस कार्य करे तो अवश्य ही सरकार इस वर्ष उक्त योजनाओं का कार्य प्रारम्भ कर देगा।

विदित हुआ है कि खटलगढ़ तलहटी के ग्रामों का सरकार द्वारा निरीक्षण किया गया है और इन ग्रामों को लिफ्ट इरिगेसन (लघु सिचाई) योजना के अन्तर्गत रखा गया है।

यातायात - संचार व्यवस्था:— मर्चुला वीरोंखाल बैजरो मोटर मार्ग पर गढ़वाल मोटर यूजर्स को० औ० ट्रा० सो० की गाड़ियाँ सेवारत हैं। इस सड़क को पक्का करने का कार्य जोरों पर चल रहा है। अधिशासी अभिन्ता अस्थायी खण्ड सा० नि० विभाग लैन्सडौन के पत्र से विदित हुआ है कि १९७३-७४ में अदालीखाल तक सड़क पक्की हो जाएगी तथा अदालीखाल से बैजरो तक पक्का करने का कार्य अगले सत्र में पूर्ण हो जाएगा। दुनाव रिखड़ीखाल मोटर मार्ग का निरीक्षण हो चुका है तथा निर्माण कार्य शीघ्र होने वाला है पट्टी में कई स्थानों से खच्चर मार्ग के बारे में भी लिखा गया है।

मुरादाबाद से रामनगर तक बड़ी रेलवे लाइन बनाने के लिए मंडल गत कई वर्षों से केन्द्र सरकार से पत्र व्यवहार करता आ रहा है हर्ष का विषय है कि भारत की प्रिय प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के कर-कमलों द्वारा दि १०-१-७४ को इस लाइन को बड़ी लाइन में परिवर्तित करने हेतु विधिवत उदघाटन कर दिया गया है तथा शीघ्र ही निकट भविष्य में कार्य पूर्ण हो जाने की सम्भावना है। इस सम्बन्ध में रेलवे बोर्ड का दि० १४-२-७४ का पत्र भी मंडल को प्राप्त हो गया है। भविष्य में भी इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार करते रहने की आवश्यकता है।

पट्टी के केन्द्र स्थान वीरोंखाल में दूर भाष (टेलीफोन) केन्द्र खोलने के बारे में सहायक गुरु। अभियन्ता नियोजन, भारतीय डाक तार विभाग नई दिल्ली एवं पोस्ट मास्टर जनरल लखनऊ से पत्र व्यवहार चल रहा है आशा है भावी कार्य कर्ता इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार जारी रखेंगे।

मध्य निषेध:— रामनगर से पहाड़ी क्षेत्रों के लिए सराब की तस्करी गत वर्षों में अधिक जोरों पर चल रही थी मण्डल द्वारा इस प्रकार की मादक वस्तुओं की तस्करी पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु सम्बन्धित विभागों व गढ़वाल मोटर यूजर्स को० औ० ट्रा० सो० रामनगर को रोष पत्र प्रेषित किए गए फलत: इस वर्ष शराब की तस्करी कुछ कम रही। भावी कार्य कर्ता उक्त विभागों के अतिरिक्त अन्य संस्थाओं को भी समय समय पर पत्र भेजकर सचेत करते रहें।

खाद्य समस्या:— पट्टी में खाद्य वितरण अच्छी तरह किया जाय सम्बन्धित अधिकारियों को बार-बार सचेत किया जाता है। जिला पूर्ति अधिकारी, पौड़ी ने हमें स्पष्ट लिखा है कि खाद्य वितरण पर पट्टी खाटली में बिशेष ध्यान दिया जाता है। भविष्य में भी सम्बन्धित विभागों को वार वार सचेत करने की आवश्यकता है।

आर्थिक सहायता:— इस वर्ष मंडल ने अपने एक विकास भूषण स्व० श्री भगतसिंह बिष्ट ग्राम कोठिला को खो दिया उनके परिवार को मंडल द्वारा १०१ रु० की सहायता प्रदान की गई। स्व० श्री भगतसिंह बिष्ट की सेवाओं का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। जहां मंडल ने उक्त राशि देकर अपनी सहानुभूति प्रदर्शित की वहां श्रीमती स्व० भगतसिंह बिष्ट ने बिजयदशमी के शुभ पर्व पर मंडल को अपने पति के नाम से १११ रु० दान स्वरूप भेंट कर उनकी याद को चिरस्मरणीय कर दिया। मंडल ऐसी अदम्य दानशील महिला का धन्यवाद करता है।

मंडल में ग्राम ढिस्वाड़ी पाली और थापला के ग्राम प्रधानों का संयुक्त प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने तिमलीखाल में दीवा मूर्ति के निर्माण हेतु सहायता माँगी ।मंडल ने १५१ रु० की राशि इस पुण्य कार्य हेतु प्रदान किए ।

चल शील्ड प्रतियोगिता:— शिक्षा के साथ साथ मंडल ने इस बर्ष दो चल शील्डों की पट्टी की हाई स्कूलों एवं जू० हा० स्कूलों में खेल कूद की भावना को वढावा देने तथा मंडल के प्रचार एवं प्रसार हेतु योजना बनाई है । दोनों चल शील्ड माह फरवरी में इण्टर मीडिएट कालेज वीरोंखाल को भेज दी गई है । इण्टर मीडिएट कालेज वीरोंखाल के प्रधानाचार्य महोदय श्री वचेसिंह बिष्टके आश्वासन प्राप्त पर कि सर्व प्रथम कालेज के खर्चे पर इन प्रतियोगिताओं को सम्पन्न किया जाएगा ।

हर्ष का बिषय है कि दि ५-३-७४ को वॉलीवाल प्रतियोगिता श्री वचेसिंह बिष्ट प्रधानाचार्य इण्टर मीडिएट कालेज वीरोंखाल, श्री गंगाप्रसाद सहायक अध्यापक उ० मा० वि० कोठिला (खटलगढ़ महादेव) एवं श्री बलवीरसिंह सजवाण 'तूफान' प्रतिनिधि खाटली विकास मंडल जो, कि चल शील्ड समिति के संयोजक भी थे, की देख रेख में तथा श्रीख्यातसिह गोर्ला भू० पू० दरोगा की अध्यक्षता में सर्व सम्पन्न हो गया । प्रतियोगिता में केवल इण्टर मीडिएट कालेज वीरोंखाल और उ० मा० वि० कोठिला (खटलगढ़ महादेव) की जूनियर और सीनियर दलों ने भाग लिया । प्रतियोगिता में इण्टर मीडिएट कालेज वीरोंखाल के दोनों जूनियर और सीनियर दल विजयी रहे । विजई दलों को दरोगा जी द्वारा पुरुष्कार वितरण किया गया । मैं मंडल की ओर से उक्त महानुभावों का व दोनों स्कूलों के दलों का धन्यवाद करता हूं । पट्टी के अन्तर्गत जूनियर और हाई स्कूलों के प्रधानाध्यापकों, प्रधानाचार्यो से निवेदन है कि यद्यपि वे इस चल शील्ड प्रतियोगिता में इस वार भाग नहीं ले सके परन्तु आगामी वर्षों में अवश्य इस चल शील्ड प्रतियोगिता में भाग लेकर छात्रों को प्रोत्साहित करीगे । दोनों चल शील्डों का नाम **"जय दीवा चल शील्ड"** रखा गया है ।

स्व० श्री गुलावसिंह रावत भूतपूर्व ब्लाक प्रमुख विकास क्षेत्र वीरोंखाल की स्मृति में एक चल शील्ड चार पट्टियों खाटली, साबली, ढ़ौंडियालस्यूं, व बंगारस्यूं की दिल्ली स्थित पट्टी स्तर की समितियों द्वारा चलाए जाने का निर्णय लिया गया था । चारों पट्टियों के उ० मा० वि० में प्रथम एवं अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र के विद्यालय को शील्ड प्रदान की जाएगी । स्मरण रहे कि इसी प्रकार प्रतिवर्ष इस शील्ड का कार्य क्रम चलता रहेगा ।

सरैयाँ:— गत वर्षों से सरैयां नृत्य हमारे मंडल का मुख्य लोक नृत्य माना जाता रहा है इस वर्ष ५ वारातों में तथा २ बाहरी संस्थाओं में हमारे कलाकार श्री कोतवालसिंह गुसांई व श्री त्रिलोकसिंह रावत द्वारा यह नृत्य किया गया । जहां उक्त दोनों कलाकार मंडल का भाल ऊंचा किए हुए है वहां सर्व श्री चन्दनसिंह नेगी, खुशहालसिंह गुसाई ,श्यामसिंह रावत, अवतारसिह रावत की कलाओं को हम नहीं भूल सकते जिनके बाजंतरों से यह नृत्य सर्वत्र मनमोहक बन गया है । मंडल को इनसे आशातीत आय भी दिनोंदिन होती जा रही है । इस वर्ष ४० रु० की आय हुई ।

सांस्कृतिक झलकी सरैंया नृत्य का एक दृश्य निम्न प्रकार है।

राष्ट्र नेताओं का स्वागत भी हम इस सरैयां नृत्य से करने में अपना गौरव समझते हैं एक शुभ अवसर पर श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा, मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार के साथ सरैयों की जोड़ी सर्व श्री कोतवालसिंह गुसाई, त्रिलोकसिंह रावत

शुभ सन्देश—बधाई पत्र:— पट्टी खाटली की छोटी छोटी ग्राम सभायें विद्यालय सहायक समितियों तथा व्यक्तिगत उत्सवों जैसे शादी, नामकरण में जब भी मंडल को आमन्त्रित किया है वहां पर मंडल की ओर से प्रतिनिधित्व किया गया तथा मण्डल की शुभकामनायें प्रेषित की गई।

इस वर्ष उत्तर प्रदेश विधान सभा के चुनावों में श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा व पर्वतीय क्षेत्र के प्रत्याशियों को मण्डल की ओर से बधाई पत्र प्रेषित किए गए।

सम्मान:— माननीय श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा को उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री बनने पर दि० ७-११-७३ को मंडल का एक प्रतिनिधि मंडल उनके निवास स्थान पर गया तथा मंडल की ओर से पुष्पहार सहित सम्मान पत्र प्रेषित किया गया।

पुन: दि० १३-१-७४ को एक प्रतिनिधि मंडल मुख्य मन्त्री जी को दिल्ली में मिला तथा उनसे आग्रह किया गया कि रामनगर से बीरोंखाल होते हुए कर्णप्रयाग तक का कार्य क्रम बनाकर क्षेत्रीय जनता को दर्शन देने की महति कृपा करें।

विज्ञापन:— इस स्मारिका में जो भी विज्ञापन आप देख रहे हैं उन्हें प्राप्त करने में सर्व श्री हयात-सिंह रावत, जिवानन्द जोशी, कोतवालसिंह गुसाई, खुशहालसिंह गुसाई, मोहनसिंह शाह, सयनसिंह नेगी, शाकम्बर दत्त सुयाल, खुशहालसिंह रावत का प्रमुख हाथ है। विज्ञापनों से मंडल को १७७५ रु० की आय होगी। विज्ञापन देने वाले कम्पनियों व उक्त महानुभावों का मैं मंडल की ओर से धन्यवाद करता हूं। श्री सयनसिंह नेगी का पुन: धन्यवाद किया जाता है जिन्होंने ब्लाक बनाने में मंडल के धन को अधिक खर्चा होने से बचाया।

उपलब्धि:— दिल्ली से अन्यत्र मंडल की शाखायें खोलने का प्रयास काफी अर्से से चला आ रहा था। गत वर्ष बम्बई विकास मंडल से मंडल के साथ विलय होने का प्रस्ताव प्राप्त हुआ था जिसमें श्री कोतवाल सिंह गुसाई का प्रथम हाथ है। इस वर्ष मंडल के महा मन्त्री द्वारा १५ अगस्त १९७३ को बम्बई में शाखा की विधिवत स्थापना की गई है इसमें श्री भगतसिंह रावत ग्राम डालागांव और श्री दरपानसिंह रावत ग्राम नाकुरी का सहयोग सराहनीय है। श्री दरपानसिंह रावत खाटली सामाजिक विकास मंडल बम्बई के संस्थापक के रूप में माने जाते है तथा विकास मंडल (पजी०) दिल्ली के साथ बिलय करने में भी उन्हीं का सहयोग है। श्री भगतसिंह रावत ने बम्बई शाखा खोलने में जो भूमिका निभाई वह प्रशन्सनीय है। मैं मंडल की ओर से उक्त दोनों महानुभावों का व श्री गुसाई जी का आभार प्रकट करता हूं। इस समय बम्बई में ४५ सदस्य है जो कि सदस्य प्रशिष्ट में अंकित है और कार्य कर्ताओं के नाम कार्य कर्ता सारणी में अंकित किए गए है। बम्बई शाखा के ५ वर्षों का संक्षिप्त विवरण आगे परिशिष्ट पर हैं।

परम हर्ष का विषय है कि भोपाल में भी हमें श्री भगतसिंह शाह ग्राम धनस्याली (म्यालाधार) का सहयोग प्राप्त हुआ जिनके कठिन परिश्रम से भोपाल में भी मण्डल की शाखा की स्थापना हो चुकी है। यदि हमें ऐसे ही "भगतसिंह" मिल जाते तो मण्डल अन्यत्र भी शाखाएं खोलने में सफल होता। इस समय भोपाल में ७१ सदस्य है जो कि सदस्य प्रशिष्ट में अंकित है और कार्य कर्ताओं का नाम कार्य कर्ता सारिणी में अंकित किया गया है।

उक्त दोनों शाखाओं के साथ मंडल के विधान के अनुसार विधिवत अनुबन्ध किया गया है। क्रमश: ५०,५० रुपए दोनों शाखाओं से केन्द्र में शुल्क प्राप्त हो चुका है। मैं उक्त दोनों शाखाओं के कार्य कर्ताओं एवं सदस्योंका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं, तथा आशा करता हूं कि वे अपना अपना कार्य उस पिछड़े इलाके के लिए

केन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर अग्रसर होते रहेगें ।

फरीदाबाद में भी मंडल की शाखा के सम्बन्ध में श्री शंकरदत्त कोटनाला व अन्य सामाजिक व्यक्तियों से पत्र व्यवहार किया है किन्तु प्रतिफल न मिल सका भावी कार्य कर्ताओं का इस ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है ।

आजीवन एवं महिला सदस्य:— सामाजिक भावनाओं से ओत प्रोत निम्न १४ व्यक्तियों व दो महिलाओं ने इस वर्ष मंडल की आजीवन सदस्यता ग्रहण की है तथा १२ महिलाओं ने मंडल की साधारण सदस्यता ग्रहण कर मंडल के इतिहास में चार चाँद लगा दिए । स्मरण रहे कि पहले भी ५ सदस्यों ने मंडल की आजीवन सदस्यता ग्रहण की है । मैं मंडल की ओर से निम्न व्यक्तियों व महिला वर्ग का धन्यवाद करता हूं अन्य महिला वर्ग से भी मेरी प्रार्थना है कि वे भी मंडल की सदस्यता ग्रहण कर समाज के उत्थान में सहयोग प्रदान करें ।

आजीवन सदस्य:— सर्व श्री अमरसिंह रावत बवाँसा तला, श्यामसिंह बिष्ट, भरतसिंह बिष्ट, खुशहालसिंह नेगी, भीमसिंह नेगी कोठिला, मोहनसिंह शाह, जोगेन्द्रसिंह गुसाई, खुशहालसिंह गुसाई, घोड़ियाना, गोबिन्दसिंह रावत टडोलो, रामप्रसाद पोखरियाल सिसाई, भवानीसिंह रावत मैठाणा, भोपालसिंह रावत तलाई, बलवन्तसिंह गुसाई कन्दलेखा, हयातसिंह रावत जामरी, श्रीमती गणेशीदेवी घोड़ियाना और श्रीमती गोदाम्बरी देवी ग्राम नाकुरी ।

महिला साधारण सदस्य:— सर्व श्रीमती ज्योति देवी, वाँचीदेवी, श्यामादेवी, घोड़ियाना, लक्ष्मी सजवाण, शाकम्बरीदेवी थकुलसारी, श्यामादेवी जाखणी, लक्ष्मी शर्मा सिसाई, ऊमा देवी बवाँसा तला, गोबिन्दी देवी नाकुरी, लीला रावत जामरी, गणेशीदेवी टडोंलो, कान्तादेवी कोलरी और श्रीमती सुशीला रावत रंगलच्छा

उप समितियाँ:— इस वर्ष मण्डल द्वारा कार्य संचालनार्थ निम्न लिखित समितियों का गठन किया गया है ।

१— विधान संशोधनसमिति:— संयोजक श्री मोहनसिंह शाह

सदस्य— सर्व श्री आनन्दप्रकाश पोखरियाल, बलदेव प्रसाद सुयाल, भवानीसिंह रावत, सुल्तानसिंह सजवाण, चन्दनसिंह नेगी, खुशहालसिंह रावत, रामप्रसाद पोखरियाल, कोतवालसिंह गुसाई, जिवानन्द पोखरियाल, शिवचरणसिंह रावत, मंगलसिंह सजवाण, बलवन्तसिंह रावत और हयातसिंह रावत ।

२—चल शील्ड समिति :— संयोजक श्री बलबीरसिंह सजवाण 'तूफान'

सदस्य —: सर्व श्री बलदेवप्रसाद सुयाल, चन्दनसिंह नेगी, उदयसिंह रावत, खुशहालसिंह रावत, भवानीसिंह रावत ।

३— रजत जयन्ती समिति:— संयोजक श्री चन्दनसिंह नेगी

सदस्य :— सर्व श्री बलबीरसिंह सजवाण 'तूफान', बलदेवप्रसाद सुयाल, जिवानन्द पोखरियाल, शिवचरणसिंह रावत, खुशहालसिंह रावत, हयातसिंह रावत, ब्रह्मानन्द पोखरियाल, बचनसिंह नरवाणी, भवानी-सिंह रावत, उदयसिंह रावत ।

४— **दीवामन्दिर निर्माण समिति:—** संयोजक श्री हयातसिंह रावत
सदस्य:— सर्वश्री आनन्द प्रकाश पोखरियाल, बलदेवप्रसाद सुयाल, मंगतसिंह शाह, सुल्तानसिंह सजवाण, जिवानन्द पोखरियाल, अमरसिंह रावत।

५:—**सीमा पटल समिति:—** संयोजक श्री मोहनसिंह शाह,
सदस्य :— सर्व श्री खुशहालसिंह रावत, दलीपसिंह बडियारी।

६— **रामलीला में पुष्कार वितरण समिति:—** संयोजक श्री मंगतसिंह शाह
सदस्य: — सर्व श्री कोतवालसिंह गुसाई, सुल्तानसिंह सजवाण, गोविन्दसिंह सजवाण, बलवन्तसिंह गुसाई।

७— **चुनाव आयोग:—** श्री भवानीसिंह रावत चुनाव अध्यक्ष।
सदस्य —सर्व श्री खुशालसिंह रावत, थानसिंह नेगी

८—**उपाधि पारितोषिक समिति :—** संयोजक श्री दलीपसिंह बडियारी
सदस्य :— सर्व श्री कोतवालसिंह गुसाई बलदेव प्रसाद सुयाल।

९— **आय व्यय निर्धारण समिति:—** संयोजक श्री हयातसिंह रावत
सदस्य :— सर्व श्री सुल्तानसिंह सजवाण, बचेसिंह रावत, दलीपसिंह बड़ियारी, उदयसिंह रावत, खुशहालसिंह रावत।

१०— **इ० का० बोर्डिंग सहायक समिति दिल्ली हेतु प्रतिनिधि :—**श्रीजगमोहनसिंह रावत

११— **गढ़वाल हितैषणी सभा:—** सर्व श्री जिवानन्द पोखरियाल, भगतसिंह रावत, केदारसिंह बिष्ट, जगमोहनसिंह रावत।

१२— **कथा संयोजक—** श्री महावीरसिंह रावत।

१३—**छात्र प्रतियोगिता समिति:—** संयोजक श्री मोहनसिंह शाह।
सदस्य— सर्व श्री खुशहालसिंह रावत, थानसिंह नेगी।

नोट:— उक्त सभी समितियों का कार्य पूर्ण हो चुका है किन्तु सीमा पटल लगाने का कार्य समय अभाव के कारण अग्रिम वर्ष के लिए छोड़ दिया गया है दीवा मन्दिर का कार्य विचाराधीन है।

सदस्य एवं सदस्य शुल्क:— सदस्य संख्या में वृधि हेतु भरषक प्रयत्न किया गया किन्तु अभी भी इसमें सन्तोषजनक वृद्धि नहीं हो पाई है। विगत वर्ष सदस्य संख्या ३८४ थी जो कि इस बर्ष बढ़कर ४८१ हो गई। इसके अतिरिक्त बम्बई और भोपाल में ११३ सदस्य संख्या है। सदस्यों की नामावली सदस्य सारिणी में अंकित हैं। वृतों का गठन एवं वृत संयोजकों का चयन निम्न प्रकार से किया गया है।

वृत का नाम	संयोजकों का नाम	सदस्य संख्या
१— सेवानगर	श्री बालमसिंह रावत " बलवन्तसिंह गुसाई	१६२

वृत	संयोजक	सदस्य संख्या
२— प्रेमनगर, अलीगंज	श्री चन्द्रसिंह बिष्ट	
लोदीरोड, इन्द्रा कालोनी	" जगमोहनसिंह रावत	८६
३— किदवई नगर, अन्सारी नगर	" त्रिलोकसिंह रावत	
	" खुशहालसिंह रावत	६६
	" मंगतसिंह शाह	
४— नेताजी नगर	" कुन्दनसिंह नेगी	
लक्ष्मीवाई नगर	" उदयसिंह नेगी	२३
नारोजी नगर		
५— आर० के० पुरम, मोतीबाग	" ब्रह्मानन्द पोखरियाल	२२
६— पंचकुया राजाबाजार	" शिबचरणसिंह रावत	१३
राष्ट्रपति भवन		
७— कनाटप्लेस जंतर मतर	" कुन्दनसिंह रावत	१३
मिटोरोड	" चन्द्रसिंह रावत	
८— सांवलनगर	" जिवानन्द पाँथरी	२६
एड्रूजगंज	" चमकसिंह कंडारी	
९—लक्ष्मीनगर जमुनापार	" वालमुकुन्द जोशो	२७
१०—पुरानी दिल्ली	" महावीरसिंह रावत	
११—राज्य धातु व्यापार	" उदयसिंह रावत	२५
निगम कालोनी		
१२— ग्राम कोलरी तली	" नरेन्द्रसिंह भदूला	१२

मण्डल को सदस्य शुल्क से १४६२ रु० प्राप्त हुए जिसका श्रय उक्त वृत संयोजकों एवं श्री बलवन्तसिंह गुसाई कोषाध्यक्ष को प्राप्त है। सम्पूर्ण सदस्य सूचि परिशिष्ट ख पर है। मैं मण्डल की ओर से उक्त सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

कार्यकारिणी एवं सार्वजनिक सभाएः—इस वर्ष उधोलिखित उप समितियों के संयोजको एवं सदस्यों और वृत संयोजकों के अतिरिक्त निम्न व्यक्ति कार्य कारिणी के सदस्य रहे।

सर्व श्री कुन्दनसिंह बिष्ट, भगतसिंह रावत, कुन्दनसिंह नेगी, मेहरवानसिंह बिष्ट, लीलानन्द पाँथरी, चन्दनसिंह रावत, गुलाबसिंह रावत, गोबिन्दसिंह रावत, केशरसिंह रावत, भीमसिंह नेगी, बचनसिंह नेगी, बुद्धसिंह नेगी, जोतसिंह रावत, केदारसिंह गुसाई, बुद्धिराम जोशी।

इस वर्ष कार्यकारिणी की कुल १५ बैठकें, सार्वजनिक की ४ बैठकें और मन्त्रिमण्डल की ५ बैठकें हुई। बैठकों में उपस्थिति संतोषजनक रही इसके लिए कार्य कारिणी के सदस्य कार्य कर्ता एवं सभी सदस्य धन्यवाद के पात्र है। सभी प्रस्ताओं पर का० का० बैठकों में गहनता से विचार किया जाता है तत्पश्चात् पूर्ण स्वीकृति हेतु सार्वजनिक सभा में प्रस्तुत किया जाता है। एक सार्वजनिक सभा का चित्र (फोटो) जिसमें रजत जयन्ती समारोह के खर्च करने की पुष्टि की गई निम्नांकित है।

सार्वजनिक सभा का चित्र

पत्र व्यवहार:— प्रतिवेदन में उधृत कार्यों का आपने अवलोकन किया। सम्बन्धित अधिकारियों से प्रत्येक योजना पर पट्टी के अन्तर्गत एवं बाह्य क्षेत्र में पत्र व्यवहार किया गया। इस वर्ष कुल २६५ पत्र प्राप्त हुए तथा ३२१ पत्र प्रेषित किए गए।

आय व्यय:— मण्डल के इस वर्ष की आय व्यय को यहाँ पर संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता है कि इस वर्ष मण्डल की आय बहुत ही संतोषप्रद रही है। आय व्यय का विस्तृत विवरण निरीक्षण प्रतिवेदन से प्राप्त किया जा सकता है

पिछले वर्ष का शेष धन	६००६.४० रु०
इस वर्ष की आय	६१५६.६६ "
कुल आय	१५१६६.३६ रु०
कुल व्यय	४८१७.४८ "
बचत धन	१०३५१.६१ "

उपरोक्त आय में विज्ञापनों से प्राप्त होने वाली २१७५ रु० की धन राशि सम्मलित नहीं की गई है। स्मरण रहे कि गत वर्ष के विज्ञापनों में से १०० रु० प्राप्त करने बाकी हैं।

शोक पत्र:— पट्टी के कतिपय व्यक्तियों के निधन पर शोक पत्र प्रेषित किए गए तथा समय समय पर बैठकों में भी दिवगंत आत्माओं को श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गई।

वन्धुवर्ग मण्डल ने अपनी किशोर अवस्था में जितने भी कार्य किए उससे अधिक योवन अवस्था में करने बाकी हैं। इसके लिए मण्डल के सभी सदस्यों को लग्नशील होकर कार्य करना होगा तथा आने वाले कार्य कर्ताओं को पूर्ण सहयोग प्रदान करना होगा तब ही हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

अन्त में मैं समस्त खाटली बन्धुओं मण्डल के सदस्यों एवं परम सहयोगी कार्य कर्ताओं का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने अपना-२ कार्य बहुत ही लग्नशील एवं परिश्रम से किया। मैं सर्व श्री भगतसिंह रावत, खुशहालसिंह रावत, शिववरणसिंह रावत, आनन्दप्रकाश पोखरियाल, बलदेव प्रसाद सुयाल, भोपालसिंह रावत मंगतसिंह शाह का धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकता जिन्होंने मुझे समय समय पर उचित राय देकर कार्य करने का प्रोत्साहन दिया। प्रधान श्री अमरसिंह रावत तथा उप प्रधान श्री मोहनसिंह शाह का मैं बहुत ही कृतज्ञ हूं जिन्होंने अपनी कुशाग्र बुद्धि से मुझे इस कार्य को करने का पथ प्रदर्शन कराया तथा जटिल विषयों को सुलभ करने में सहयोग प्रदान किया। मण्डल को ऐसे निस्वार्थ सामाजिक व्यक्तियों की आवश्यकता है।

प्रतिवेदन समाप्त करने से पूर्व मैं पुनः उप समितियों के संयोजकों, शाखा समिति के कार्य कर्ताओं आमन्त्रित अतिथियों समस्त सदस्यगणों उपस्थित जन समुदाय का आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर मंडल के कार्यों में सहयोग प्रदान किया। बचेसिंह रावत ग्राम डुमैला का भी धन्यवाद किया जाता है जिन्होंने दीवा माता की आरती बनाई जो कि संशोधित विधान एवं स्मारिका की प्रतियों में छाप दी गई हैं।

शुभ कामनाओं सहित धन्यवाद।

भवदीय

ह०(केदारसिंह बिष्ट)

महा मन्त्री

अमरसिंह रावत

प्रधान

गढ़वाल

खाटली सामाजिक विकास मण्डल, (पं०) शाखा बम्बई का संक्षिप्त परिचय

खाटली प्रवासी वन्धुगण तथा अन्य उपस्थित सज्जन बृन्द !

मंडल के रजत जयन्ती के शुभ पर्व पर मैं मंडल स्थित खाटली के प्रवासी वन्धुओं की ओर से कुछ पंक्तियों में मंडल की बम्बई स्थित शाखा ग० प० खाटली, सा० विकास मंडल वम्बई का संक्षिप्त परिचय देना भी उपयुक्त समझता हूं। आशा है इन पंक्तियों को पढ़कर हम सब एक दूसरे को और अधिक सन्निकट पाएंगे और इस प्रकार मंडल के मूल उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल होंगे।

वास्तव में बम्बई में प्रवासी खाटली निवासी भी काफी संख्या में रहते हैं और वे भी दिल्ली स्थित 'खाटली विकास मंडल' के समान ही अपने क्षेत्र के विकास के लिए तथा प्रवासी वन्धुओं में पारस्परिक प्रेम भाव बढ़ाने के लिए कार्य करने वाला एक संगठन वनाने के इच्छुक थे। मंडल के आजीवन सदस्य श्री दरपानसिंह रावत के बम्बई स्थानान्तरित होने पर उनकी प्रेरणा से बम्बई स्थित खाटली प्रवासी बन्धुओं की भावना को साकार रूप मिला और १५ अगस्त १९६८ ई० को श्री गवरसिंह विष्ट के निवास स्थान भाँडुप (बम्बई) में 'खाटली विकास मंडल' की स्थापना की गई। इस संस्था की स्थापना में सर्व श्री शंकरसिंह नेगी, विषनसिंह रावत, दरपानसिंह रावत, गवरसिंह विष्ट, भगतसिंह नेगी, जयसिंह रावत, मंगतसिंह रावत, जीतसिंह नेगी, पीताम्बरदत्त त्रिपाठी, जितारसिंह रावत, चन्द्रसिंह रावत, केदारसिंह विष्ट आदि व्यक्तियों ने अपना महान योगदान प्रदान किया और प्रथम वर्ष में ही खा० वि० मण्डल बम्बई की सदस्य संख्या ४८ तक पहुंच गई।

सांस्कृतिक कार्य क्रम:— इस संस्था का प्रथम वार्षिकोत्सव १५ अगस्त १९६९ को श्री सत्यदेव पूजनोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया और तब से लेकर अब तक यही परम्परा चलती आ रही है। मण्डल वम्बई में निरन्तर प्रति वर्ष राम लीला अभिनय प्रस्तुत कर वम्बई वासियों में भगवान राम के प्रति स्नेह का जागरण करता आ रहा है तथा इस समय २००० रु० की नाट्य सामाग्री मण्डल के पास है।

शिक्षा:— खा० वि० मण्डल वम्बई पट्टी खाटली में शिक्षा प्रसार के लिए भी बराबर प्रयत्न करता रहा है। मण्डल ने विद्यालयों को निम्न प्रकार आर्थिक सहायता भेजी :—

सन् १९७१ में लघु माध्यमिक विद्यालय कोठिला (खटलगढ़ महादेव) को २५० रु० दिए।

सन् १९७३ में इ० कालेज बीरोंखाल के लिए विज्ञान सामाग्री खरीदने निमित इ० का० बीरोंखाल सहायक समिति दिल्ली के माध्यम से ६०१ रु० नकद दिए गए।

स्वागत समारोह :— खाटली विकास मण्डल वम्बई के सदस्यगण न केवल पट्टी खाटली तथापि समस्त जिला गढ़वाल की उन्नति के लिए प्रयत्नशील सामाजिक कार्य कर्ताओं के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करने में भी किसी से पीछे नहीं रहते। समाज के प्रति इसी प्रेम व निष्ठा के अनुसार समय-२ पर निम्न प्रकार अनेक राष्ट्रीय नेताओं व सामाजिक कार्य कर्ताओं का भी मण्डल द्वारा सम्मान किया गया।

सन् १९७० में श्री जोगीसिंह नेगी की विदेश यात्रा (अफ्रीका) जाने के समय उनका अभिनन्दन किया गया।

सन् १९६९ में जि० गढ़वाल (पौड़ी क्षेत्र) से निर्वाचित विधायक श्री शिवानन्द नौटियाल का बम्बई में स्वागत किया गया और समारोह में अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

सन् १९७३ में बम्बई के सामाजिक कार्य कर्ता व मंगला हाईस्कूल के प्रिंसिपल श्री भुवनेश्वरसिंह बिष्ट तथा सामाजिक कार्य कर्ता श्री वसन्त कुमार ढौंडियाल का भी मण्डल द्वारा स्वागत किया गया और मण्डल के प्रति उनकी निष्ठा के कारण दोनों व्यक्तियों को मण्डल के संरक्षक की उपाधि से विभूषित किया गया।

इस वर्ष दिल्ली से बम्बई आने वाले खा० वि० मण्डल दिल्ली केप्रमुख सदस्य श्री कोतवालसिंह गुसाई बम्बई में स्थित मण्डल के प्रतिनिधि श्री भगतसिंह रावत और मण्डल के महा मंत्री श्री केदारसिंह बिष्ट का भी हार्दिक स्वागत किया गया।

दि० १५-८-७३ को श्री दरपानसिंह रावत के निवास स्थान भांडुप बम्बई में खा० वि० मण्डल दिल्ली के प्रतिनिधि श्री भगतसिंह रावत की अध्यक्षता में उक्त मण्डल का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मण्डल के महा मंत्री श्री केदारसिंह बिष्ट को आमंत्रित किया गया। श्री बिष्ट जी की उपस्थिति में मण्डल के सदस्यों ने सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव द्वारा बम्बई स्थित इस संस्था को गढ़वाल, खाटली सा० वि० मण्डल (रजि०) दिल्ली की बम्बई स्थित शाखा के रूप में परिणित कर दिया है। हम दीवा माता से प्रार्थना करते हैं कि हमारा यह मधुर मिलन अमर रहे और हम सब मिलकर पट्टी खाटली निवासी व प्रवासी जनता की उन्नति व विकास करने में सफल हो।

धन्यवाद,

जयसिंह रावत
प्रधान

भवदीय,
भीमसिंह गुसाई
मंत्री

फोन : ६१५४१०

गढ़वाल वस्त्र भण्डार

१०६, खन्ना मार्केट, लोदी रोड, नई दिल्ली-३

हमारे यहां हर प्रकार के दैनिक प्रयोग तथा शादियों के कपड़े तथा सुन्दर व आकर्षक डिजायनों की साड़ियां धोतियां गारण्टी से सस्ते दामों पर खरीदने के लिए पधारें और लाभ उठायें।

आपका प्रिय व अपना
ग ढ़ वा ल व स्त्र भ ण्डार

मण्डल के सम्पूर्ण सदस्यों की सूची

अगरोड़ों

श्री चन्द्रमणी सुयाल

असुरखेत

" शंकरसिह गुसाई
" दौलतसिह गुसाई
" गजेन्द्रसिह "
" गोबिन्दसिह "
" बिजयसिह "

कमडाई

" बलदेव प्रसाद सुयाल
" शाकम्बर दत्त "
" दयाराम गौनि०
" गणेशपती जोशी
" प्रेमलाल
" चन्दनसिह कण्डारी
" तोताराम सुयाल
" गोबर्धन प्रसाद
" गबरसिह कण्डारी
" छवाणसिह
" विजयसिह
" बालमसिह
" मनोहरलाल

कन्दलेखा

" बलवन्तसिह गु०
" बुद्धीसिह "
" उमेदसिह विष्ट
" नन्दनसिह
" प्रेमलाल

कोटा

स्व० भवानसिह सजवाण
श्री बिजयसिह "
" भगतसिह "
" बिजयसिह रावत
" कमलेश कुमार

कोठिला

" बालमसिह बिष्ट
" चन्द्रसिह नेगी
" ख्यातसिह सजवाण
" गजेन्द्रसिस बिष्ट
" भगतसिह बिष्ट
" गणेशसिह बिष्ट
" गोबिन्दसिह सजवाण
" बलवन्तसिह स०
" बालमसिह नेगी
" आनन्दसिह गुसाई
" खेमसिह सजवाण
" राजेसिह सजवाण
" जगतसिह सजवाण
" जोगेन्द्रसिह
" इन्द्रसिह बिष्ट
" सोहनसिह बिष्ट
" मनवरसिह बिष्ट
" मनबरसिह नेगी
" कुन्दनसिह सजवाण
" बलबीरसिह सजवाण

कान्डुली

" राजेसिह रावत
श्री ज्ञानसिह
" अवतारसिह रावत
" तेजसिह रावत

कान्डुली तल्ली

" बुद्धिराम जोशी
" मंगतसिह गुसाई
" साधोसिह
" ध्यानसिह
" जिवानन्द जोशी
" केशवानन्द जोशी
" गबरसिह गुसाई
" उदयराम जोशी
" होशियारसिह गुसाई
" विजयसिह
" मनमोहन जोशी
" गजेसिह गुसाई

कोठा

" बचनसिह
" मटरसिह
" ज्ञानसिह रावत
" खुशहालसिह
" लखनसिह रावत
" गोबिन्दसिह
" उमेदसिह गुसाई
" ज्ञानसिह रावत

कान्ड मल्ला

" पीताम्बरदत्त
" साधोसिह रावत
" बालमुकन्द जोशी

श्री जसवन्तसिह रावत
" होशियारसिह
" सैनसिह नेगी
" जमनसिह नेगी
" चिन्तामणी
" महाबीरसिह
" मेहरबानसिह
" सूरबीरसिह
" रामेश्वर प्रसाद
" रामस्वरूप
" जयपालसिह रावत
" कृपालसिह रावत
" बुद्धसिह सजवाण
" झबरसिह रावत
" ध्यानसिह नेगी
" केशवानन्द पोखरियाल
" केशरसिह नेगी

कान्ड तल्ला

" मनीराम
" भगवानसिह
" चन्द्रमणी
" ब्रह्मानन्द पो०
" ईश्वरीदत्त
" कुन्दनसिह नेगी

कोलरी मल्ली

" थानसिह नेगी
" झबरसिह नेगी
" शाकम्बरसिह रावत
" चन्दनसिह रावत
" माधोसिह
" गोबिन्दराम
" मनवरसिह रा०
" जगतसिह नेगी

श्री गोबिन्दराम
" रणबीरसिह
" सतेन्द्रसिह

कोलरी तल्ली

" श्यामलाल भदूला
" गोबिन्दराम
" कुलानन्द
" घनश्याम शर्मा
" नरेन्द्र प्रसाद
" आदित्यराम
" महेशा नन्द
" ओमप्रकाश
" बिहारीलाल
" हरी प्रसाद
" शिवप्रसाद
" ऊमादत्त
" नन्दराम
" श्यामलाल-२

खितोटिया

" मायादत्त पांथरी
" लीला नन्द "
" अमरसिह रावत
" उमेदसिह
" जगतराम
" कुन्दनसिह
" चन्दनसिह
" गमालसिह
" साबरसिह
" केशरसिह डगवाल
" वेदप्रकाश
" प्रेमसिह

श्री राजेसिह
" गबरसिह
" केशरसिह
" कुन्दनसिह रावत

खेतू

" ज्ञानसिह रावत
" वचनसिह रावत
" नरेन्द्रप्रसाद

खालागांव

" केशरसिह
" मनबरसिह रावत
" पूर्णसिह
" आनन्दसिह रावत
" बलवन्तसिह रावत

ग्वीन मल्ला

" पातीराम शर्मा
" चैतरामसिह
" गोबिन्दराम पोखरियाल
" चन्दनसिह नेगी
" गोबिन्दसिह
" भवानसिह
" चन्दनसिह रावत
" गजेसिह सजवाण
" पानसिह नेगी
" मानसिह
" लालसिह रावत
" दयाराम जखमोला
" गोबिन्दसिह रावत

ग्वीन तल्ला

" बुद्धसिह रावत
" जोतसिह रावत
" ख्यातसिह रावत

श्री कुन्दनसिह रावत
,, शेरसिह रावत
,, सुल्तानसिह रावत
,, गोबिन्दसिह रावत
,, रामसिह रावत
,, सुल्तानसिह रावत

घुड़पाला मल्ला

,, गजेसिह रावत
,, विजयसिह रावत
,, बुद्धसिह
,, प्रतापसिह
,, नारायणसिह
,, राजेसिह
,, तारेसिह
,, मदनसिह
,, सोहनसिह
,, मानसिह
,, मनबरसिह रावत

घुड़पाला तल्ला

,, लूथीसिह रावत
,, रामसिह रावत

घनस्याली

,, सुरेशानन्द
,, खुशहालसिह रावत
,, त्रिलोकसिह शाह
,, कुलानन्द शर्मा
,, बिहारीलाल
,, राधामणी
,, भारतीलाल
,, जिवानन्द पांथरी
,, आशाराम
,, उदयराम कोटमाला

भटवाड़ों

श्री चन्द्रसिह रावत
,, अमरसिह

घोड़ियाना

स्व० भूरासिह शाह
श्री सांधीसिह शाह
,, मंगतसिह गुसाई
,, कुन्दनसिह शाह
,, आजादसिह नेगी
,, वचनसिह शाह
,, श्यामसिह
,, रामसिह रावत
,, दानसिह
,, फतेसिह शाह
,, अर्जुनसिह गुसाई
,, विजयसिह नेगी
,, ध्यानसिह रावत
स्व० शिवसिह गुसाई
श्री त्रिलोकसिह रावत
,, जोगेन्द्रसिह गु०
,, मोहनसिह शाह
,, राजेन्द्रसिह नेगी
,, होबतसिह गुसाई
,, राजेसिह गुसाई
,, प्रशन्नसिह शाह
,, विशनसिह गुसाई

चैनपुर मल्ली

,, ईश्वरीदत्त सुयाल

चैनपुर तल्ली

,, चिन्तामणी

चौण्डी

,, जगतसिह नेगी

श्री राजेसिह नेगी
,, रामसिह नेगी

चन्दोली मल्ली

,, खुशीराम
,, चन्दनसिह रावत
,, हुकमसिह रावत
,, श्यामसिह रावत
,, ध्यानसिह रावत

चन्दोली तल्ली

,, कल्याणसिह
,, गोविन्दसिह
,, राजाराम
,, रविदत्त घिल्डियाल
,, भगानंद
,, वचनसिह नरवाणी
,, मोहनसिह रावत
,, बुद्धसिह रावत
,, कैलाशचंद्र
,, सीताराम

चमलाण

,, राजेसिह रावत
,, उमेदसिह रावत
,, विशनसिह
,, उदयसिह
,, गजेसिह रावत
,, गबरसिह रावत

जाखणी

,, उमेदसिह नेगी
,, शंकरसिह नेगी
,, सितावसिह

श्री कुन्दनसिह रावत
" डिमरसिह बिष्ट
" गोबिन्दसिह रावत
" गजेसिह रावत
" भगतसिह रावत
" सुल्तानसिह नेगी
" चंद्रसिह नेगी
" दौलतसिह नेगी
" कुन्दनसिह नेगी
" बुद्धसिह नेगी
" मनबरसिह नेगी
" प्रतापसिह नेगी
" ख्यातसिह नेगी
" त्रिलोकसिह रावत
" बलवंतसिह
" बचनसिह
" कलमसिह रावत
" बागसिह नेगी
" राजेसिह रावत
" देवीसिह
" शंकरसिह नेगी

जामरी

" चन्द्रसिह
" चन्दनसिह रावत
" श्रीतारसिह रावत
" चन्दनसिह नेगी
" वीरेन्द्रसिह
" पुष्करसिह रावत
" चन्दनसिह
" मोहनसिह
" मोहनसिह
" भीमसिह रावत
" दरवानसिह
" जगतसिह

श्री चन्दनसिह
" गोबिन्दसिह नेगी

डालागाँव

" भगतसिह रावत
" दलीपसिह
" रणबीरसिह
" बलबीरसिह
" गबरसिह
" बलवन्तसिह
" ज्ञानसिह
" स्वीकृतसिह

डांगू तल्ला

" त्रिलोकसिहगुसाई
" ज्ञानसिह
" गोबिन्द गुसाई
" गोबिन्दसिह

डाँगू मल्ला

" पानसिह रावत
" कलमसिह

डांग

" सुल्तानसिह सजवाण
" कुन्दनसिहरावत
" साधोसिह
" राजेसिह स०
" जोगेश्वरसिह
" महाबीरसिह
" काशीराम पोखरियाल
" देवीसिह रावत
" ज्ञानसिह
" चंदनसिह
" गोविंदसिह रावत
" रुद्रसिह
" रणबीरसिह नेगी
" बिशनसिह

श्री रामसिह
" थमनसिह रावत
" जगतसिह
" गजेसिह
" शिवसिह
" खुशीराम
" दलीपसिह
" बालमसिह

ढौंर

" सुरेशानंद पो०
" हरीराम जुयाल
" आदित्यराम
" सीताराम जुयाल
" हरीराम ध्यानी
" रामप्रसाद पोखरियाल
" सीताराम ध्यानी
" चन्दराम
" वासवानन्द

डमैला मल्ला

" खुशहालसिह रावत
" गजेसिह रावत
" चन्द्रसिह बिष्ट
" रुद्रसिह बिष्ट
" गोबिन्दसिह नेगी
" दरपानसिह रा०
" गौरीसिह
" बचेसिह रावत
" भूपालसिह गुसाई
" महेशानन्द
" शंकरसिह रावत
" थानसिह रावत
" कोतवालसिह
" शेरसिह
" तोताराम पोखरियाल

श्री चन्दनसिह
,, मक्खनसिह रावत
,, सुरेन्द्रसिह रावत
,, शंकरसिह रावत
,, जोतसिह रावत
,, गौरीसिह रावत
,, रामसिह रावत
,, कुन्दनसिह रावत
,, रामसिह गुसाई
,, श्रीचंदसिह
,, जगदीशप्रसाद

डुमैला तल्ला

,, सुरेन्द्रसिह
,, बालमसिह रावत
" यशवंतसिह
" यशवंतसिह
" श्रवतारसिह
" रामसिह
" आनन्दसिह
" जगतसिह नेगी
" श्यामसिह रावत
" चन्द्रसिह रावत
" यशवन्तसिह नेगी
" भगतसिह रावत
" ज्ञानसिह रावत
" नन्दनसिह रावत
" गजेसिह
" सोहनसिह
" रणजीतसिह
" कमलेश्वर
,, नैनसिह बिष्ट

ढिस्वाणी

,, जगतसिह
श्री कुन्दनसिह
,, शंकरसिह
,, कुंवरसिह

दुलकोली

,, रामसिह
,, दलीपसिह
,, राजेसिह

तलांई मल्ली

" मदनसिहशाह
" बुद्धसिह बिष्ट
" बालमसिह
" कुन्दनसिह बिष्ट
स्व० श्री जीतसिह बिष्ट
श्री विजयसिह
" गोविन्दसिह
" बखत्वारसिह
" कुन्दनसिह बिष्ट
" गौरीसिह बिष्ट
" मेहताबसिह
" चन्दनसिह
" गोबिन्दसिह
" चन्द्रसिह बिष्ट
" चखौसिह
" पृथ्वीपालसिह
" जगमोहनसिह रावत

तलाँई तल्ली

" जगमोहनसिह
" चिन्तामणी
" गबरसिह

ताछीखाल

" खुशहालसिह नेगी
" सैनसिह

तिमली

श्री उदयसिह
" तुलाराम जोशी
" अमरसिह
" गबरसिह
" भवानसिह
" रेवतसिह
" दर्शनसिह
" कृपालसिह

तिमलाखोली

" चन्द्रसिह गुसाई

थकुलसारी

" नैनसिह भण्डारी
" उमेदसिह बिष्ट
" चन्द्रसिह गोरखा
" कन्हैयासिह
" मंगलसिह सजवाण
" खुशहालसिह नेगी
" त्रिलोकसिह
" उदयसिह रावत
कु० सतेश्वरी
श्री चन्द्रसिह नेगी
" गोविन्दसिह
" उमेदसिह
" वीरसिह
" दामोदरप्रसाद
" उमेदसिह सजवाण
" कल्याणसिह
" मानसिह नेगी
" मंगलसिह रावत
" ख्यातसिह सजवाण
" मनवरसिह सजवाण
" लालसिह

श्री जगदीश प्रसाद

थबड़िया मल्ला

" खुशहालसिंह गुसाई
" जगतसिंह रावत

थबड़िया तल्ला

" चन्द्रसिंह रावत
" जगतसिंह रावत
" गुमानसिंह रावत
" पानसिंह
स्व० श्री भवानसिंह रावत
श्री बचनसिंह
" मंगत सिंह रावत
" कुंवरसिंह रावत

थापला वल्ला

" ध्यानसिंह रावत
" गजेसिंह रावत
" मनबरसिंह रावत
" ईश्वरसिंह रावत
" महेन्द्रसिंह रावत
" चित्रसिंह नेगी
" प्रतापसिंह
" बलवन्तसिंह

दिवोली

" अम्बादत्त ध्यानी
" बचीराम
" अवतारसिंह
" लूथीराम

नऊँ

" केदारसिंह रावत
" ध्यानसिंह
" गुमानसिंह
" राजेसिंह

नगणी

सर्व श्री मदनसिंह नेगी
वीरेन्द्रसिंह नेगी

नौलापुर

राजेसिंह
राजेसिंह नेगी
गजेसिंह रावत
श्यामसिंह नेगी
सुरेन्द्रसिंह नेगी

नाकुरी

चिन्तामणी
उदयसिंह नेगी
चन्द्रमणी पोखरियाल
चन्द्रसिंह नेगी
मनीराम
स्व० श्री कुन्दनसिंह नेगी
सर्व श्री गोकुलसिंह नेगी
मंगतसिंह
प्रेमसिंह गुसाई
खुशहालमणी
चन्दनसिंह नेगी
दलीपसिंह गुसाई
केशरसिंह गुसाई
होशियारसिंह नेगी
रामसिंह रावत
बिहारीलाल
दरपानसिंह गुसाई
मोहनसिंह नेगी
केशरसिंह रावत
पूरणसिंह गुसाई
श्यामसिंह नेगी
गोबिन्दसिंह
रामेन्द्रसिंह नेगी
रामेश्वरप्रसाद
गेंदालाल
गोविन्दसिंह गुसाई
खुशहालसिंह
धर्मानन्द पोखरियाल
आनन्दसिंह गुसाई

पनास मल्ला

बालम सिंह रावत
मनबरसिंह
कलमसिंह
सुल्तानसिंह सजवाण
चन्द्रमणी

पनास तल्ला

स्व० श्री प्रेमसिंह रावत
सर्व श्री गोविन्दसिंह
शंकरदत्त
रघुवीरसिंह सजवाण
अनूपसिंह सजवाण
सतेन्द्र प्रसाद
सत्येन्द्रसिंह सजवाण
जोगेश्वर प्रसाद

पखोली तेली

उमरावसिंह नेगी
कुन्दनसिंह गुसाई
बुद्धिबल्लभ पोखरियाल
विजयकुमार
चमनलाल
सीताराम पोखरियाल
जगदीश प्रसाद
श्यामसिंह
मदनसिंह
वाचस्पती सुयाल
रामचन्द्र

पाली

सर्व श्री महानन्द
थेपसिह
गंगासिह

पीपलासैण

चण्डी प्रसाद सुयाल
शालिग्राम सुयाल
महेशानन्द सुयाल
रामप्रसाद सुयाल

परियाखोल

गुमानसिह नेगी
वचनसिह नेगी
कुन्दनसिह नेगी

बवांसा मल्ला

सुल्तानसिह शाह
जीतसिह शाह
गुलावसिह रावत
वचनसिह नेगी
कुन्दनसिह विष्ट
भूपालसिह सजवाण
देवीसिह
खुशहालसिह
गोविन्दसिह रावत
सुल्तानसिह रावत
मंगतसिह शाह
भवानसिह शाह
सन्तनसिह नेगी
केशरसिह सजवाण
कुन्दनसिह सजवाण
दलपतसिह सजवाण
वलदेवसिह रावत
बलवंतसिह रावत
श्यामसिह रावत
प्रेमसिह रावत
चंद्रसिह शाह
कुंवरसिह रावत
खुशहालसिह रावत

बवांसा तल्ला

ख्यातसिह रावत
कुन्दनसिह रावत
कलमसिह रावत
बख्तावरसिह रावत
विशनसिह रावत
बलवंतसिह रावत
जोतसिह रावत
गोपालसिह रावत
शेरसिह रावत
रुद्रसिह रावत
दलीपसिह रावत
चंद्रसिह रावत
भगतसिह
मोहनसिह
खुशहालसिह
रघुवीरसिह

बाड़ा

कुलानंद
चंदनसिह रावत
शिवानंद सुयाल
चंद्रमणी
होवतसिह

बाड़ाडांडा

कन्हैयासिह
चन्दनसिह नेगी
चन्दनसिह रावत
वलवीरसिह नेगी
रामसिह
चन्दनसिह

बाड़ियों

चिन्तामणी
त्रिलोकसिह रावत
नन्दनसिह रावत
मनवरसिह रावत
जगमोहनसिह रावत
खुशीराम

भरोली मल्ली

चन्दनसिह नेगी
मोहनसिह रावत
रिखवासिह रावत
सन्तनसिह रावत
केशरसिह विष्ट
सत्येन्द्रसिह

भई चिलमी

गोपालसिह

भुज खेत

आशाराम

मटकुन्डा

श्यामलाल
वीरसिह
गोविन्दसिह

मरखोला

सुरेन्द्रसिह रावत
राजेसिह गुसाई
चन्दनसिह
रुद्रीदत्त
कुवरसिह
नैनसिह कन्डारी
चन्दनसिह
विशम्बरदत्त

भमराई

बलवन्तसिह रावत
गोविन्द्रसिह विष्ट
बुद्धिसिह नेगी

सर्व श्री मोपालसिंह
कुन्दनसिंह
खुशहालसिंह
आनन्दसिंह
बलवन्तसिंह
नन्दनसिंह
भगतसिंह
स्व० श्री गोपालसिंह
सर्व श्री वीरसिंह

महादेवसैण

नन्दनसिंह नेगी
मेहरवानसिंह
बचनसिंह नेगी
बचनसिंह
श्यामसिंह
खुशीराम
चन्दनसिंह
योगेश्वरसिंह
मनवरसिंह
श्यामलाल

भंगरों

कल्याणसिंह
केशरसिंह
चन्द्रसिंह
सन्तनसिंह
कल्याणसिंह
कुन्दनसिंह नेगी
हरीसिंह

मैठाणा

गुमानसिंह रावत
भवानसिंह
रामेश्वर प्रसाद
माधोसिंह रावत
भवरसिंह रावत
दानसिंह रावत
पूर्णानन्द
कुलानन्द
जगतसिंह
राजेसिंह
राधोसिंह
अमरसिंह
रमेशचन्द्र
श्यामसिंह
बिसम्बरदत्त

रगड़ी गाड

थानसिंह नेगी
ख्यातसिंह
गजेसिंह
मंगतसिंह गु०
मोहनसिंह
सुल्तानसिंह
सुल्तानसिंह रा०
जगमोहनसिंह
राजेसिंह कफोला
सन्तनसिंह गु०
जमनसिंह

रिखाड

सुल्तानसिंह
गजेसिंह
मंगलसिंह
गंगासिंह
उम्मेसिंह

रंगलछा

कुंवरसिंह रा०
बुद्धसिंह
शिवचरणसिंह
कृपालसिंह
चन्द्रसिंह
जोतसिंह
श्रीमती सुशीला रावत

रैणीहाट

सर्व श्री संग्रामसिंह
लक्ष्मणसिंह
शंकरसिंह
ध्यानसिंह
भगतसिंह

लंगरबूंगी

खुशहालसिंह रा०
रामसिंह
बालमसिंह

सिसई

बुद्धीराम पो०
सुलतानसिंह रा०
होशियारसिंह
आनन्दमणी पो०
खुशहालसिंह
जिवानन्द पो०
जयराम
बिहारीलाल
शीशराम
भूवानन्द
महेशानन्द
जगतसिंह
मो० पी० शर्मा
स्व० भैरवदत्त पो०
गुरुप्रकास
जगतसिंह रावत
खुशहालसिंह

सिन्दुणी

भीमसिंह
स्व० बालमसिंह नेगी
गोविन्दसिंहरावत
मनबरसिंह
कलमसिंह
विक्रमसिंह
केदारसिंह गुसाईं
जगतसिंह
बचनसिंह
लखणसिंह
सन्तनसिंह नेगी

सिरौली

शिवसिंह
गोविन्दसिंह राज०
राजेसिंह
चन्द्रसिंह बिष्ट
बिशनसिंह

सीली पखोली

भगतसिंह रावत
जोतसिंह
रामसिंह
सुल्तानसिंह
मनबरसिंह
जमनसिंह
होबतसिंह
आनन्दसिंह
राजेसिंह
पुष्करसिंह

सीलावर प्र०

कुन्दनसिंह स०

सीली म० त०

भगतसिंह रा०
जोतसिंह चौधरी
कुन्दनसिंह साह
दलीपसिंह चौधरी
केशरसिंह
राजेसिंह
गोविन्दसिंह
पंचमसिंह गुसाईं
जगतसिंह
ताजबरसिंह
भरतसिंह चौ०

सिमड़ी

बचीराम
केशवानन्द जोशी
आत्माराम
रामलाल
बृजमोहन
राजाराम
गोविन्दराम
तारेश्वर प्रसाद
महानन्द
विद्यादत्त
कन्हैयालाल
मंगतराम
रामस्वरूप
योगेश्वर प्रसाद
तुलाराम

सुंगरिया

सन्तनसिंह
बचेसिंह
हर्षसिंह
हरीसिंह रावत

सौलाड

रणबीरसिंह रा०
चमकसिंह
चन्द्रसिंह नेगी
राजेसिंह रा०
लक्ष्मणसिंह
उमेदसिंह

हिन्डोलागैरी

शंकरसिंह गु०

छिन्डोला

मंगलसिंह रा०
आनन्दसिंह

फकीरखोला

आलमसिंह
बचनसिंह

गोदिया

सैनसिंह
कल्पेश्वरसिंह रावत
डुमैला तल्ला

(उपरोक्त सूची में आजीवन एवं महिला सदस्य अंकित नहीं हैं इनकी सूची पहले ही दी हुई है।)
इस वर्ष सर्वश्री आलमसिंह व गजेसिंह रावत ने भी आजीवन सदस्यता ग्रहण की।

सदस्य बम्बई शाखा

नाकुरी

सर्व श्री विशनसिह रा०
जयसिह
दरपानसिह
ज्ञानसिह गु०
जगतसिह नेगी
भगतसिह नेगी
मेहरवानसिह रावत
आनन्दसिह

डुमैला मल्ला

भीमसिह गु०
राजेसिह गु०
शंकरसिह नेगी
जसवन्तसिह उनियाल

पनास

केशरसिह उनि०

खितोटिया

मनबरसिह स०
रेवाधर नौ०
कुलानन्द शर्मा
फौजीराम शर्मा

सिन्दुड़ी

जीतसिह नेगी
मोहनसिह नेगी
उदयसिह नेगी
उमेदसिह नेगी
रामसिह रावत
दानसिह रावत

कोठिला

गजेसिह बिष्ट
केदारसिह बिष्ट
मंगतसिह रावत
शंकरसिह सजवाण

तलाई

गबरसिह बिष्ट
श्यामसिह शाह

जमरिया

प्रतापसिह रावत

बवाँसा तला

जितारसिह रावत
पानसिह रावत
बिशनसिह रावत
श्यामसिह रावत

नगणी

बीरेन्द्रसिह रा०
गोबिन्दसिह रावत

नौलापुर

दलीपसिह रा०

घोड़ियाना

गबरसिह नेगी

थबड़िया

चन्द्रसिह रावत

समेडी

पीताम्बर दत्त त्रिपाठी
जमुना प्रसाद

रिखाड

प्रीतमसिह रा०

खालागांव

श्यामसिह रा०

घुड़पाला

भवानसिह रावत

थापला

इन्द्रसिह रावत

सदस्य भोपाल शाखा

कन्डुली
रघुबीरसिह रावत
श्यामसिह रावत
वचेसिह

खितोटिया
गजेसिह

ग्वीन
जगतसिह रावत
हयातसिह
सुल्तानसिह
भगतसिह
गुन्द्रसिह
सुल्तानसिह
गोपालसिह
कुन्दनसिह
भवानसिह विष्ट
गोविन्दसिह रावत
गोविन्दसिह विष्ट
उदयसिह नेगी
गोविन्दसिह नेगी
गोविन्दसिह शाह
कुन्दनसिह शाह
हर्षसिह विष्ट
जगतसिह रावत
भवानसिह
झबरसिह
वालमसिह

ग्वीन तला
शेरसिह

घनश्याली
मनवरसिह शाह
जगतसिह शाह

घोड़ियाना
खुशहालसिह रावत
भगतसिह रावत
सैनसिह नेगी

तलाई
रमेशसिह विष्ट

थकुलसारी
सुरेन्द्रसिह रावत
चन्द्रसिह नेगी
शेरसिह नेगी
श्रीलाल शर्मा
ईश्वरीदत्त शर्मा
भगतराम
शंकरसिह नेगी
कुन्दनसिह

थबड़िया
दानसिह रावत

नाकुरी
दिलावरसिह नेगी
गबरसिह नेगी

बवांसा मल्ला
चन्द्रसिह शाह
मनबरसिह शाह
गौरसिह शाह
भगतसिह
अर्जुनसिह शाह
जितारसिह शाह
भूपालसिह सजवाण
शेरसिह शाह
अर्जुनसिह शाह
चन्द्रसिह नेगी
शेरसिह शाह
गजेसिह रावत

नौलापुर
सुल्तानसिह

रैणीहाट
मंगतसिह नेगी

सुंगरिया
रेवतसिह शाह
संग्रामसिह नेगी
बचेसिह नेगी

सौली
कल्याणसिह चौहान
सुरेन्द्रसिह

सिन्दुड़ी
जयसिह नेगी
आनन्दसिह नेगी
डिमरसिह रावत
शिवसिह रावत

घिमडिया
वलवंतसिह रावत
गोबिन्दसिह रावत
गोबिन्दसिह नेगी
हरीसिह
सुल्लानसिह

जमरिया
भगतसिह गुडियाल

हिन्डोलागैरी
मंगलसिह सजवाण

गढ़वाल
खाटली सामाजिक विकास मण्डल (पंजीकृत) दिल्ली

(स्थापित सन् १९४९ ई०)

वार्षिक निरीक्षण प्रतिवेदन १९७३-७४

अध्यक्ष महोदय,

अतिथिगण, सदस्य एवं उपस्थित जनसमुदाय मैं मण्डल की रजत जयंती के शुभ अवसर पर आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए नूतन कार्य मंगलमय की श्री सत्यदेव जी से कामना करता हूं ।

किसी देश का युवा वर्ग ही उस देश की अनुभूति होता है, वह अपने समाज की कुंठाओं को दूर करके उसे आगे बढ़ाता है ।

वास्तविक रूप से यदि हम सामाजिक सेवा करना चाहते हैं तो सर्वप्रथम हमें लालची व स्वार्थी भावनाओं को त्यागना होगा तभी हम समाज रूपी वृक्ष के फलों का रसपान कर सकते हैं ।

मण्डल के २५ वर्षों के कार्य कलापों के सम्बन्ध में आप स्मारिका से अवलोकन कर ही लेंगे आय व्यय आंकड़ों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि जितनी आय मण्डल को इन दो वर्षों में प्राप्त हुई है शायद कभी हुई हो वृत प्रतिनिधियों एवं मुख्य कार्यकर्ताओं द्वारा आय अर्जन करने में जो कठिन परिश्रम किया गया है, उसका आप स्वयं ही अन्दाजा लगा सकते हैं

मैं यहां पर स्पष्ट रूप से उल्लेख कर दूं कि श्री आनन्द प्रकाश पोखरियाल की समाज सेवा, दानशीलता, उच्च विचारों की ही यह देन है कि उन्होंने सर्व प्रथम अपनी धर्म पत्नी को मण्डल की आजीवन सदस्यता ग्रहण करवाई उनकी सामाजिक भावनाओं से प्रेरित होकर हमारे नवयुवक श्री मोहन सिंह शाह ने अपनी वयोवृद्ध माता जी को मण्डल की आजीवन सदस्यता ग्रहण करवा कर मण्डल के इतिहास में एक नई कड़ी का समावेश किया, तत्पश्चात काफी महिलाओं ने मण्डल की सदस्यता ग्रहण कर ली है भविष्य में इस ओर ध्यान दिया जाय ।

सदस्य गण आपके विश्वास का पूर्ण रूप से पालन करते हुए मण्डल की वार्षिक आय-व्यय तालिका आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूं तालिका प्रस्तुत करने से पूर्व में आपकी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जो आपने मुझे सेवा करने का समय दिया ।

इस प्रकार वर्ष भर में कुल आय १५१६९ रुपये ३९ पैसा, वर्ष भर में कुल व्यय ४८१७ रुपये ४८ पैसे पंजाब नेशनल बैंक में जमा ८५६८ रुपये ५७ पैसे कोषाध्यक्ष के पास हस्त रोकड़ा १७८३ रुपये ३४ पैसे सुरक्षित है ।

समस्त पंजिकायें पावती पत्र वोचर सन्तोष जनक तरीके से सही एवं स्वच्छ रूप से अंकित किये गये हैं । कोषाध्यक्ष महोदय विशेष धन्यवाद के पात्र हैं ।

प्रतिवेदन समाप्त करने से पूर्व मैं पुनः कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद करता हूं। आय-व्यय तालिका निम्न प्रकार है।

आय		व्यय	
१. कार्य प्रभार में हस्तांतरित	६००९.४०	श्री सत्यदेव पूजन	७३६.३७
२. सदस्य शुल्क से प्राप्त	१५२४.५०	होली, बैसाखी	२२८.७१
३. विवाह उत्सव तथा सरैयों से	५५.००	रामलीला महोत्सव	२७६०.४५
४. भोपाल शाखा से शुल्क	५०.००	संविधान की छपवाई	१८२.००
५. सत्यदेव पूजन भेंट	१३८.७९	मार्ग व्यय	१८५.६०
६. विज्ञापनों से प्राप्त	१२००.००	दीवा मन्दिर पाली	१५१.००
७. माल मंत्रालय से दीवा भेंट	१५.००	व्यक्तिगत अनुदान	१०१.००
८. बम्बई शाखा से शुल्क	५०.००	तपैदिक पीड़ितों को फल	२६.६०
९. होली महोत्सव	८२७.२५	खेल प्रतियोगिता (दो शील्ड)	१३०.००
१०. रामलीला	५०४२.७२	कपड़ों की धुलाई	२१.८५
११. नई दिल्ली म्यूनिसपल कमेटी	१२८.८९	राष्ट्रीय झण्डा और फोटो	८९.२५
१२. दीवा भेंट बैसाखी पर	२.२४	कार्यालय व्यय	१६०.००
१३. पंजाब नेशनल बैंक से व्याज	१२५.६०	विविध व्यय	४४.६५
कुल आय	१५१६९.३९	कुल व्यय	४८१७.४८

वर्ष भर में कुल आय १५१६९.३९
वर्ष भर में कुल व्यय ४८१७.४८
योग १०३५१.९१

पंजाब नेशनल बैंक में ८५६८.५७
कोषाध्यक्ष महोदय के पास हस्त रोकड़ा १७८३.३४ रु० मात्र है

ह०
दलीपसिंह बडियारी
निरीक्षक

श्री सन्तनसिंह गुसाई
ग्राम–रगड़ीगाड (खाटली)
प्रोपराइटर 'लाउंड्री सर्विस' जन पथ होटल
नई दिल्ली।

माननीय श्री सन्तनसिंह गुसाई का जन्म जिला गढ़वाल पट्टी खाटली के ग्राम रगड़ीगाड में सन् १९३४ मेंहुआ। आपके पिता श्री बिगारसिंह गुसाई एक सामाजिक एवं शिक्षा प्रेमी व्यक्ति हैं। उनके शिक्षा प्रेम का परिचय इसी से मिल जाता है कि वे अपनी युवा अवस्था से अब तक इण्टर मीडिएट कालेज बीरोंखाल की निस्वार्थ भाव से सेवा करते आ रहे हैं। आपकी माता जी भी धार्मिक विचारों की हैं।

आप बीरोंखाल से शिक्षा प्राप्त कर देहरादून किसी अच्छे से व्यवसाय की खोज में चले गए। परन्तु उस समय आपकी आर्थिक स्थिति इतनी सुदृढ़ नहीं थी कि कोई अच्छा सा व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते फलतः आप वहाँ स्नो ह्वाइट में कार्य करने लगे व इसके पश्चात इसी 'स्नो ह्वाइट' में दिल्ली स्थानान्तरण हो गए। भला जिनकी इच्छा एक सुन्दर व्यवसाय शुरू करने की हो वे कैसे किसी जगह नौकरी करते ! आपने १९६८ में स्नो ह्वाइट की नौकरी से त्याग पत्र देकर दिल्ली के सुप्रसिद्ध 'जन पथ होटल' में अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया। आप इस समय जन पथ होटल में लाउड्री सर्विस के स्वामी हैं। आपका व्यवसाय इतना सुन्दर व्यापक एवं कुशलता पूर्वक चल रहा है, शायद ही हमारे क्षेत्र में किसी का चल रहा हो। आपकी देहरादून में भरपूर जमीन व सुन्दर कोठी भी है।

जहां आप एक कुशल व्यवसाय व स्वावालम्वी है वहां आपके अंदर सामाजिक भावनायें भी कूट कूट कर भरी हुंई हैं। शिक्षा के उत्थान के आप प्रबल सहयोगी व समर्थक हैं, हमारी इस सर्वोपरि संस्था गढ़वाल खाटली सामाजिक विकास मण्डल व पट्टी के अंदर विद्यालय सहायक समितियों के अलावा आपका गढ़वाल की प्रत्येक पट्टी स्तर की संस्थाओं से सम्पर्क बना रहता है तथा आर्थिक व नैतिक हर प्रकार से सहयोग सभी संस्थाओं को प्राप्त होता रहता है। दान शीलता की जो भावनायें आपके अंदर विद्यमान हैं उसका उल्लेख कर पाना असम्भव है। लोगों के अन्दर दान शीलता समाज प्रेम व स्वावलम्बी बनने की भावना जाग्रत करने में आप अग्रणीय हैं।

आपके उच्च विचारों सामाजिक एवं दानशीलता की भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए हमारी इस सर्वोपरि संस्था गढ़वाल खाटली सामाजिक विकास मण्डल द्वारा अपने इस रजत जयन्ती के शुभ पर्व पर आपको विशिष्ट सेवा पदक प्रदान किया जा रहा है।

आपकी धर्म पत्नी भी उच्च विचारों वाली एक प्रगतिशील महिला है। आपके पांच होनहार पुत्र हैं। भगवान इन्हें चिरायु रखे।

परम पिता परमात्मा ऐसे सामाजिक योग्य दानशील एवं युवा नेता को चिरायु रखे यही हमारी मंगल कामना है।

मोहनसिंह शाह
ग्राम घोड़ियाना (खाटली)

मोती सेल्स कार्पोरेशन रजि०

खारी बावली दिल्ली

की ओर से

खाटली सामाजिक विकास मण्डल (पंजी०) दिल्ली की रजत जयन्ती
समारोह सम्पन्न हेतु हार्दिक शुभ कामनायें प्रेषित

मैनेजर

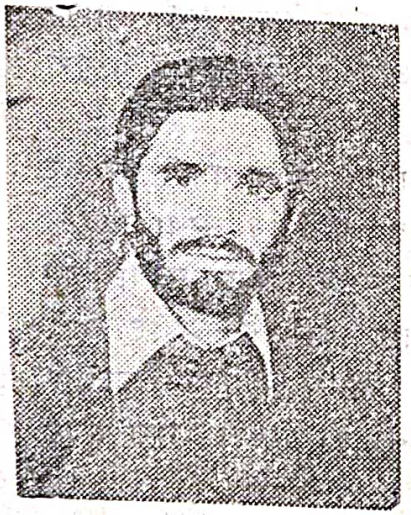

श्री केशरसिह नेगी ग्राम काण्डा मल्ला पट्टी खाटली के बड़े सरल सुवाह के युवक है देखने में उनके गुणों का पता नहीं चलता किन्तु जितने भी व्यक्तियों का सम्पर्क श्री नेगी जी हुआ सबही उनके गुणों व स्वभाव की वड़ाई करते हैं।

आप इस समय ग्राम कांडा मला सुधार एवं सहायक समिति दिल्ली के मन्त्री पद का भार अपने कन्धों पर लिए हुए हैं और बड़े अच्छे ढ़ंग से सभी सामाजिक कार्यों को अपने ग्राम की भलाई के लिए कर रहे हैं। उनके प्रगतिशील कार्यों से सभी जनवासी प्रशन्न हैं।

इस वर्ष की विजय दशमी के शुभ पर्व पर मण्डल द्वारा आयोजित रामलीला के अन्तिम दिन राजतिलक की अध्यक्षता कर ६०१रु० मण्डल को दान स्वरूप भेंट किए। आपकी दानशील भावना का सभी जन समूह व मण्डल के समस्त सदस्यों ने आदर किया।

श्री नेगी जी मण्डल के रजत जयन्ती समारोह पर अपनी शुभ कामनायें भी प्रेषित करते हैं।

अन्त में मैं उनकी प्रगति के लिए दीवा माता से प्रार्थना करता हूं।

महावीरसिह रावत
ग्राम कांडा मला